राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उतरांचल, उतराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण शनिवार 15 अगस्त 2026 वर्ष-9,अंक-194 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सम्राट के कंधे पर नीतिश का हाथ और हाथ जोड़े सीएम

बिहार के पटना में कुछ ऐसी रही दोनों नेताओं की मुलाकात

पटना (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के कंधे पर पूर्व मुख्यमंत्री नीतिश कुमार का हाथ और हाथ जोड़े खड़े सीएम सम्राट चौधरी। नीतिश कुमार और सम्राट चौधरी की मुलाकात में यही तस्वीर निकलकर सामने आई। 15 अगस्त से जुड़े कार्यक्रम, नई घोषणाओं और भरत तिवारी एनकाउंटर मामले में नए अपडेट के बाद ये मुलाकात अहम मानी जा रही है। दिल्ली में राज्यसभा की कार्यवाही में भाग लेने के बाद लौटे नीतिश कुमार से मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने मुलाकात से पटना में सियासी हलचल बढ़ी हुई है। नीतिश सम्राट की मुलाकात लगभग आधे घंटे तक चली। इस अहम मीटिंग में जदयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा भी मौजूद रहे। इस मुलाकात को राज्य के मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य और विकास कार्यों के लिहाज से बेहद अहम माना जा रहा है। बताया जा रहा है कि बैठक के दौरान मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने नीतिश कुमार को हालिया स्थिति से अवगत कराया और आगामी स्वतंत्रता दिवस पर किए जाने वाले प्रमुख ऐलानों की रूपरेखा साझा की।

भरत तिवारी मामले पर भी दिया नीतीश को

भोजपुर जिले के बिलौटी गांव में कथित एनकाउंटर में मारे गए भरत तिवारी के परिजनों को सरकारी नौकरी देने का निर्णय लिया गया। पीड़ित परिवार को सरकार की ओर से उचित आर्थिक मुआवजा देने का भी फैसला हुआ है। इस संवेदनशील मुद्दे पर मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने पूर्व मुख्यमंत्री नीतिश कुमार को अपडेट किया।

15 अगस्त को हो सकती हैं कई बड़ी घोषणाएं

सूत्रों के मुताबिक, 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राज्य सरकार बिहार की जनता के लिए कई बड़े ऐलानों की तैयारी कर रही है। सम्राट चौधरी ने इन संभावित घोषणाओं का पूरा खाका मुख्यमंत्री नीतिश कुमार के सामने रखा और उनकी सहमति ली। माना जा रहा है कि ये घोषणाएं जनहित और रोजगार से जुड़ी हो सकती हैं। इस मुलाकात के राजनीतिक मायने भी तलाशे जा रहे हैं। जदयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा की मौजूदगी ये दिखाती है कि एनडीए गठबंधन के भीतर बेहतर तालमेल के साथ निर्णय लिए जा रहे हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा-बेहद जरूरी मंजूरी नहीं ली गई थी

राहुल गांधी के खिलाफ चल रहा सावरकर मानहानि केस रद्द

वर्ष 2022 में 'भारत जोड़ो यात्रा' में दिया था बयान

लखनऊ (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि का एक मामला रद्द कर दिया। केस वीर सावरकर के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी करने और समाज में नफरत फैलाने के आरोपों से जुड़ा था। यूपी सरकार की तरफ से कोर्ट को बताया गया कि मामले में राहुल गांधी पर मुकदमा चलाने की आधिकारिक मंजूरी नहीं ली गई थी। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने साफ कहा कि जब कानूनी मंजूरी ही नहीं है, तो मामला यहीं खत्म हो जाता है। जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस शील नागू की पीठ ने मामले की सुनवाई की। कोर्ट ने अपने फैसले में कहा- सरकार की ओर से दाखिल हलफनामे में एडीशनल सॉलिसिटर जनरल और शिकायतकर्ता के वकील ने माना है कि इस मामले में जरूरी मंजूरी नहीं ली गई थी। ऐसी स्थिति में शिकायत और मजिस्ट्रेट की तरफ से जारी सभी आदेशों को खारिज किया जाता है।

संक्षिप्त समाचार

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई...शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 15 अगस्त को कार्यालय में अवकाश रहेगा। अखबार का अगला अंक 17 अगस्त 2026 को प्रकाशित होगा। सभी पाठकों,विज्ञापनदाताओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई...शुभकामनाएं..जय हिन्द। सं.

आजादी के बाद पहली बार जनगणना में पूछी जाएगी जाति

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने जनगणना-2027 के लिए 40 सवालों की लिस्ट जारी कर दी है। इसमें लोगों से एससी, एसटी या अन्य जाति के बारे में पूछा जाएगा। आजादी के बाद यह पहली बार होगा जब सभी समुदायों की जाति की जानकारी जनगणना में दर्ज की जाएगी। इससे पहले 2011 की जनगणना के फॉर्म में 29 सवाल थे। इसमें जाति से जुड़ी जानकारी के लिए सिर्फ SC/ST का विकल्प था। जनगणना-2027 के सवालों की लिस्ट में जाति से जुड़ा सवाल नंबर 10 पर है, जिसमें एससी/एसटी के साथ जाति शब्द भी जोड़ा गया है। खास बात यह है कि लोगों से कोविड वैक्सीन कहां लगवाई थी, यह सवाल भी पूछा जाएगा। इसके साथ मोबाइल नंबर, आधार, वोटर आईडी और बैंक अकाउंट से जुड़े सवाल भी होंगे। जनगणना में व्यक्ति का नाम, परिवार के मुखिया से संबंध, लिंग, जन्मतिथि और उम्र पूछी जाएगी। साथ ही वैवाहिक स्थिति, शादी के समय उम्र, पति या पत्नी का नाम, राष्ट्रीयता, धर्म और एससी/एसटी/जाति की जानकारी ली जाएगी।

कोविड वैक्सीन कहां लगवाई

8 सवालों में जन्मस्थान से बच्चों तक की जानकारी

इस सेक्शन में जन्म स्थान, पिछला निवास स्थान, माइग्रेशन का कारण और वहां रहने की अवधि पूछी जाएगी। स्थायी निवास का पता भी दर्ज होगा। महिलाओं से जीवित बच्चों, अब तक जन्मे बच्चों और पिछले एक साल में जन्मे बच्चों की संख्या भी पूछी जाएगी। इसमें कोविड-19 वैक्सीन कहां लगवाई, कुल बैंक अकाउंट और मोबाइल नंबर पूछा जाएगा।

कितने बैंक अकाउंट जैसे 40 सवाल पूछेंगे,लिस्ट जारी

देश की पहली डिजिटल जनगणना होगी

जनगणना 2027 देश की पहली डिजिटल जनगणना होगी। डेटा डिजिटल माध्यम से दर्ज किया जाएगा और लोगों को खुद अपनी जानकारी देने यानी सेल्फ-एन्यूमरेशन का विकल्प भी मिलेगा। जनगणना की कानूनी प्रक्रिया सेंसस एक्ट, 1948 और सेंसस रूल्स, 1990 के तहत होगी। केंद्र के मुताबिक, लोगों की दी गई व्यक्तिगत जानकारी पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी। सेंसस एक्ट की धारा 15 के तहत इसे सार्वजनिक नहीं किया जा सकता, आरटीआई के तहत नहीं दिया जा सकता और किसी कोर्ट में सबूत के तौर पर भी इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

शिक्षा और भाषा-5 सवालों में पढ़ाई और डिजिटल साक्षरता

इस हिस्से में दिव्यांगता, मातृभाषा और दूसरी भाषाएं, साक्षरता और डिजिटल साक्षरता की जानकारी ली जाएगी। साथ ही शैक्षणिक संस्थान में पढ़ाई की स्थिति और उच्चतम शैक्षणिक योग्यता, स्ट्रीम या विषय पूछा जाएगा। व्यक्ति ने पिछले एक साल में काम किया या नहीं, उसकी आर्थिक गतिविधि, व्यवसाय और काम का क्षेत्र पूछा जाएगा। इसके अलावा कामगार की श्रेणी, गैर-आर्थिक गतिविधि, काम की तलाश या उपलब्धता और काम की जगह तक आने-जाने की जानकारी भी ली जाएगी।

छात्र गलत हों, तब भी उन्हें विरोध का अधिकार

हैदराबाद यूनिवर्सिटी में विरोध करने वाले छात्रों के साथ सीजेआई

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को हैदराबाद की लॉ यूनिवर्सिटी, नालसार से जुड़े विवाद पर बार काउंसिल ऑफ इंडिया को फटकार लगाई। सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि भले ही छात्रों का फैसला गलत हो या उन्हें किसी ने गलत सलाह दी हो, फिर भी उन्हें अपनी बात रखने और विरोध करने का अधिकार है। जस्टिस सूर्यकांत ने बीसीआई के उस सर्कुलर पर भी नाराजगी जताई जिसमें नालसार के 2026 बैच के लॉ ग्रेजुएट्स का वकील के तौर पर एनरोलमेंट रोकने को कहा गया था। सीजेआई ने कहा- यह मेरे और छात्रों के बीच का मामला है।

स्वतंत्रता दिवस से एक दिन पहले मिली बम की धमकी

निशाने पर दिल्ली हाईकोर्ट सहित 6 जगहें,सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्वतंत्रता दिवस से एक दिन पहले बम धमाके की धमकी मिली है। दिल्ली हाई कोर्ट को मिले एक ई-मेल में बम विस्फोट की धमकी दी गई है। इसकी सूचना मिलते ही दिल्ली पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसिया अलर्ट हो गई हैं। हाई कोर्ट परिसर सहित विभिन्न जगहों पर तलाशी अभियान तेज कर दिया गया है। अन्य रिपोर्ट्स में यह भी कहा गया है कि दिल्ली एयरपोर्ट, दिल्ली हाई कोर्ट, झंडेवालान बिल्डिंग सहित छह जगहों पर बम विस्फोट की धमकी मिली है। ईमेल पर मिली धमकी के बाद सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट मोड में आ गई हैं और

जांच पड़ताल शुरू कर दी गई है। दिल्ली पुलिस के मुताबिक फायर कंट्रोल रूम को दिल्ली हाई कोर्ट के अलावा दिल्ली कैंट ऑफिस में सुबह 11.18 बजे, दिल्ली एयरपोर्ट के टर्मिनल 3 पर 11.32 बजे, जामनगर हाउस पर 11.40 बजे, साकेत एसडीम ऑफिस पर 11.42 बजे, झंडेवालान पर 11.57 बजे बम विस्फोट की धमकी मिली थी। इन सभी जगहों पर दिल्ली पुलिस, बम स्क्वाड, फायर ब्रिगेड की टीम पहुंचकर छानबीन कर रही है। बम की धमकी मिलने के बाद दिल्ली हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल दिल्ली पुलिस के संपर्क में हैं।

धूमधाम से मनेगा आज देश की आजादी का पर्व

पहली बार लाल किले की प्राचीर से गाया जाएगा 'वंदे मातरम'

देश भर में मनेगास्वतंत्रता दिवस का राष्ट्रीय पर्व, बड़ी तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अस्सी साल पहले तक भारतीय क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों ने जिस राष्ट्रीय गीत को प्राण-प्रण से गाकर भारत को आजाद कराया था, उसी वंदेमातरम् की गूंज भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस समारोह में कल लाल किले पर पहली बार सुनाई देगी। रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को बयान जारी कर कहा है कि 2026 में वंदेमातरम के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर यह राष्ट्रीय गीत पहली बार लाल किले की प्राचीर से गाया जाएगा, जो इसकी स्थायी विरासत को नमन होगा। यह स्वतंत्रता दिवस समारोह की शुरुआत में गाया जाएगा। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे, फिर राष्ट्रगान गाया जाएगा और अंत में प्रधानमंत्री राष्ट्र को संबोधित करेंगे। हाल ही में मोदी सरकार ने संसद ने राष्ट्रीय सम्मान के अपमान की रोकथाम (संशोधन) विधेयक पारित किया, जो वंदेमातरम् को अपमान के कृत्यों से कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है और राष्ट्रीय गीत वंदेमातरम को राष्ट्रगान जन गण मन के समान कानूनी स्थिति में रखता है। इस विधेयक ने लोकसभा में राजनीतिक बहस को जन्म दिया, जिसमें द्रमुक पार्टी ने इसका विरोध किया और सरकार पर राष्ट्रीय गीत के जरिये देश को विभाजित करने का आरोप लगाया।

15 अगस्त को इस वर्ष के स्वतंत्रता समारोह का ध्यान युवा शक्ति पर केंद्रित होगा

जो भारत की युवा जनसंख्या के योगदान को उजागर करेगा, जो 2047 तक एक विकसित भारत बनने की यात्रा में महत्वपूर्ण है। रक्षा सचिव आरके सिंह ने बताया कि समारोह में युवाओं की सफलता और योगदान का जश्न मनाने की योजना जंतर-मंतर पर प्रदर्शन से पहले की है। युवाओं का हमारे विकसित भारत की यात्रा में महत्वपूर्ण स्थान है। रक्षा सचिव सिंह ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को इस कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया गया है और आमंत्रितों के लिए बैठने की व्यवस्था सख्ती से प्रोटोकाल के अनुसार की जाएगी। सिंह ने कहा कि प्रोटोकाल के अनुसार, राहुल गांधी की सीट कैबिनेट मंत्रियों के बाद होगी।

आरजी कर केस में गिरफ्तार पूर्व एमएलए पर हुआ हमला

कोर्ट ले जाते समय भीड़ ने पीटा, जूते और अंडे फेंके

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के आरजी कर अस्पताल की डॉक्टर के रेप-मर्डर मामले में गिरफ्तार पूर्व टीएमसी विधायक निर्मल घोष पर भीड़ ने हमला कर दिया। पुलिस शुक्रवार को उन्हें नॉर्थ 24 परगना के खरदह थाने से बैरकपुर कोर्ट ले जा रही थी। तभी भीड़ ने उन्हें घेर लिया। लोगों ने निर्मल घोष को लात-घूंसों से पीटा और उन पर जूते-चप्पल, अंडे और कीचड़ भी फेंका। सुरक्षा के लिए पुलिस ने निर्मल घोष के सिर पर हेलमेट लगाया। उनके सफेद कुर्ते पर कीचड़ और अंडे के निशान दिखाई दिए। बैरकपुर कोर्ट पहुंचने पर भी लोगों ने उनके खिलाफ 'चोर-चोर' के नारे लगाए।

पीड़ित के पिता की शिकायत के बाद हुई गिरफ्तारी

दोनों की गिरफ्तारी पीड़ित के पिता की नई शिकायत के बाद हुई। उन्होंने सोमवार को शिकायत दर्ज कराई थी, जिसे बाद में एफआईआर में बदल दिया गया। शिकायत में आरोप लगाया गया कि तत्कालीन पानीहाटी विधायक निर्मल घोष ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए उनकी बेटी के शव का परिवार की इच्छा के खिलाफ जल्दबाजी में अंतिम संस्कार कराया। पीड़िता के माता-पिता का आरोप है कि अंतिम संस्कार इतनी जल्दी कराया गया कि दोबारा पोस्टमॉर्टम की संभावना खत्म हो गई, जिससे अहम सबूत रोके जा सकते थे।

मैं न कभी डरा हूं और न ही अब डरता हूं

अस्पताल से छुट्टी मिलते ही दहाड़े सुखबीर बादले

चंडीगढ़ (एजेंसी)। महाराष्ट्र के नांदेड़ में गुरुद्वारा माता साहिब दीवान में हुए हमले में घायल अकाली दल प्रमुख सुखबीर बादल को अस्पताल से छुट्टी मिल गई है। अस्पताल से बाहर आने के बाद सुखबीर बादल ने मीडिया कर्मियों से बात की। उन्होंने कहाकि उनका मकसद पंजाब में हालात पर कब्जा करना और शांति भंग करना है। न मैं कभी डरा था न डरा हूं।

यूपी के 16 जिलों में बाढ़, कॉलोनियों में चलीं नाव

पहाड़ से लेकर मैदान तक हर ओर जल 'जला'

बिहार के छपरा जिले में 100 दुकानों में पानी घुसा हिमाचल में रेल ट्रैक पर लैंडस्लाइड,संकट बरकरार

नई दिल्ली (एजेंसी)। मानसून ने देश भर में फिर रफ्तार पकड़ ली है। पहाड़ी इलाकों से लेकर मैदानी क्षेत्रों तक बारिश और बाढ़ जैसे हालात हैं। यूपी के 16 जिलों में 80 से ज्यादा गांव बाढ़ प्रभावित हैं। उन्नाव में पानी घरों में घुस गया है। लोग छतों पर रहने को मजबूर हैं। कॉलोनियों में नाव चल रही हैं। कानपुर में गंगा का पानी खतरे के निशान के करीब पहुंच गया है। वाराणसी में गंगा का जलस्तर बढ़ने से घाट किनारे 100 से ज्यादा छोटे मंदिर डूब गए हैं। बिहार के कई जिलों में 13 अगस्त की शाम बारिश ने उमस भरी गर्मी से राहत दिलाई। पटना में अधिकतम तापमान 36.3 डिग्री और न्यूनतम 29.4 डिग्री दर्ज किया गया।

उत्तराखंड में 61 सड़कें बंद लैंडस्लाइड से 9 मौतें

उत्तराखंड में लगातार बारिश के बीच देहरादून, पिथौरागढ़, बागेश्वर और नैनीताल में ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। खराब मौसम को देखते हुए पिथौरागढ़, देहरादून और नैनीताल में 12वीं तक के स्कूल बंद कर दिए गए हैं। वहीं, प्रदेश में 61 सड़कें बंद हैं।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

स्वतंत्रता का दिवस सुहाना, विकृतियों से मुक्त बने भारत

(लेखक - कांतिलाल मांडोत)

पन्द्रह अगस्त केवल ध्वजारोहण करने, राष्ट्रगान गाने और स्वतंत्रता सेनानियों को स्मरण करने का दिन नहीं है। यह आत्ममंथन का अवसर भी है कि जिस स्वतंत्रता के लिए असंख्य देशभक्तों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर किया, उस स्वतंत्रता को हमने कितना सार्थक बनाया है और विकसित भारत के निर्माण के लिए हमें अभी कितना आगे जाना है। वर्ष 1947 में देश राजनीतिक पराधीनता से मुक्त हुआ था, लेकिन स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ तभी पूरा होगा, जब भारत सामाजिक विकृतियों, आर्थिक विषमता, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, जातिवाद, संकीर्णता, बेरोजगारी, हिंसा और नैतिक पतन जैसी चुनौतियों से भी मुक्त हो।

गुलामी की पीड़ा को वही समझ सकता है जिसने पराधीनता का जीवन देखा हो। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने केवल सत्ता परिवर्तन के लिए संघर्ष नहीं किया था। उनके सामने एक ऐसे भारत का सपना था, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति सम्मान के साथ जीवन जी सके, न्याय सबको मिले, अवसर सबके लिए उपलब्ध हों और राष्ट्र अपनी पहचान तथा आत्मसम्मान के साथ विश्व में खड़ा हो। इसलिए स्वतंत्रता दिवस पर हमें केवल अतीत का गौरवगान नहीं करना चाहिए, बल्कि वर्तमान की उपलब्धियों और कमियों का निष्पक्ष मूल्यांकन भी करना चाहिए।

स्वतंत्रता के बाद भारत ने अनेक क्षेत्रों में ऐसी उपलब्धियां हासिल की हैं, जिन पर प्रत्येक भारतीय को गर्व होना चाहिए। जिस देश को आजादी के समय गरीबी, अशिक्षा, खाद्यान्न संकट, कमजोर औद्योगिक आधार और सीमित संसाधनों जैसी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा था, वही भारत आज विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। कृषि के क्षेत्र में हरित क्रांति ने देश को खाद्यान्न के लिए बाहरी निर्भरता से बाहर निकाला। सिंचाई, उर्वरक, कृषि अनुसंधान और आधुनिक तकनीक ने भारतीय कृषि को नई शक्ति दी। आज भारत कृषि उत्पादन के साथ-साथ डेयरी, मत्स्य और खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

औद्योगिक विकास ने भी स्वतंत्र भारत की तस्वीर बदली है। आज देश में इस्पात, ऑटोमोबाइल, दवा, इलेक्ट्रॉनिक्स, दूरसंचार, ऊर्जा, रक्षा उत्पादन और अनेक आधुनिक उद्योगों का व्यापक विस्तार हुआ है। बड़े-बड़े बांध, बिजली परियोजनाएं, राष्ट्रीय राजमार्ग, रेलवे नेटवर्क, बंदरगाह, हवाई अड्डे और महानगरों की आधुनिक परिवहन व्यवस्था देश की विकास यात्रा के प्रमाण हैं। कभी जिन वस्तुओं और तकनीकों के लिए भारत को दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता था, उनमें से अनेक का निर्माण आज देश में हो रहा है।

भारत की अंतरिक्ष यात्रा तो स्वतंत्रता के बाद की सबसे प्रेरणादायक उपलब्धियों में से एक है। सीमित संसाधनों के साथ शुरू हुआ भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम आज उपग्रह प्रक्षेपण, दूरसंचार, मौसम पूर्वानुमान, आपदा प्रबंधन, कृषि निगरानी और वैज्ञानिक अनुसंधान से लेकर चंद्रमा तथा मंगल तक पहुंच चुका है। चंद्रयान अभियानों ने भारत की वैज्ञानिक क्षमता को विश्व के सामने स्थापित किया। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र के निकट सफल सॉफ्ट लैंडिंग ने भारत की वैज्ञानिक प्रतिभा का नया परिचय दिया। आदित्य-एल1 जैसे मिशन भारत की बढ़ती अंतरिक्ष क्षमता का प्रमाण हैं। अब भारत केवल अंतरिक्ष में पहुंचने वाला देश नहीं है, बल्कि अंतरिक्ष विज्ञान में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाला राष्ट्र है।

विज्ञान और तकनीक के साथ डिजिटल क्षेत्र में भी भारत ने असाधारण परिवर्तन देखा है। मोबाइल संचार, इंटरनेट, डिजिटल भुगतान और डिजिटल सार्वजनिक सेवाओं ने सामान्य नागरिक के जीवन को प्रभावित किया है। गांवों तक इंटरनेट और बैंकिंग सेवाओं की पहुंच बढ़ी है। डिजिटल भुगतान ने आर्थिक लेन-देन की संस्कृति बदल दी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर, रोबोटिक्स और आधुनिक विनिर्माण जैसे नए क्षेत्रों में भारत अपनी क्षमता बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। यह परिवर्तन बताता है कि भारत केवल परंपरा का देश नहीं, बल्कि आधुनिक विज्ञान और तकनीक को अपनाने वाला राष्ट्र भी है।

देश की सुरक्षा के क्षेत्र में भी स्वतंत्र भारत ने लंबी यात्रा तय की है। 1962, 1965 और 1971 के युद्धों से लेकर कारगिल तक भारतीय सेनाओं ने अदम्य साहस का परिचय दिया है। आज भारत की थल सेना, वायु सेना और नौसेना अत्याधुनिक तकनीक तथा स्वदेशी सैन्य उपकरणों से अपनी क्षमता बढ़ा रही हैं। स्वदेशी लड़ाकू विमान, हेलीकॉप्टर, मिसाइल प्रणालियां, युद्धपोत, पनडुब्बियां और विभिन्न रक्षा उपकरण भारत की आत्मनिर्भर रक्षा क्षमता को मजबूत कर रहे हैं। रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक उपलब्धि नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

विश्व मंच पर भारत की बढ़ती साख भी स्वतंत्रता के बाद की उपलब्धियों का महत्वपूर्ण अध्याय है। भारत आज अनेक वैश्विक मंचों पर अपनी बात प्रभावशाली ढंग से रखता है। जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, वैश्विक स्वास्थ्य, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और तकनीकी सहयोग जैसे विषयों पर भारत की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण हुई है। विश्व के अनेक देश भारत को एक बड़े बाजार के साथ-साथ जिम्मेदार और प्रभावशाली शक्ति के रूप में देखते हैं। भारतीय मूल के लोग भी दुनिया के विभिन्न देशों में अपनी प्रतिभा से भारत की प्रतिष्ठा बढ़ा रहे हैं।

लेकिन इन उपलब्धियों के बीच यह प्रश्न भी खड़ा होता है कि क्या विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक समान रूप से पहुंचा है? क्या हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है? क्या प्रत्येक युवा को उसकी क्षमता के अनुरूप रोजगार और अवसर मिल रहे हैं? क्या गांव और शहर के बीच सुविधाओं का अंतर कम हुआ है? क्या महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान सुनिश्चित हुआ है? क्या भ्रष्टाचार, अपराध और सामाजिक भेदभाव से हम पूरी तरह मुक्त हो पाए हैं? इन प्रश्नों से आंखें मूंदना स्वतंत्रता दिवस की भावना के साथ न्याय नहीं होगा।

विकसित राष्ट्र केवल ऊंची इमारतों, चौड़ी सड़कों और आधुनिक तकनीक से नहीं बनता। विकसित राष्ट्र की वास्तविक पहचान उसके नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता से होती है। शिक्षा उसकी पहली आधारशिला है। ऐसा शिक्षा तंत्र चाहिए जो केवल परीक्षा पास करने वाले विद्यार्थी न बनाए, बल्कि वैज्ञानिक सोच, चरित्र, संवेदनशीलता, अनुशासन और राष्ट्रबोध से संपन्न नागरिक तैयार करे। स्वास्थ्य व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसमें आर्थिक स्थिति किसी व्यक्ति के उपचार में बाधा न बने। गांवों में भी गुणवत्तापूर्ण अस्पताल, विद्यालय, इंटरनेट, परिवहन और रोजगार के अवसर उपलब्ध हों।

आर्थिक विकास के साथ रोजगार सृजन पर विशेष ध्यान देना होगा। भारत की युवा आबादी हमारी सबसे बड़ी शक्ति है, लेकिन यही शक्ति तभी राष्ट्रनिर्माण में बदल सकती है जब युवाओं को कौशल, शिक्षा और रोजगार के पर्याप्त अवसर मिलें। केवल सरकारी नौकरियों पर निर्भर रहने के बजाय उद्यमिता, स्टार्टअप, विनिर्माण, कृषि आधारित उद्योग, पर्यटन, सेवा क्षेत्र और नई तकनीकों में व्यापक अवसर पैदा करने होंगे। युवाओं को नौकरी खोजने वाला ही नहीं, रोजगार देने वाला बनने की दिशा में भी प्रेरित करना होगा।

विकसित भारत का एक महत्वपूर्ण आधार सामाजिक समरसता है। जाति, भाषा, क्षेत्र और संप्रदाय के नाम पर समाज को बांटने की राजनीति देश की शक्ति को कमजोर करती है। विविधता भारत की पहचान है, लेकिन विविधता का अर्थ विभाजन नहीं होना चाहिए। हमें ऐसी राष्ट्रीय चेतना विकसित करनी होगी जिसमें व्यक्ति अपनी भाषा, परंपरा और क्षेत्रीय पहचान पर गर्व करे, लेकिन सबसे पहले स्वयं को भारतीय माने। सामाजिक न्याय का उद्देश्य समाज को स्थायी खांचों में बांटना नहीं, बल्कि वंचित व्यक्ति को आगे बढ़ने का अवसर देना होना चाहिए।

साम्प्रदायिक सद्भाव भी राष्ट्र की प्रगति की अनिवार्य शर्त है। धर्म व्यक्ति की आस्था का विषय है, उसे राजनीतिक संघर्ष और सामाजिक वैमनस्य का हथियार नहीं बनने देना चाहिए। भारत की शक्ति उसकी बहुलता में है। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च और अन्य आस्था-स्थल तभी सुरक्षित रहेंगे, जब समाज में परस्पर सम्मान और विश्वास कायम रहेगा। किसी भी प्रकार की हिंसा, घृणा और अफवाह विकास की राह को रोकती है।

भ्रष्टाचार और राजनीतिक स्वार्थ से मुक्ति भी विकसित भारत के लिए आवश्यक है। सत्ता चाहे किसी भी दल की हो, उसका मूल उद्देश्य जनसेवा होना चाहिए। लोकतंत्र केवल चुनाव जीतने का माध्यम नहीं, बल्कि जनता के प्रति जवाबदेही की व्यवस्था है। राजनीतिक दलों और नेताओं को अपने आचरण से ऐसी मिसाल प्रस्तुत करनी होगी, जिससे आने वाली पीढ़ियां सार्वजनिक जीवन को सम्मान और सेवा का क्षेत्र समझें। राजनीति में विचार, सिद्धांत, त्याग और राष्ट्रहित की पुनर्स्थापना आवश्यक है।

युवाओं की भूमिका इस परिवर्तन में सबसे महत्वपूर्ण है। युवा केवल विरोध, आंदोलन या सोशल मीडिया की बहस तक सीमित न रहें। वे विज्ञान, शिक्षा, खेल, कृषि, उद्यमिता, प्रशासन, सेना, तकनीक और सामाजिक सेवा हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का उपयोग करें। नशे, हिंसा, अंधानुकरण और डिजिटल माध्यमों के दुरुपयोग से स्वयं को बचाते हुए वे राष्ट्र के निर्माण में रचनात्मक भूमिका निभा सकते हैं। जिस देश के युवाओं में अनुशासन, परिश्रम, ईमानदारी और नवाचार की भावना जाग जाती है, उस देश को आगे बढ़ने से कोई शक्ति नहीं रोक सकती।

आज आवश्यकता केवल विकसित भारत का सपना देखने की नहीं, बल्कि उसके लिए राष्ट्रीय संकल्प लेने की है। हमें ऐसा भारत बनाना है जिसमें किसान समृद्ध हो, श्रमिक सम्मानित हो, युवा सक्षम हो, महिला सुरक्षित और आत्मनिर्भर हो, बच्चे शिक्षित हों, बुजुर्ग सम्मान के साथ जीवन जीएं और गरीब व्यक्ति विकास की मुख्यधारा से बाहर न रहे। हमें ऐसा भारत बनाना है जो आर्थिक रूप से शक्तिशाली होने के साथ नैतिक रूप से भी मजबूत हो।

स्वतंत्रता का अर्थ केवल विदेशी शासन से मुक्ति नहीं है। जब तक व्यक्ति अज्ञान, भय, नशे, गरीबी, भेदभाव और अन्याय से मुक्त नहीं होता, तब तक स्वतंत्रता की यात्रा अधूरी है। इसलिए इस पन्द्रह अगस्त को तिरंगे के सामने हमें केवल देशभक्ति के नारे नहीं लगाने हैं, बल्कि अपने भीतर कर्तव्यबोध जगाना है। हमें यह संकल्प लेना है कि हम अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी समझेंगे, कानून का सम्मान करेंगे, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करेंगे, प्रकृति को बचाएंगे, सामाजिक सद्भाव बनाए रखेंगे और अपने कार्यक्षेत्र में ईमानदारी से योगदान देंगे।

संपादकीय

लालच का जानलेवा खेल

पंजाब स्थित नवांशहर के एक गांव में ऑनलाइन गेमिंग में बड़ी रकम हारने के सदमे में एक युवक व दो किशोरों का जहर खा लेना विचलित करने वाली घटना है। बाद में युवक व एक किशोर की मौत हो गई। निस्संदेह, ऑनलाइन गेम के लालच में किशोर-युवा विवेक खो देते हैं। लत लगाने वाले ये जहरीले खेल सुनहरे सपने तो दिखाते हैं, लेकिन हकीकत बेहद खुरदरी है। कहना कठिन है कि ऑनलाइन खेलों को कितने पारदर्शी तरीके व ईमानदारी के साथ संचालित किया जाता है। बहुत संभव है कि ये गेम भी ऑनलाइन फ्रॉड संस्कृति का ही हिस्सा हों, जो संचालकों के मुनाफे के लिये ही संचालित होते हों। बहरहाल, किशोर व युवक द्वारा मोटी रकम हारने के बाद खुदकशी करना परिवार, समाज व देश की बड़ी क्षति है। आखिर 21 साल व पंद्रह साल की उम्र कितनी होती है? पूरा जीवन सामने होता है। जीवन चंद रुपये हारने से ज्यादा कीमती होता है। छोटी हार के बाद बड़ी जीत की संभावनाएं बनी रहती हैं। विडंबना ही है कि हम हादसों में मरने वालों की संख्या को महज एक आंकड़े की तरह देखते हैं। लेकिन इस आत्मघात से इन परिवारों जो चोट पहुंची होगी, उसकी कल्पना करना कठिन नहीं है। एक बच्चे को जन्म देने से लेकर पालने-पोसने तक माता-पिता पूरा जीवन लगा देते हैं। उनसे बड़ी उम्मीदें होती हैं। मगर जब बच्चे आत्महत्या जैसा कदम उठाते हैं तो परिवार पूरी तरह टूट जाता है। बच्चा तो आत्महत्या कर लेता है, लेकिन परिवार को रोज तिल-तिल कर मरने को छोड़ देता है। दरअसल, आज मोबाइल दुधारी तलवार जैसे हो गए हैं। सूचना-संवाद तो देते हैं, साथ ही तमाम आघातों की आशंकाएं भी रहती हैं। जो मोबाइल बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाई और संवाद के लिये दिये जाते हैं, उसका दुरुपयोग बच्चे ऑनलाइन गेमिंग व वर्जित सामग्री देखने के लिये करने लगे हैं। पुरानी पीढ़ी बेबस है कि वे बच्चों की निगरानी कैसे करें? वे पढ़ रहे हैं या गेम खेल रहे हैं? दरअसल, देश-दुनिया में नई पीढ़ी के जीवन में तेजी से बदलाव आ रहे हैं। नित नई तकनीक हमारे दरवाजों पर दस्तक दे रही है, लेकिन हम उसके नकारात्मक दुष्प्रभावों से बच नहीं पा रहे हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति समाज में इतनी गहरे तक घर कर गई है कि हर कोई रातों-रात अमीर बनने के सपने देखने लगा है। सोच है कि जैसे-तैसे पैसा कमाकर अमीर बना जाए। नवांशहर की घटना में पंद्रह साल के किशोर को आखिर क्यों ऑनलाइन गेमिंग से कमाई करने की ललक पैदा हुई? गेम खेलना बुरी बात नहीं है लेकिन उसका लत बनना घातक है। ये किशोर के खेलने-खाने की उम्र थी, लेकिन मैदान के खेल। लेकिन लालच के गेम में उलझकर आखिर वह क्या पाना चाह रहा था? जाहिर है पंद्रह साल के बच्चे की पढ़ाई-लिखाई से लेकर अन्य खर्चे तक मां-बाप ही उठाते हैं। आशंका हो सकती है कि किशोर परिवार के किसी व्यक्ति के खाते से रकम निकालकर ऑनलाइन गेमिंग में हार गए हों। फिर परिवार की सख्त प्रतिक्रिया के भय से ही उन्होंने आत्महत्या करने का दुखद फैसला लिया हो। बहरहाल, तकनीक के जरिये तेजी से बदलती दुनिया में बच्चों का सामंजस्य स्थापित करना अभिभावकों के लिये बड़ी चुनौती बनी हुई है। पुरानी पीढ़ी के मां-बाप बच्चों की खुशी के लिये उन्हें मोबाइल व इंटरनेट की सुविधा तो उपलब्ध करा देते हैं, मगर इसके घातक प्रभावों की वे भी कल्पना नहीं कर पाते। कोई मां-बाप नहीं चाहता कि उनका बच्चा बुरी आदत का शिकार बने, लेकिन यार-दोस्तों की संगत में रहकर वे अकसर भटक जाते हैं। इस घटना में 21 साल के युवक के साथ पंद्रह साला दो बच्चों का भी जहर खाना कई सवालों को जन्म दे जाता है।

महिलाओं का उत्सव है तीज

(लेखक- रमेश सर्राफ धमोरा)

(15 अगस्त तीज पर विशेष)

तीज का उत्सव श्रावण मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है। यह महिलाओं का उत्सव है। सावन में जब सम्पूर्ण प्रकृति हरी ओढ़नी से आच्छादित होती है उस अवसर पर महिलाओं के मन मयूर नृत्य करने लगते हैं। वृक्ष की शाखाओं में झूले पड़ जाते हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश में इसे कजली तीज के रूप में मनाते हैं। सुहागन स्त्रियों के लिए यह व्रत बहुत महत्व रखता है। आस्था, उमंग, सौंदर्य और प्रेम का यह उत्सव शिव-पार्वती के पुनर्मिलन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। चारों ओर हरियाली होने के कारण इसे हरियाली तीज कहते हैं। इस अवसर पर महिलाएं झूला झूलती हैं, लोकगीत गाती हैं और आनन्द मनाती हैं। सौंदर्य, प्रेम के उत्सव और आस्था के इस व्रत का महिलाओं के लिए बड़ा महत्व है, विशेष रूप से नव विवाहिताओं के लिए। यह त्योहार मुख्य रूप से उत्तर भारत (राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर पदेश, बिहार और झारखंड) में धूमधाम से मनाया जाता है। परंपरा के अनुसार नवविवाहिताएं पहला व्रत मायके में रखती हैं और इसके लिए झूले सजाए जाते हैं, लोक गीत गाए जाते हैं। देश के कई हिस्सों में मेले लगते हैं और माता पार्वती की सवारी निकाली जाती है। वर्षा ऋतु में श्रावण के महीने में हमारे देश में चारों तरफ पानी बरसता रहता है। इस दौरान चारों तरफ हरियाली ही हरियाली नजर आती है। हरियाली के आगोश में प्रकृति इस तरह झूम उठती है मानो पृथ्वी अपनी हरी-भरी बाहें फैलाकर सबका अभिनंदन कर रही हो। श्रावण के महीने को हिंदू धर्मावलंबी भगवान शिव का महीना मान मानकर भगवान शिव की पूजा अर्चना करते हैं। कावड़िए देशभर में विभिन्न नदी, तालाबों से जल लाकर भगवान शिव का अभिषेक करते हैं। गणगौर के बाद त्योहारों का सिलसिला रुक जाता है वह एक बार फिर श्रावण मास की तीज से प्रारंभ हो जाता है। श्रावण का महीना महिलाओं के लिए विशेष उल्लास का महीना होता है। इस महीने में आने वाले अधिकांश लोक पर्व महिलाओं द्वारा ही मनाए जाते हैं।

श्रावण मास का आगमन ही इस त्यौहार के आने की आहट सुनाने लगता है। समस्त सृष्टि सावन के अदभूत सौंदर्य में भिगी हुई सी नजर आती है। यह पर्व भारतीय जनमानस के अटूट विश्वास को और अधिक प्रगाढ़ता प्रदान करने का पर्व है। इस पर्व में हरियाली शब्द से ही साफ है कि इसका ताल्लुक पेड़-पौधों और पर्यावरण से है। यह त्योहार जीवन में जश्न का प्रतीक है और हरियाली तीज का पर्व प्रकृति का त्योहार हैं। इस मौके पर महिलाएं अच्छी फसल के लिए भी प्रार्थना करती हैं।

सावन के महीने में सिंजारा, तीज, नागपंचमी एवं सावन के सोमवार जैसे लोकपर्व उत्साह पूर्वक मनाए जाते हैं। श्रावण के महीने में मनायी जानेवाली हरियाली तीज आस्था, प्रेम, सौंदर्य व उमंग का त्यौहार है। तीज को मुख्यतः महिलाओं का त्यौहार माना जाता है। यह पर्व महिलाओं की सांस्कृतिक मान्यताओं का प्रतीक है। सावन माह में मनाया जाने वाला हरियाली पर्व दंपतियों के वैवाहिक जीवन में समृद्धि, खुशी और तरक्की का प्रतीक है। तीज का त्यौहार भारत के कोने-कोने में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। यह त्यौहार भारत के उत्तरी क्षेत्र में हर्षोउल्लास के साथ मनाया जाता है।

श्रावण में में चारों ओर हरियाली की चादर सी बिखर जाती है। जिसे देख कर सबका मन झूम उठता है। सावन का महिना एक अलग ही मस्ती और उमंग लेकर आता है। श्रावण के सुहावने मौसम के मध्य में आता है तीज का त्यौहार। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को श्रावणी तीज कहते हैं। उत्तर भारत में यह हरियाली तीज के नाम से भी जानी जाती है।

धार्मिक मान्यता के अनुसार माता पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए इस व्रत का पालन किया था। परिणामस्वरूप भगवान शिव ने उनके तप से प्रसन्न होकर उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया था। माना जाता है कि श्रावण शुक्ल तृतीया के दिन माता पार्वती ने सौ वर्षों के तप उपरान्त भगवान शिव को पति रूप में पाया था। इसी मान्यता के अनुसार स्त्रियां माता पार्वती का पूजन करती हैं। हाथों में रची मेंहदी की तरह ही प्रकृति पर भी हरियाली की चादर सी बिछ जाती है। इस नयनाभिराम सौंदर्य को देखकर मन में स्वतः ही मधुर झनकार सी बजने लगती है और हृदय पुलकित होकर नाच उठता है। इस समय वर्षा ऋतु की बौछारें प्रकृति को पूर्ण रूप से भिगो देती हैं। सावन की तीज में महिलाएं व्रत रखती हैं। इस व्रत को अविवाहित कन्याएं योग्य वर को पाने के लिए करती हैं तथा विवाहित महिलाएं अपने सुखी दांपत्य की चाहत के लिए करती हैं।

तीज पर मेहंदी लगाने, चूडियां पहनने, झूला झूलने तथा लोक गीतों को गाने का विशेष महत्व है। तीज के त्यौहार वाले दिन खुले स्थानों पर बड़े-बड़े वृक्षों की शाखाओं पर, घर की छत पर या बरामदे में झूले लगाए जाते हैं जिन पर स्त्रियां झूला झूलती हैं। हरियाली तीज के दिन अनेक स्थानों पर मेलों का भी आयोजन होता है।

राजस्थान में जिन कन्याओं की सगाई हो गई होती है। उन्हें अपने होने वाले सास ससुर से एक दिन पहले ही भेंट मिलती है। इस भेंट को स्थानीय भाषा में सिंझारा कहते हैं। सिंझारा में मेंहदी, लाख की चूडियां, लहरिया नामक विशेष वेश-भूषा, घेवर नामक मिठाई जैसी कई वस्तुएं होती हैं। पीहर पक्ष द्वारा अपनी विवाहित पुत्री को भी सिंजारा भेजा जाता है। जिसे पूजा के बाद सास को सुपुर्द कर दिया जाता है। राजस्थान में नवविवाहिता युवतियों को सावन में ससुराल से मायके बुलाने की भी परम्परा है।

तीज के अवसर पर नवयुवतियां हाथों में मेंहदी रचाते हुए गीत गाती हैं। समूचा वातावरण श्रृंगार से अभिभूत हो उठता है। इस त्योहार की सबसे बड़ी विशेषता है कि महिलाओं का हाथों पर विभिन्न प्रकार से बेलबूटे बनाकर मेंहदी रचाना। राजस्थान में हाथों व पांवों में भी विवाहिताएं मेंहदी रचाती हैं। जिसे मेंहदी मांडना कहते हैं। इस दिन राजस्थानी बालाएं दूर देश गए अपने पति के तीज पर आने की कामना करती हैं। जो कि उनके लोकगीतों में भी मुखरित होता है। राजस्थान के गांवों में पहले लड़किया गुड्डे-गुड्डी का खेल खेलती थी। तीज के दिन से गुड्डे-गुड्डी का खेल खेलना बन्द कर देती थी। इसलिये गांव की लड़किया एक साथ एकत्रित होकर अपनी पुरानी गुड्डे-गुड्डी को गांव के पास के नदी,तालाब, जोहड़ में बहा देती थी। जिसे गुड्डी बहावना कहा जाता था।

अपने सुखी दांपत्य जीवन की कामना के लिये स्त्रियां यह व्रत किया करती हैं। इस दिन उपवास कर भगवान शंकर-पार्वती की बालू से मूर्ति बनाकर शोडशोपचार पूजन किया जाता है जो रात्रि भर चलता है।

निष्ठा और सत्य

निष्ठा अविभाजित मन, अविभाजित चेतना का स्वभाव है। ईश्वर में तुम्हारी निष्ठा है, उसे जानने का प्रयत्न मत करो। आत्मा में तुम्हारी निष्ठा है, उसे जानने का प्रयत्न मत करो। जिसमें भी तुम्हारी निष्ठा है, उसे जानने की कोशिश न करो। बच्चे को मां में विश्वास है। बच्चा मां को जानने का प्रयत्न नहीं करता, उसे केवल मां में विश्वास है। जब तुममें निष्ठा है, जानने की क्या आवश्यकता है? यदि तुम प्रेम को जानने का विषय बनाते हो, प्रेम लुप्त हो जाता है। ईश्वर, प्रेम, आत्मा और निद्रा समझ के परे हैं।

यदि तुम केवल विश्लेषण करते हो, संशय उत्पन्न होता है और निष्ठा खत्म होती है। जिसमें तुम्हारी निष्ठा है, उसे जानने की या विश्लेषण करने की चेष्टा न करो। विश्लेषण दूरी पैदा करता है, संश्लेषण (संकलन) जोड़ता है। निष्ठा संकलन है, जानना विभाजन। निष्ठा और विश्वास में फर्क है, विश्वास हल्का होता है, निष्ठा ठोस, अधिक सबल। हमारे विश्वास बदल सकते हैं मगर निष्ठा अटल होती है। निष्ठा के बिना चेतना नहीं। यह दिये की लौ के समान है। निष्ठा है चेतना की शान्त, स्थायी प्रकृति। निष्ठा चेतना का स्वभाव है।

सत्य वह है जो बदलता नहीं। अपने जीवन को देखो और पहचानो कि वह सब जो बदल रहा है, सत्य नहीं। इस दृष्टि से देखने पर तुम पाओगे कि तुम केवल असत्य से घिरे हुए हो। असत्य को पहचानने पर तुम उससे मुक्त होते हो। जब तक तुम असत्य को पहचानोगे नहीं, उससे मुक्त नहीं हो सकते। स्वयं के जीवन के अनुभव तुम्हें तुम्हारे असत्यों की पहचान कराते हैं। जैसे-जैसे जीवन में परिपक्वता आती है, तुम पाते हो कि सभी कुछ असत्य है- घटनाएं, परिस्थितियां, लोग, भावनाएं, विचार, मत-धारणाएं, तुम्हारा शरीर-सभी असत्य है। और तभी सच्चे अर्थ में सत्संग (सत्य का संग) होता है। मां के लिए बच्चा तब तक असत्य नहीं है जब तक बालिग नहीं हो जाता। बच्चे के लिए मिठास असत्य नहीं और किशोर के लिए सैक्स असत्य नहीं। ज्ञान यदि शब्दों तक सीमित है, तो वह असत्य है। परंतु अस्तित्व के रूप में यह सत्य है। प्रेम भावना के रूप में सत्य नहीं, अस्तित्व के रूप में यह सत्य है।

विचार मंथन

अभिव्यक्ति की आजादी पर राहुल गांधी का आक्रामक रुख

(लेखक- सनत जैन)

भारत की राजनीति इन दिनों ऐसे दौर से गुजर रही है, जिसकी कल्पना संभवत- कभी किसी ने भी नहीं की होगी। 20 जुलाई से संसद का मानसून सत्र शुरू हुआ। इसी दिन जेन-जी के आंदोलन में दिल्ली पुलिस और अर्धसैनिक बलों द्वारा जिस तरह से आंदोलनरत् छात्र-छात्राओं पर लाठी चार्ज, आंसू गैस, वॉटर कैनन, पैलेट गन से गोलीबारी तथा बिहार में एक-47 राइफल से छात्रों के ऊपर गोलीबारी ने देश की राजनीति में एक नया उबाल ला दिया। संसद सत्र के पहले ही दिन विपक्ष ने नीट परीक्षा में पेपर लीक और अयोध्या के राम मंदिर में चंदा और चढावा चोरी के मामले में केंद्र सरकार को घेरने की रणनीति बनाई थी। विपक्ष ने दोनों मुद्दों को आपस में बांट लिया था। कांग्रेस पेपर लीक और छात्र आंदोलन पर चर्चा चाहती थी, वहीं समाजवादी पार्टी अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावा चोरी पर चर्चा करना चाहती थी। सरकार दोनों मामले में चैचा को तैयार नहीं हो रही थी। इसी बीच में आंदोलन कर रहे छात्र-छात्राओं के ऊपर जिस तरह की बर्बरता की गई, उसने संसद सत्र का पूरा माहौल ही बदल कर रख दिया। विपक्ष को जैसे इन दोनों मामलों में सरकार और भाजपा को घेरने का अवसर मिला। वहीं सरकार इन दोनों मामलों से बचना चाहती थी। जिसको लेकर विपक्ष एकजुट हो गया। सत्ता पक्ष ने राहुल गांधी के पेपर लीक मुद्दे पर चर्चा कराकर विपक्ष की एकता को बांटने का प्रयास किया, लेकिन पहली बार सरकार का यह प्रयास सफल नहीं हुआ। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के साथ इन दोनों मुद्दों पर विपक्ष एक जुट रहा। विपक्षी एकता के पीछे परिसीमन बिल भी एक बड़ा कारण था, जिसने विपक्ष को सत्र अवधि में एकजुट रखा। विपक्ष के सांसद रोजाना संसद परिसर में नारेबाजी और पोस्टर के जरिए, तथा सदन के अंदर सारा विपक्ष एकजुट होकर बेल पर आकर नारेबाजी कर रहा था। जिससे संसद की कार्यवाही सुचारु रुप से नहीं चल पा रही थी। इसी बीच सरकार ने 9 बिल जैसे तैसे पास करा लिए, लेकिन संविधान संशोधन के दो बिलों को पास कर पाना सरकार के लिए संभव नहीं हो पा रहा था।

यह संसद का मानसून सत्र विपक्ष के लिए दोनों हाथ में लड्डू के समान था। वहीं सरकार बुरी तरह से चंदा चोरी और छात्रों पर की गई कार्रवाई से घिर गई थी। विपक्ष ने पैलट गन किसके आदेश पर चली इसको मुद्दा बनाकर गृहमंत्री अमित शाह को बुरी तरह से घेर लिया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह सत्र अवधि में सदन के अंदर नहीं गए। सत्र के अवसान के दिन प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री शाह सदन में उपस्थित थे, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। इसके बाद विपक्ष को जैसे संजीवनी बूटी मिल गई। राहुल गांधी ने सत्र समाप्ति के बाद मालगांवकर हाल में रचनात्मक कांग्रेस के कार्यक्रम में जिस तरह से भारतीय जनता पार्टी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह को सीधे निशाने पर लेकर संघ को जोकरों का झुंड बताकर संघ को निशाने पर लिया है। राहुल गांधी का यह कहना कि जब तक वह नरेंद्र मोदी और अमित शाह का इस्तीफा नहीं करा देते तब तक उन्हें चेन से सोने नहीं देंगे। यह आश्चर्यजनक था। राहुल गांधी ने संघ को पर्दे के पीछे से राजनीति करने, पूंजीपतियों और भ्रष्ट नेताओं के साथ सांठ-गांठ करने, शिक्षा तंत्र एवं न्यायपालिका में संघ के प्रचारकों की नियुक्ति करने, उद्योगपतियों को देश की सारी अर्थव्यवस्था से जोड़ने में जो भ्रष्टाचार हो रहा है, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को उन्होंने आजादी से जोड़ा।

उन्होंने यह भी कहा जोकरों के आदेश को नहीं चलने देंगे। सवाल पूछने पर सरकारी उत्पीड़न को उजागर किया। विदेश नीति पर कड़े हमले किए। कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित ने जिस तरह विदेश नीति पर हमला करते हुए इटली की प्रधानमंत्री को निशाने पर लिया उसके बाद संघ ओर भाजपा में तीव्र प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक था। राहुल गांधी के भाषण पर भाजपा के कई नेता सामने आए। कहा गया इस तरह का आचरण नेता प्रतिपक्ष द्वारा नहीं किया जा सकता है। उन्होंने जो भाषा बोली है उसे भी स्वीकार नहीं किया जा सकता है। उन्होंने विदेश की प्रधानमंत्री को आपत्तिजनक भाषा से जोड़ा है।

इसे भी स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह शर्मनाक है। बहरहाल, राहुल गांधी ने भारतीय राजनीति में जो डर और भय का वातावरण बना हुआ था, उसके स्थान पर विपक्ष ने कड़े तेवर अख्तियार कर लिया है। भारतीय राजनीति में जिस तरीके का उबाल आ गया है उसके बाद कई तरह के परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है, पहले भाजपा विसात बिछाती थी उस पर विपक्ष को चलना पड़ता था अब विपक्ष विसात बिछाता है सरकार, भाजपा और संघ को उस पर चलना पड़ रहा है। यह स्थिति पहली बार देखने को मिल रही है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

भारतीय बैंकों में जमा राशि रिकॉर्ड स्तर पर, तीन पखवाड़े में 115 अरब डॉलर बढ़ी

मुंबई ।

भारतीय बैंकिंग प्रणाली में जमा राशि हाल ही में रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गई है। यह उछाल मुख्य रूप से भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की फॉरेन-करेंसी नॉन-रेसिडेंट (एफसीएनआर) स्कीम के तहत प्रवासी भारतीयों (एनआरआई) से भारी डॉलर प्रवाह के कारण देखा गया है। आरबीआई के आंकड़ों के अनुसार, 31 जुलाई तक के तीन पखवाड़ों में बैंकिंग सिस्टम में जमा राशि में कुल 11 ट्रिलियन रुपए (लगभग 115.25 बिलियन डॉलर) की रिकॉर्ड बढ़ोतरी दर्ज की गई। यह वृद्धि 1 अप्रैल से 15 जून के बीच हुई 3.87 ट्रिलियन रुपए की शुद्ध कमी को उलट देती है। वर्तमान में, भारतीय बैंकों में कुल जमा राशि रिकॉर्ड 269.4 ट्रिलियन रुपए पर पहुंच गई है। जून में आरबीआई ने एनआरआई जमा आकर्षित करने और ऋणदाताओं व सरकारी कंपनियों के लिए सस्ते डॉलर फंड जुटाने के लिए एक डिस्काउंटेड स्वैप विंडो की घोषणा की थी। जुलाई के अंत तक, इन स्कीमों के माध्यम से लगभग 41 बिलियन डॉलर का प्रवाह हुआ। एक सरकारी बैंक के ट्रेडर के अनुसार, डॉलर को रुपए में बदलने की तेज प्रक्रिया इस बढ़ोतरी का मुख्य कारण है।

एयरटेल ने बंद किए सस्ते प्लान, अब ₹349 का सबसे सस्ता प्लान

नई दिल्ली।

भारती एयरटेल ने अपने प्रीपेड प्लान पोर्टफोलियो में बदलाव करते हुए ₹299 समेत चार रिचार्ज प्लान बंद कर दिए हैं। कंपनी ने ₹299, ₹579, ₹619 और ₹649 वाले प्लान 12 अगस्त से हटा दिए हैं । अब 28 दिन की वैधता वाला ₹349 प्लान सबसे सस्ता है. इसमें डेली-डेटा और अनलिमिटेड कॉलिंग प्लान की सुविधा है।

₹349 के प्लान में प्रतिदिन 2लक्र हाई-स्पीड डेटा, अनलिमिटेड लोकल-एसटीडी कॉलिंग और 100 एसएमएस प्रतिदिन मिलते हैं। पुराने ₹299 प्लान में 1.5लक्र दैनिक डेटा मिलता था। यानी समान अवधि के लिए ग्राहकों को अब ₹50 अधिक खर्च करने होंगे। हालांकि कंपनी ने इसे टैरिफ बढ़ोतरी नहीं है. सस्ते कम कीमत के प्लान हटाने से ग्राहकों के लिए सस्ते विकल्प के अवसर एयरटेल में सीमित हो गए हैं।

स्वतंत्र माइक्रोफिन 3,000 करोड़ के आईपीओ के लिए तैयार

सेबी के पास दाखिल किए दस्तावेज

नई दिल्ली ।

उद्यमी अनन्या बिड़ला के नेतृत्व वाली गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (एनबलीएफसी-एफआई) माइक्रोफिन लिमिटेड ने 3,000 करोड़ रुपए के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के समक्ष प्राथमिक दस्तावेज दाखिल कर दिए हैं। कंपनी द्वारा सेबी के पास जमा किए गए दस्तावेजों के अनुसार, यह आईपीओ 1,500 करोड़ रुपए तक के नए शेयर और 1,500 करोड़ रुपए तक की बिक्री पेशकश (ओएफएस) का मिश्रण होगा। नए शेयरों के निर्गम से प्राप्त राशि का उपयोग स्वतंत्र माइक्रोफिन अपने टियर-द्वि पूंजी आधार को मजबूत करने, भविष्य की वृद्धि को वित्तपोषित करने तथा आगे ऋण देने की क्षमता बढ़ाने के लिए करेगी। अनन्या बिड़ला इस वित्तीय समावेशन-केंद्रित कंपनी की चेयरपर्सन और गैर-कार्यकारी निदेशक हैं। स्वतंत्र माइक्रोफिन ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों की महिलाओं को बिना गारंटी वाले छोटे कर्ज और वित्तीय सेवाएं प्रदान कर वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देती है।

लीप इंडिया का शेयर बाजार में निर्गम मूल्य से 4 फीसदी ऊपर सूचीबद्ध

नई दिल्ली । लीप इंडिया लिमिटेड के शेयर ने शुक्रवार को शेयर बाजारों में अपने निवेशकों को शानदार आगाज दिया। आपूर्ति श्रृंखला परिसंपत्तियां साझा करने वाली इस कंपनी के शेयर निर्गम मूल्य से 4 प्रतिशत से अधिक प्रीमियम पर सूचीबद्ध हुए, जो आईपीओ को मिले मजबूत अभिदान का परिणाम है। बीएसई पर लीप इंडिया का शेयर 166 रुपये पर खुला, जो इसके निर्गम मूल्य 159 रुपये से 4.40 प्रतिशत अधिक था। इसी तरह, एनएसई पर यह 4.33 प्रतिशत की बढ़त के साथ 165.90 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। इस मजबूत शुरुआत के साथ, कंपनी का बाजार पूंजीकरण 6,530.95 करोड़ रुपये दर्ज किया गया। कंपनी के 2,480 करोड़ रुपये के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) को बोली के अंतिम दिन 8.38 गुना अभिदान मिला था।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

सेंसेक्स 70 अंक, निफ्टी 30 अंक गिरा

मुंबई ।

भारतीय शेयर बाजार शुक्रवार को हल्की गिरावट के साथ बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हावी रहने से आई है। इसी कारण दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 70 अंक नीचे आकर 78,009.25 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 30 अंक टूटकर 24,366.00 पर बंद हुआ। बाजार में आई इस गिरावट के पीछे निवेशकों की मुनाफावसूली को भी एक बड़ा कारण माना गया है। इसके अलावा वैश्विक अनिश्चितताओं, खासकर अमेरिका की ओर से नौसैनिक नाकाबंदी की धमकी के बाद कच्चे तेल की कीमतों में स्थिरता के बीच भी बाजार में बिकवाली हावी रही जिससे भी वह गिरा। आज कारोबार के दौरान अपोलो हॉस्पिटल्स, भारती एयरटेल, अडानी एंटरप्राइजेज, अडानी पोर्ट्स और विप्रो के शेयरों में तेजी रही जबकि टाटा मोटर्स, जियो फाइनेंशियल, ओएनजीसी, एशियन पेंट्स और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई)के शेयरों में गिरावट दर्ज की गई। आज केवल मीडिया सेक्टर से जुड़ी कंपनियां ही बढ़त के साथ हरे निशान में बंद हुईं। इसके अलावा फार्मा, सरकारी बैंक, एफएमसीजी और ऑटो जैसे अन्य सभी प्रमुख विभागों में गिरावट रही। व्यापक बाजार में भी हल्का दबाव देखा गया, जहां `निफ्टी` मिडकैप 0.17 फीसदी और `निफ्टी स्मालकैप 0.01 फीसदी की गिरावट के साथ कारोबार कर रहे थे। सेक्टोरल इंडेक्स की बात करें तो `निफ्टी मेटल सबसे कमजोर प्रदर्शन करने वाले सेक्टरों में रहा, वहीं `निफ्टी कंज्यूमर ड्यूरेबल ने बाजार के मुकाबले बेहतर प्रदर्शन किया। वैश्विक संकेतों और भू-राजनीतिक तनाव ने निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया। वहीं इससे पहले आज सुबह बाजार शुरुआती कारोबार में दबाव में दिखा। वैश्विक अनिश्चितताओं, खासकर अमेरिका की ओर से नौसैनिक नाकाबंदी की धमकी के बाद कच्चे तेल की कीमतों में स्थिरता के बीच बाजार में बिकवाली हावी रही।

जुलाई में भारत का खाद्य तेल आयात 8 फीसदी गिरा

रिफाइंड तल का आयात घटा, कच्चे तेल की हिस्सेदारी 96 फीसदी तक पहुंची

नई दिल्ली ।

भारत का खाद्य तेल आयात जुलाई महीने में 8 प्रतिशत घटकर 14.81 लाख टन रह गया, जो पिछले साल इसी महीने में 16.16 लाख टन था। उद्योग निकाय सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) द्वारा बृहस्पतिवार को जारी आंकड़ों में यह जानकारी दी गई। एसईए के अनुसार जुलाई 2026 में भारत का कुल वनस्पति तेल (खाद्य और अखाद्य) आयात भी सालाना आधार पर 7 प्रतिशत घटकर 15.25 लाख टन दर्ज किया गया, जबकि पिछले साल यह 16.48 लाख टन था। हालांकि, तेल वर्ष 2025-26 के पहले नौ महीनों (नवंबर 2025 से जुलाई 2026) में, वनस्पति तेल का कुल आयात 121.50 लाख टन रहा, जो पिछले विपणन वर्ष की समान अवधि के 116.03 लाख टन से अधिक है। इसी अवधि में, खाद्य तेल का कुल आयात भी 5 प्रतिशत बढ़कर 119.23 लाख टन हो गया, जबकि पिछले तेल वर्ष की समान अवधि में यह 113.46 लाख टन था। आयात की प्रवृत्ति में एक महत्वपूर्ण बदलाव देखा गया है, जहां परिष्कृत तेल का अनुपात 14 प्रतिशत से घटकर मात्र 4 प्रतिशत रह गया है।

सोने-चांदी की कीमतों में गिरावट

मुनाफावसूली से सोना 1,117 रुपए टूटा, चांदी भी 1,861 रुपए लुढ़की

नई दिल्ली । सोने और चांदी की कीमतों में शुक्रवार को वैश्विक और घरेलू दोनों बाजारों में गिरावट दर्ज की गई। होर्मुज स्ट्रेट को फिर से खोलने के लिए चल रहे कूटनीतिक प्रयासों में ठहराव आने से निवेशकों में सतर्कता बढ़ी, जिसके चलते कीमती धातुओं में मुनाफावसूली देखी गई। हालांकि, अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में बढ़ोतरी की संभावना कमजोर बने रहने से आगे चलकर इन धातुओं के लिए सकारात्मक रुझान बरकरार रहने की उम्मीद है। वैश्विक बाजार कॉमेक्स पर, सोना 4,370 डॉलर प्रति औंस के करीब कारोबार कर रहा था, जो पिछले बंद भाव 4,420.40 डॉलर से 48.10 डॉलर की गिरावट दर्शाता है। चांदी भी 0.86 डॉलर की गिरावट के साथ 64.13 डॉलर प्रति औंस पर आ गई, जो पिछले बंद भाव 64.99 डॉलर था। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में सुबह से ही सुस्ती का माहौल रहा और दिनभर गिरावट जारी रही। घरेलू मार्केट एमसीएक्स पर भी यही रुख देखा गया। सोने का अक्टूबर वायदा अनुबंध 1,117 रुपये की गिरावट के साथ 1,52,349 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया, जबकि इसका पिछला बंद भाव 1,54,882 रुपये था। यह 266 रुपये की गिरावट के साथ 1,53,200 रुपये पर खुला था। इसी प्रकार चांदी का सितंबर वायदा अनुबंध 1,861 रुपये की गिरावट के साथ 2,33,586 रुपये प्रति किलोग्राम पर कारोबार कर रहा था, जबकि इसका पिछला बंद भाव 2,35,447 रुपये था। चांदी की शुरुआत 1,667 रुपये की गिरावट के साथ 2,33,780 रुपये पर हुई थी। दोनों धातुओं के वायदा भाव दिनभर दबाव में रहे, जिससे निवेशकों ने सतर्कता बरतते हुए मुनाफावसूली की।

स्वतंत्रता दिवस से पूर्व पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई राहत नहीं

तेल कंपनियों ने नहीं किया कोई बदलाव, कई शहरों में 110 के पार पहुंचा पेट्रोल

नई दिल्ली

स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त से ठीक एक दिन पहले देश भर में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में स्थिरता बनी हुई है। तेल विपणन कंपनियों (ओएमसी) ने ईंधन दरों में कोई बड़ा बदलाव नहीं किया है, जिससे उपभोक्ताओं को न तो तत्काल राहत मिली है और न ही नई बढ़ोतरी का सामना करना पड़ा है। यह स्थिति पिछले कई महीनों से कायम है, जब आखिरी बार कीमतों में मामूली वृद्धि देखी गई थी। शुक्रवार को भी देश की राजधानी दिल्ली में पेट्रोल 102.12 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.20 रुपये प्रति लीटर पर स्थिर है। वहीं आर्थिक राजधानी मुंबई में पेट्रोल की कीमत 111.21 रुपये और डीजल 99.82 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है। देश के अन्य प्रमुख शहरों जैसे बेंगलुरु, हैदराबाद और कोलकाता में भी पेट्रोल के दाम 110 रुपये प्रति लीटर से ऊपर

दर्ज किए गए। हैदराबाद में डीजल भी 103.82 रुपये प्रति लीटर पर बिक रहा है। दरों की बात करें तो भोपाल में पेट्रोल 114.54 रुपये प्रति लीटर के साथ सबसे महंगा रहा, जबकि कोलकाता में यह 113.51 रुपये और पटना में 113.37 रुपये दर्ज किया गया। जयपुर में पेट्रोल 112.66 रुपये और चेन्नई में 107.74 रुपये प्रति लीटर बिका। हालांकि, सूरत में पेट्रोल 95.00 रुपये और डीजल 89.00 रुपये प्रति लीटर पर रहा, जो सूचीबद्ध शहरों में सबसे कम कीमतों में से एक है। पुणे में पेट्रोल 104.04 रुपये और डीजल 90.57 रुपये प्रति लीटर दर्ज किया गया। कुल मिलाकर, स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर ईंधन की कीमतों में कोई बदलाव न होने से मौजूदा स्तरों पर स्थिरता बनी हुई है, लेकिन कई शहरों में उच्च कीमतें अभी भी चिंता का विषय हैं।

एंकर निवेशकों की समय पूर्व निकासी से आईपीओ कीमतों पर दबाव- सेबी

एफपीआई रहे बड़े बिकवाल, 30 दिन की लॉक-इन अवधि खत्म होने पर दिखा असर

नई दिल्ली ।

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के एक अध्ययन ने खुलासा किया है कि प्रारंभिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ) में एंकर निवेशकों की बिकवाली, खासकर 30 दिन की लॉक-इन अवधि समाप्त होने के आसपास, सूचीबद्ध कंपनियों की कीमतों पर महत्वपूर्ण दबाव डालती है। अध्ययन में पाया गया कि विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) इस अवधि में सबसे बड़े बिकवाल रहे, जिससे बाजार में अस्थायी आपूर्ति दबाव बना। सेबी ने अप्रैल 2022 से अक्टूबर 2025 के बीच सूचीबद्ध हुए 242 मेनबोर्ड आईपीओ के विश्लेषण में पाया कि जहां एंकर निवेशकों ने अपनी 10 प्रतिशत से अधिक हिस्सेदारी बेची, वहां टी प्लस 29 से टी प्लस 33 के दौरान कीमतों में औसतन 3.5 प्रतिशत और मध्यिका के आधार पर लगभग छह प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। मौजूदा नियमों के तहत एंकर निवेशकों को आवंटित 50 प्रतिशत शेयरों पर 30 दिन और शेष 50 प्रतिशत पर 90 दिन की लॉक-इन अवधि होती है। इस उच्च बिकवाली तीव्रता वाली श्रेणी में एफपीआई ने अपने बड़े आवंटन का औसतन 24.5 प्रतिशत हिस्सा बेचा, जो कॉरपोरेट (23.1 प्रतिशत) और अन्य योग्य संस्थागत खरीदारों (21.6 प्रतिशत) से अधिक था। हालांकि, 90 दिन की लॉक-इन अवधि पूरी होने के बाद यह दबाव काफी हद तक कम हो जाता है। अध्ययन में यह भी सामने आया कि एंकर निवेशकों की बिकवाली निर्धारित लॉक-इन अवधि से आगे तक जारी रहती है। कुल भारित निकासी टी प्लस 30 पर 3.5 प्रतिशत से बढ़कर टी प्लस 365 तक 50.7 प्रतिशत हो गई, जिससे पता चलता है कि एक साल के भीतर लगभग आधा एंकर आवंटन बेच दिया जाता है। मूल्य के लिहाज से, एफपीआई ने टी प्लस 365 तक करीब 22,474 करोड़ रुपये के शेयर बेचे, जबकि उनका कुल एंकर आवंटन 37,491 करोड़ रुपये था। इसके अतिरिक्त, छोटे आईपीओ (0-250 करोड़ रुपये) में बिकवाली की तीव्रता अधिक रही, जहां टी+365 तक 72.5 प्रतिशत निकासी दर्ज की गई, जबकि 1,001-2,500 करोड़ रुपये के निर्गम आकार वाले आईपीओ में यह 40.8 प्रतिशत थी।

रुपया गिरावट पर बंद

मुंबई ।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपया शुक्रवार को 7 पैसे की गिरावट के साथ ही 95.52 पर बंद हुआ। आज सुबह अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 95.39 प्रति डॉलर पर खुला। बाद में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 95.43 के स्तर पर आ गया जो पिछले बंद भाव से दो पैसे की मामूली बढ़त है। रुपया गुरुवार को 12 पैसे की गिरावट के साथ 95.45 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था।

इस बीच, दुनिया की छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.08 प्रतिशत की गिरावट के साथ 99.78 पर रहा।

विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि घरेलू शेयर बाजार से विदेशी पूंजी की निकासी और वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के कारण रुपये पर दबाव बना रहा।

भारत की अमेरिका से 2027 तक 15 फीसदी एलपीजी गैस खरीदने की तैयारी

पश्चिमी एशिया पर निर्भरता कम करने और आपूर्ति स्रोतों में विविधता लाने पर जोर

नई दिल्ली ।

भारत अपनी तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) आपूर्ति को पूरी तरह सुरक्षित करने की दिशा में बड़ा कदम उठा रहा है। दुनिया के सबसे बड़े एलपीजी उपभोक्ता के रूप में भारत ने 2027 के वार्षिक अनुबंधों के तहत अमेरिका से अधिक लिक्विफाइड पेट्रोलियम गैस खरीदने के लिए बातचीत शुरू की है। इसका उद्देश्य अपने आपूर्ति स्रोतों में विविधता लाना और पश्चिम एशिया पर अपनी वर्तमान निर्भरता को कम करना है। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार सरकार ने इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन और हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन जैसे राज्य-स्वामित्व वाले रिफाइनरों को 2027 तक भारत के कुल एलपीजी आयात का कम से कम 15 फीसदी अमेरिकी कंपनियों के साथ टर्म कॉन्ट्रैक्ट के जरिये हासिल करने का निर्देश दिया है। इस साल भारत ने 22 लाख टन का पहला अमेरिकी टर्म सप्लाई अनुबंध किया था, जो उसके कुल आयात का 10 फीसदी था। तीनों रिफाइनरों के अधिकारी इस समय अमेरिका में आपूर्ति सौदों पर बातचीत कर रहे हैं। एक ओर, यह भारत के आपूर्ति विकल्पों का विस्तार करेगा और पश्चिम एशिया में संभावित व्यवधानों के जोखिम को कम करेगा। दूसरी ओर, यह अमेरिका के साथ भारत के व्यापार अधिशेष को कम करने में भी मदद करेगा, जो नई दिल्ली और वाशिंगटन के बीच लंबित व्यापार समझौते के लिए महत्वपूर्ण है। हॉरमुज स्ट्रेट पर तनाव और अमेरिका-ईरान वार्ता में गतिरोध के कारण भारत के एलपीजी आपूर्ति दृष्टिकोण पर लगातार दबाव बना हुआ है। पिछले महीने एलपीजी की खपत में 16 फीसदी से अधिक की गिरावट आई, जिससे घरों और उद्योगों को वैकल्पिक ईंधन की ओर स्विच करना पड़ा। अमेरिका पहले ही भारत का शीर्ष एलपीजी सप्लायर बन चुका है, इस साल अगस्त तक शिपमेंट रिकॉर्ड 39 लाख टन तक पहुंच गया था।

माल्या-एसबीआई विवाद खत्म करें, देश की अर्थव्यवस्था हो रही प्रभा वित- बॉम्बे हाईकोर्ट

एक दशक पुराने वाणिज्यिक विवाद को तार्किक अंत तक पहुंचाने पर जोर

मुंबई ।

बॉम्बे हाई कोर्ट ने भगोड़े कारोबारी विजय माल्या और बैंकों के बीच एक दशक से चल रहे वाणिज्यिक विवाद को अब खत्म करने की बात कही है। कोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से जांच की मौजूदा स्थिति और अटैच की गई संपत्तियों का ब्योरा मांगा है। कोर्ट का मानना है कि इस विवाद का देश की अर्थव्यवस्था पर सीधा और नकारात्मक असर पड़ रहा है। जस्टिस मिलिंद जाधव की सिंगल जज बेंच ने माल्या की याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि अगर दोनों पक्ष इस विवाद को खत्म नहीं करते हैं, तो इसका देश की अर्थव्यवस्था पर सीधा असर पड़ेगा।

कोर्ट ने जोर दिया कि एक दशक से चल रहे इस मामले को अब एक तार्किक अंत तक पहुंचना चाहिए। माल्या ने 2020 में पीएमएलए कोर्ट के उस आदेश को चुनौती दी थी, जिसमें बैंकों को ईडी द्वारा अटैच की गई उसकी संपत्तियों का उपयोग करने की अनुमति दी गई थी।

माल्या पर बंद हो चुकी किंगफिशर एयरलाइंस के लिए बैंकों से लिए गए लगभग 9,000 करोड़ रुपए के लोन को डिफॉल्ट करने का आरोप है।

वह मार्च 2016 में यूके भाग गया था और 2019 में भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया गया। कोर्ट ने पहले भी साफ किया था कि जब तक माल्या भारत लौटकर सरेंडर नहीं करता, तब तक उसकी याचिका पर विचार नहीं किया जाएगा। माल्या ने इंग्लैंड की अदालतों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों का हवाला देते हुए कहा है कि वह फिलहाल यह नहीं बता सकता कि भारत कब लौटेगा। उसके वकील ने हालांकि, याचिकाकर्ता की अनुपस्थिति में भी सुनवाई का आग्रह किया है।

टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स का मुनाफा 80 फीसदी गिरा

पुर्जों की कमी, सप्लायर और जेएलआर के कमजोर प्रदर्शन ने बिगाड़ा खेल

मुंबई।

टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स को चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में भारी झटका लगा है। कंपनी का मुनाफा 80 फीसदी से ज्यादा घटकर 775 करोड़ रुपए रह गया, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में 3,924 करोड़ रुपए था। यह भारी गिरावट स्पेयर पार्ट्स की आपूर्ति में बाधाओं और प्रीमियम ब्रांड जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) के कमजोर प्रदर्शन के कारण हुई है। अप्रैल-जून तिमाही में टाटा मोटर्स का मुनाफा 3,924 करोड़ रुपए से घटकर महज 775 करोड़ रुपए रह गया, यानी 80 फीसदी से अधिक की गिरावट। कंपनी के लिए यह झटका स्पेयर पार्ट्स की आपूर्ति में रुकावटों, एक बड़े कंपोनेंट सप्लायर के यहां लगी आग और मिडिल ईस्ट में जारी संघर्ष जैसी कई चुनौतियों के कारण लगा। इसके अतिरिक्त, कुछ जगुआर मॉडल्स का उत्पादन बंद होने से भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा। हालांकि, इस अवधि में कंपनी का ऑपरेशनल रेवेन्यू 9 फीसदी बढ़कर 95,799 करोड़ रुपए रहा। मुनाफे में गिरावट के बावजूद रेवेन्यू में वृद्धि बताती है कि कंपनी के प्रोडक्ट्स की मांग बनी हुई है, लेकिन परिचालन संबंधी चुनौतियां हावी रहीं। कंपनी का ऐ बिटा मार्जिन 130 बेसिस पॉइंट्स घटकर 7.4 फीसदी पर आ गया, साथ ही 32 करोड़ रुपए का एक्सेप्शनल लॉस भी दर्ज किया गया। प्रीमियम सब्सिडियरी जगुआर लैंड रोवर का प्रदर्शन भी निराशाजनक रहा।

जेएलआर का मुनाफा 73 फीसदी गिरकर 66 बिलियन डॉलर पर आ गया, जबकि रेवेन्यू में भी 9 फीसदी की कमी आई। जेएलआर के खराब प्रदर्शन के पीछे भी सप्लायर के यहां आग, मिडिल ईस्ट संघर्ष और कुछ जगुआर मॉडल्स का उत्पादन बंद होना प्रमुख कारण रहे।

जुलाई में थोक मुद्रास्फीति में मामूली गिरावट, 9.78 फीसदी पर पहुंची

ईंधन-खाद्य वस्तुओं की कीमतों में नरमी ने दी राहत

नई दिल्ली ।

महंगाई मोर्चे पर आंशिक राहत देते हुए थोक मुद्रास्फीति जुलाई में मामूली रूप से घटकर 9.78 प्रतिशत पर आ गई है। जून में यह 9.87 प्रतिशत दर्ज की गई थी। सरकार के नए आधार वर्ष 2022-23 पर आधारित थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) के आंकड़ों के तहत यह पहली मासिक गिरावट है, जो मुख्य रूप से ईंधन, बिजली और खाद्य वस्तुओं की कीमतों में नरमी के कारण संभव हुई। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा शुक्रवार को जारी आंकड़ों के अनुसार ईंधन और बिजली क्षेत्र में थोक मुद्रास्फीति जुलाई में घटकर 20.05 प्रतिशत रह गई, जो जून में 27.41 प्रतिशत थी। इसी तरह खाद्य वस्तुओं की महंगाई भी जुलाई में 5.49 प्रतिशत से घटकर 5.44 प्रतिशत पर आ गई। इन प्रमुख क्षेत्रों में कीमतों में आई नरमी ने समग्र थोक मुद्रास्फीति को नीचे लाने में मदद की है। हालांकि, विनिर्मित उत्पादों की मुद्रास्फीति जुलाई में बढ़कर 8.29 प्रतिशत हो गई, जो जून में 7.48 प्रतिशत थी, जिससे पूरी तरह से राहत नहीं मिल पाई। पश्चिम एशिया में जारी युद्ध और होर्मुज जलडमरूमध्य में अवरोध के कारण वैश्विक कच्चे तेल तथा उर्वरकों की लागत में वृद्धि का असर अभी भी अर्थव्यवस्था पर बना हुआ है, जिसने चालू वित्त वर्ष 2026-27 की शुरुआत से थोक महंगाई को लगातार बढ़ाया था। यह राहत उस समय आई है जब खुदरा मुद्रास्फीति खाद्य कीमतों में वृद्धि के कारण जुलाई में बढ़कर 4.45 प्रतिशत हो गई है, जो जून में 4.38 प्रतिशत थी। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की मौद्रिक नीति समिति ने इस महीने की शुरुआत में नीतिगत दरों को 5.25 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखा था। आरबीआई ने अल नीनो की स्थिति और कमजोर मानसून का हवाला देते हुए वित्त वर्ष 2026-27 के लिए खुदरा मुद्रास्फीति का अनुमान पांच प्रतिशत रखा है, जो भविष्य की चुनौतियों का संकेत देता है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

विश्व विजयी तिरंगा प्यारा...

झंडा ऊँचा रहे हमारा, विश्व विजयी तिरंगा प्यारा..

यह गीत भारत का हर बच्चा गुनगुनाता है.. बड़े ही शान से। आखिर क्या बात है इस ध्वज में जिसने आज़ादी के परवानों में एक नया जोश भर दिया था और जो आज भी हर भारतीय को अपने गरिमामय इतिहास की याद दिलाता है और विभिन्नता में एकता वाले इस देश को एक सूत्र में बाँधे हुए है। हर स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर लाल क़िले की प्राचीर पर राष्ट्रीय ध्वज को बड़े ही आदर और सम्मान के साथ फहराया जाता है। देश के प्रथम नागरिक से लेकर आम नागरिक तक इसे सलामी देता है। 21 तोपों की सलामी से सेना इसका सम्मान करती है। किसी भी देश का झंडा उस देश की पहचान होता है। तिरंगा हम भारतीयों की पहचान है। राष्ट्रीय झंडे ने पहली बार आज़ादी की घोषणा के कुछ ही दिन पहले 22 जुलाई 1947 को पहली बार अपना वो रंग रूप पाया जो आज तक कायम है। हमारा राष्ट्रीय ध्वज तीन रंगों से बना है इसलिए हम इसे तिरंगा भी कहते हैं। सबसे ऊपर केसरिया रंग फिर सफ़ेद और सबसे नीचे हरा। बीच में गहरे नीले रंग का चक्र बना है जिसमें 24 चक्र हैं जिसे हम अशोक चक्र के नाम से जानते हैं। इस प्रतीक को सारनाथ में अशोक महान के स्तंभ से लिया गया है। तिरंगे की बनावट पर हमारे देश में काफ़ी ध्यान दिया जाता है क्यों कि ये हमारे सम्मान से जुड़ा हुआ है। हर तिरंगे में अशोक चक्र श्वेत रंग के तीन चौथाई भाग में ही होना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज खादी के कपड़े का होना चाहिए। आज जो ध्वज हमारे देश की पहचान है उसे इस रूप में ढालने वाले थे पिंगली वेंकैया।

तिरंगे में इन रंगों की क्या महता है ये जानना बहुत ज़रूरी है। केसरिया यानी भगवा रंग वैराग्य का रंग है। हमारे आज़ादी के दीवानों ने इस रंग को सबसे पहले अपने ध्वज में इसलिए सम्मिलित किया जिससे आने वाले दिनों में देश के नेता अपना लाभ छोड़ कर देश के विकास में खुद को समर्पित कर दें। जैसे भक्ति में साधु वैराग ले मोह माया से हट भक्ति का मार्ग अपनाते हैं। श्वेत रंग प्रकाश और शांति के प्रतीक के रूप में लिया गया। हरा रंग प्रकृति से संबंध और संपन्नता दर्शाता है, और केंद्र में स्थित अशोक चक्र धर्म के 24 नियमों की याद दिलाता है।

आजादी कहें या स्वतंत्रता ये ऐसा शब्द है जिसमें पूरा आसमान समाया है। आजादी एक स्वाभाविक भाव है या यूँ कहें कि आजादी की चाहत मनुष्य को ही नहीं जीव-जन्तु और वनस्पतियों में भी होती है। सदियों से भारत अंग्रेजों की दासता में था, उनके अत्याचार से जन-जन त्रस्त था। खुली फिजा में सांस लेने को बेचैन भारत में आजादी का पहला बिगुल 1857 में बजा किन्तु कुछ कारणों से हम गुलामी के बंधन से मुक्त नहीं हो सके। वास्तव में आजादी का संघर्ष तब अधिक हो गया जब बाल गंगाधर तिलक ने कहा कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

राष्ट्र और मातृभूमि की रक्षा के लिये
गंभीर प्रयास करने होंगे

देश में एक बार फिर स्वतंत्रता दिवस या आजादी के दिन के अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। देश में बढ़ते भ्रष्टाचार, अराजकता, बेरोजगारी, भूखमरी, बेरोजगारी, अस्वास्थ्य की स्थित और गरीबी की वजह से अनेक लोगों के लिये 15 अगस्त की आजादी एक भूली बिसरी घटना हो गयी है। आजादी को अब 78 वर्ष हो गये हैं और इसका मतलब यह है कि कम से हर परिवार की पांच से सात पीढ़ियों ने इस दौरान इस देश में सांस ली होगी। हम देखते हैं कि पीढ़ी दर पीढ़ी एतिहासिक घटनाओं की स्मृतियां फीकी पड़ती जाती हैं। एक समय तो उनको एक तरह विस्मृत कर दिया जाता है। अगर 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस और और 26 जनवरी गणतंत्र दिवस हर वर्ष औपचारिक रूप से पूरे देश में न मनाया जाये तो शायद हम इन तारीखों को भूल चुके होते। वैसे निरंतर औपचारिक रूप से मनाये जाने के बाद भी कुछ वर्षों बाद एक दिन यह स्थिति आयेगी कि इसे याद रखने वालों की संख्या कम होगी या फिर इसे लोग औपचारिक मानकर इसमें अरुचि दिखायेंगे।

ऐतिहासिक स्मृतियों की आयु कम होने का कारण यह है कि इस संसार में मनुष्य की विषयों में लिप्तता इस कदर रहती है कि उसमें सक्रियता का संचार नित नयी एतिहासिक घटनाओं का सृजन करता है। मनुष्य जाति की इसी सक्रियता के कारण ही जहां इतिहास दर इतिहास बनता है वही उनको विस्मृत भी कर दिया जाता है। हर पीढ़ी उन्हीं घटनाओं से प्रभावित होती है जो उसके सामने होती हैं। वह पुरानी घटनाओं को अपनी पुरानी पीढ़ी से कम ही याद रखती है। इसके विपरीत जिन घटनाओं का अध्यात्मिक महत्व होता है उनको सदियों तक गाया जाता है। हम अपने अध्यात्मिक स्वरूपों में भगवत् स्वरूप की अनुभूति करते हैं इसलिये ही भगवान श्री विष्णु, श्री ब्रह्मा, श्री शिव, श्री राम, श्री कृष्ण तथा अन्य स्वरूपों की गाथायें इतनी दृढ़ता से हमारे जनमानस में बसी हैं कि अनेक एतिहासिक घटनायें उनका विस्मरित नहीं करा पातीं। हिन्दी के स्वर्णिम काल में संत कबीर, मानस हंस तुलसी, कविवर रहीम, और भक्तमणि मीरा ने हमारे जनमानस को आंदोलित किया तो उनकी जगह भी ऐसी बनी है कि वह हमारे इतिहास में भक्त स्वरूप हो गये और उनकी श्रेणी भगवान से कम नहीं बनी। हम इन महामनीषियों के संबंध में श्रीमद्भागवत गीता में वर्णित इस संदेश का उल्लेख कर सकते हैं जिसमें भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'जैसे भक्त मुझकों भजते हैं वैसे ही मैं उनको भजता हूं'। अनेक विद्वान तो यह भी भी कहते हैं कि भक्त अपनी तपस्या और सृजन से भगवान की अपेक्षा बढ़े हो जाते हैं। ऐसा नहीं है कि भारतीय अध्यात्मिक दर्शन राष्ट्र या मातृभूमि को महत्व नहीं देता। भगवान श्रीकृष्ण ने तो अपने मित्र श्री अर्जुन को राष्ट्रहित के लिये उसे क्षात्र धर्म अनुसार निर्वाह करने का उपदेश दिया। दरअसल क्षत्रिय कर्म का निर्वाह मनुष्य के हितों की रक्षा के लिये ही किया जाता है। यह जरूर है कि चाहे कोई भी धर्म हो या कर्म अध्यात्मिक ज्ञान होने पर ही पूर्णरूपेण उसका निर्वाह किया जा सकता है। देखा जाये तो भारत और यूनान पुराने राष्ट्र माने जाते हैं। भारतीय इतिहास के अनुसार एक समय यहां के राजाओं के राज्य का विस्तार ईरान और तिब्बत तक इतना व्यापक था कि आज का भारत उनके सामने बहुत छोटा दिखाई देता है। ऐसे राजा चक्रवर्ती राजा कहलाये। यह इतिहास ही राष्ट्र के प्रति गौरव रखने का भाव अनेक लोगों में अन्य देशों के नागरिकों की राष्ट्र भक्ति दिखाने की प्रवृत्ति की अपेक्षा कम कर देता है। इसी कारण अनेक बुद्धिमान इस देश के लोगों में राष्ट्रप्रेम होने की बात कहते हैं। यह सही है कि बाद में विदेशी शासकों ने यहा आक्रमण किया और फिर उनका राज्य भी आया। मगर भारत और उसकी संस्कृति अक्षुण्ण रही। इसका अर्थ यह है कि 15 अगस्त को भारत ने केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की और कालांतर वैसे ही महत्व भी माना गया। स्वतंत्रता के बाद भारतीय अध्यात्मिक को तिरस्कृत कर पश्चिम से आये विचारों को न केवल अपनाया गया बल्कि उनको शैक्षणिक पाठ्यक्रमों से जोड़ा भी गया। हिन्दी में अनुवाद कर विदेशी विद्वानों को महान कालजयी विचारक बताया गया। इससे धीमे धीमे सांस्कृतिक विभ्रम की स्थिति बनी और अब तो यह स्थिति यह है कि अनेक नये नये विद्वान भारतीय अध्यात्मक के प्रति निरपेक्ष भाव रखना आधुनिकता समझते हैं। इसके बावजूद 80 साल के इस में इतिहास की छवि भारत के अध्यात्मिक पक्ष को विलोपित नहीं कर सकी तो इसका श्रेय उन महानुभावों को दिया जाना चाहिए जिन्होंने निष्काम से जनमानस में अपने देश के पुराने ज्ञान की धारा को प्रवाहित रखने का प्रयास किया। यही कारण है कि 15 अगस्त और 26 जनवरी को मनाने तथा भीड़ को अपने साथ बनाये रखने के लिये उनके तरह के प्रयास करने पड़ते हैं जबकि राम नवमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और महाशिवरात्रि पर स्वप्रेरणा से लोग उपस्थित हो जाते हैं। एक तरह से इतिहास और अध्यात्मिक धारायें प्रथक प्रथक हो गयी हैं जो कि होना नहीं चाहिए था। हमारे यहां स्वतंत्रता संग्राम में दौरान आज़ादी तथा देश भक्ति का नारा इस तरह लगा कि हमारे यहां पेशेवर अभियान संचालक लोगों की भीड़ को एकत्रित करने के लिये आज भी लगाते हैं। लोगों के राष्ट्रप्रेम की धारा इस तरह बह रही है कि आज भी स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस तथा गांधी जयंती पर भाव विभोर करने वाले गीत लोगों को लुभाते हैं। जब कोई आंदोलन या प्रदर्शन होता है तो उस समय मातृभूमि का नारा देकर लोगों को अपनी तरफ आकृष्ट करने के प्रयास होते हैं जिनसे प्रभावित होकर लोगों की भीड़ जुटती भी है। राष्ट्र और मातृभूमि की रक्षा के लिये सतत और गंभीर प्रयास करने होते हैं। अपने नागरिकों को ज्ञान और विज्ञान से परिपूर्ण करना होता है। उनका नेतृत्त करने वालों को न केवल शारीरिक रूप से सक्षम होना चाहिए बल्कि उनमें साहस भी होना चाहिए। समाज के नागरिक वर्ग के लोग आर्थिक रूप से उत्पादक, भेदभाव से रहित तथा सत्यमार्गी होना चाहिए।

आजादी का ऐतिहासिक महत्व

भारत का स्वतंत्रता दिवस ऐतिहासिक महत्व रखता है, क्योंकि इस दिन हम राजनीतिक तौर पर आजाद हुए और हमने लोगों के दिल और दिमाग में राष्ट्रीयता का विचार पैदा करना शुरू किया. अगर ऐसा न होता, तो लोग अपनी जाति, समुदाय व धर्म आदि के आधार पर ही सोचते रह जाते. हालांकि, भारतीय होने का यह गौरव केवल एक भौगोलिक सीमा के ऊपर खड़ा था. भारत का असली व पूरा गौरव, इसकी सीमाओं में नहीं, बल्कि इसकी संस्कृति, आध्यात्मिक मूल्यों तथा सार्वभौमिकता में है. तीन ओर से सागर तथा एक ओर से हिमालय पर्वत श्रृंखला से घिरा भारत, स्थिर जीवन का केंद्र बन कर सामने आया है. यहां के निवासी एक हजारों सालों से बिना किसी बड़े संघर्ष के रहते आ रहे हैं, जबकि बाकी संसार में ऐसा नहीं रहा. जब आप संघर्ष की सी स्थिति में जीते हैं, तो आपके लिए प्राणों की रक्षा ही जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य बना रहता है. जब लोग स्थिर समाज में जीते हैं, तो जीवन-रक्षा से परे जाने की इच्छा पैदा होती है. भारत में लंबे अरसे से, स्थिर समाजों का उदय हुआ और नतीजन आध्यात्मिक प्रक्रियाएं विकसित हुईं. आज आप अमेरिका में लोगों के बीच आध्यात्मिकता को जानने की तड़प को देख रहे हैं, उसका कारण यह है कि उनकी आर्थिक दशा पिछली तीन-चार पीढ़ियों से काफी स्थिर रही है. उसके बाद उनके भीतर कुछ और अधिक जानने की इच्छा बलवती हो रही है. भारत में आज से कुछ हजार साल पहले ऐसा ही घट चुका है. यह अविश्वसनीय जान पड़ता है कि हमने कितने रूपों में आध्यात्मिकता को अपनाया है. इनसान बुनियादी रूप से क्या है, इस मुद्दे पर इस धरती के किसी भी दूसरी संस्कृति ने उतनी गहराई से विचार नहीं किया, जैसा हमारे देश में किया गया. यही इस देश का मुख्य आकर्षण है कि हमें पता है कि मानव-तंत्र कैसे काम करता है, हम जानते हैं कि इसके साथ हम क्या कर सकते हैं या इसे इसकी चरम संभावना तक कैसे ले जा सकते हैं. हमें इसका इस्तेमाल करना चाहिए, क्योंकि महान मनुष्यों के निर्माण से ही तो महान देश की रचना हो सकती है. परंतु अब, लोगों को भौगोलिक सीमाओं में ही गौरव का अनुभव होने लगा है.

अशोक स्तंभ
हमारी सांस्कृतिक विरासत

हमारी सांस्कृतिक विरासत का ही एक अंग है, हमारा राष्ट्रीय चिह्न, जिसे हमने सम्राट अशोक की विरासत के रूप में प्राप्त किया है। सारनाथ में जहाँ गौतम बुद्ध ने सर्वप्रथम अपने ज्ञान के प्रकाश से संसार को आलोकित किया था, वहाँ सम्राट अशोक ने शिलालेख और यह चिह्न स्थापित किया था। यहीं से इस चिह्न को राष्ट्रीय के रूप में अपनाया गया। यह चिह्न सम्राट अशोक और महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं की स्मृति को तो ताजा करता ही है, वरन इस चिह्न में हमारी असीम सांस्कृतिक विरासत भी झलकती है। यद्यपि यह विवरण प्राप्त नहीं है कि सम्राट अशोक के काल में इस चिह्न का निर्माण और प्रचलन कब हुआ परंतु यह निश्चित है कि इस चिह्न का संबंध सम्राट अशोक से है और संभव है इस चिह्न का प्रचलन पहले से रहा हो। यह इस चिह्न में निहित गूढ़ अर्थों से ज्ञात होता है, जो ज्ञान की सर्वोच्च पराकाष्ठा को प्रदर्शित करते हैं। सांकेतिक भाषा में विचारों और भावनाओं को चिह्नों या चित्रों के माध्यम से प्रकट करने का इतिहास अति प्राचीन है। द इसी सांकेतिकता का उपयोग सम्राट अशोक के इस चिह्न में भी परिलक्षित होता है। सामान्य दृष्टि से इस चिह्न को देखकर यही कहा जाएगा कि सिंह, शक्ति और गौरव के प्रतीक तथा आधार पर स्थित अश्व, ऊर्जा एवं गति, वृषभ, कठिन परिश्रम एवं धैर्य तथा इन दोनों के मध्य स्थित चक्र धर्म को प्रदर्शित करता है। परंतु इस चिह्न का गूढ़ार्थ ऋग्वेद के अध्ययन से ज्ञात होता है, जिसे संसार में मानव सभ्यता का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है। इस ग्रंथ की भाषा भी सांकेतिक है। संक्षेप में यदि कहा जाए तो यह चिह्न सृष्टि की निरंतरता, जीवन और उस पर एक आधारभूत परम मौलिक ऊर्जा के नियंत्रण को प्रदर्शित करता है।

अशोक चिह्न में इसे इस प्रकार से दर्शाया गया है कि इसमें प्रदर्शित चार शेर और सामने से दृष्टिगत शेरों के चार पैर परम मौलिक ऊर्जा के चार अंशों का प्रतिनिधित्व करते हैं। किसी भी दिशा से सामने देखने पर शेरों के तीन मुँह और चार पैर ही दृष्टिगोचर होते हैं। जिससे यह तात्पर्य निकलता है कि इस मौलिक ऊर्जा के चार अंशों में से तीन अंश ऊपर उठकर आकाश में अवस्थित हैं, शेर के माध्यम से इस मौलिक ऊर्जा की अभिव्यक्ति इसे सर्वशक्तिमान प्रतिपादित करती है। अशोक चिह्न में शेरों के आधार पर स्थित पशु और चक्र, इस परम मौलिक ऊर्जा के एक अंश का प्रतीक होकर दृश्य जगत का भाग है। इसमें चिह्नित अश्व एवं गाय चैतन्य जगत का प्रतिनिधित्व करने के साथ, परम मौलिक ऊर्जा तथा प्रकृति को अभिव्यक्त करते हैं। इस ऋचा में परम मौलिक ऊर्जा से चैतन्य जगत की उत्पत्ति की ओर संकेत किया है कि उसी से अश्व तथा ऊपर और नीचे दोनों ओर दाँत वाले पशु उत्पन्न होते हैं। उसी से गायें उत्पन्न होती हैं तथा बकरी और वनस्पति भी उसी से उत्पन्न होते हैं। यहाँ अजावय- अजआवय- से तात्पर्य बकरी और वनस्पति से प्रतीत होता है। वेद में स्थूल रूप से महत्वपूर्ण पाँच पशु माने गए हैं, पुरूष, अश्व, गौ, अज ये प्रसिद्ध नाम हैं तथा अवि उस पशु प्राण का नाम हैं, जो वनस्पतियों को स्वपोषी बनाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अशोक चिह्न में चैतन्य जगत को अश्व एवं गाय के द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। इसका दूसरा महत्व एवं संकेत यह है कि वैदिक ज्ञान के अनुसार सृष्टि को प्रकृति-पुरूषात्मक अर्थात मैथुनी सृष्टि कहा गया है। अर्थात् प्रकृति के आधारभूत तत्व परम पुरूष (मौलिक ऊर्जा) से संयोग कर प्रकृति की विभिन्न शक्तियों और घटकों का निर्माण करती है और प्रकृति अस्तित्व में आती हैं। अशोक चिह्न में इस मैथुनी स्वभाव को अभिव्यक्त करने के लिए अश्व और गाय का उपयोग किया गया है। परम मौलिक ऊर्जा के ऊर्जावान गति स्वरूप को अश्व के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है, तथा चक्र के दूसरी ओर प्रकृति तथा प्रकृति की मातृवत् पोषण शक्ति को गाय के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। आधारभूत मौलिक ऊर्जा और प्रकृति का संयुक्त प्रयास यह सृष्टि है। जो भूमि चक्र के रूप में कार्य कर रही है। इस सृष्टि चक्र को चक्र के माध्यम से मध्य में उत्कीर्ण किया गया है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

आजादी कहें या स्वतंत्रता ये ऐसा शब्द है जिसमें पूरा आसमान समाया है। आजादी एक स्वाभाविक भाव है या यूँ कहें कि आजादी की चाहत मनुष्य को ही नहीं जीव-जन्तु और वनस्पतियों में भी होती है। सदियों से भारत अंग्रेजों की दासता में था, उनके अत्याचार से जन-जन त्रस्त था। खुली फिजा में सांस लेने को बेचैन भारत में आजादी का पहला बिगुल 1857 में बजा किन्तु कुछ कारणों से हम गुलामी के बंधन से मुक्त नहीं हो सके। वास्तव में आजादी का संघर्ष तब अधिक हो गया] जब बाल गंगाधर तिलक ने कहा कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

विश्व विजयी तिरंगा प्यारा..

झंडा ऊँचा रहे हमारा, विश्व विजयी तिरंगा प्यारा..

यह गीत भारत का हर बच्चा गुनगुनाता है.. बड़े ही शान से। आखिर क्या बात है इस ध्वज में जिसने आज़ादी के परवानों में एक नया जोश भर दिया था और जो आज भी हर भारतीय को अपने गरिमामय इतिहास की याद दिलाता है और विभिन्नता में एकता वाले इस देश को एक सूत्र में बाँधे हुए है। हर स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर लाल क़िले की प्राचीर पर राष्ट्रीय ध्वज को बड़े ही आदर और सम्मान के साथ फहराया जाता है। देश के प्रथम नागरिक से लेकर आम नागरिक तक इसे सलामी देता है। 21 तोपों की सलामी से सेना इसका सम्मान करती है। किसी भी देश का झंडा उस देश की पहचान होता है। तिरंगा हम भारतीयों की पहचान है। राष्ट्रीय झंडे ने पहली बार आज़ादी की घोषणा के कुछ ही दिन पहले 22 जुलाई 1947 को पहली बार अपना वो रंग रूप पाया जो आज तक कायम है। हमारा राष्ट्रीय ध्वज तीन रंगों से बना है इसलिए हम इसे तिरंगा भी कहते हैं। सबसे ऊपर केसरिया रंग फिर सफ़ेद और सबसे नीचे हरा। बीच में गहरे नीले रंग का चक्र बना है जिसमें 24 चक्र हैं जिसे हम अशोक चक्र के नाम से जानते हैं। इस प्रतीक को सारनाथ में अशोक महान के स्तंभ से लिया गया है। तिरंगे की बनावट पर हमारे देश में काफ़ी ध्यान दिया जाता है क्यों कि ये हमारे सम्मान से जुड़ा हुआ है। हर तिरंगे में अशोक चक्र श्वेत रंग के तीन चौथाई भाग में ही होना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज खादी के कपड़े का होना चाहिए। आज जो ध्वज हमारे देश की पहचान है उसे इस रूप में ढालने वाले थे पिंगली वेंकैया।

तिरंगे में इन रंगों की क्या महत्ता है ये जानना बहुत ज़रूरी है। केसरिया यानी भगवा रंग वैराग्य का रंग है। हमारे आज़ादी के दीवानों ने इस रंग को सबसे पहले अपने ध्वज में इसलिए सम्मिलित किया जिससे आने वाले दिनों में देश के नेता अपना लाभ छोड़ कर देश के विकास में खुद को समर्पित कर दें। जैसे भक्ति में साधु वैराग ले मोह माया से हट भक्ति का मार्ग अपनाते हैं। श्वेत रंग प्रकाश और शांति के प्रतीक के रूप में लिया गया। हरा रंग प्रकृति से संबंध और संपन्नता दर्शाता है, और केंद्र में स्थित अशोक चक्र धर्म के 24 नियमों की याद दिलाता है।

हमारे राष्ट्रीय ध्वज का इतिहास भी बहुत रोचक है। 20वी सदी में जब हमारा देश ब्रिटिश सरकार की गुलामी से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष कर रहा था, तब स्वतंत्रता सेनानियों को एक ध्वज की ज़रूरत महसूस हुई क्यों कि ध्वज स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति का प्रतीक रहा है। सन् 1904 में विवेकानंद की शिष्या सिस्टर निवेदिता ने पहली बार एक ध्वज बनाया जिसे बाद में सिस्टर निवेदिता ध्वज से जाना गया। यह ध्वज लाल और पीले रंग से बना था। पहली बार तीन रंग वाला ध्वज सन् 1906 में बंगाल के बँटवारे के विरोध में निकाले गए जलूस में शचीन्द्र कुमार बोस लाए। इस ध्वज में सबसे ऊपर केसरिया रंग, बीच में पीला और सबसे नीचे हरे रंग का उपयोग किया गया था। केसरिया रंग पर 8 अधखिले कमल के फूल सफ़ेद रंग में थे। नीचे हरे रंग पर एक सूर्य और चंद्रमा बना था। बीच में पीले रंग पर हिंदी में वंदेमातरम् लिखा था। सन् 1908 में सर भीकाजी कामा ने जर्मनी में तिरंगा झंडा लहराया और इस तिरंगे में सबसे ऊपर हरा रंग था, बीच में केसरिया, सबसे नीचे लाल रंग था। इस झंडे में धार्मिक एकता को दर्शाते हुए हरा रंग इस्लाम के लिए और केसरिया हिंदू और सफ़ेद ईसाई व बौद्ध दोनों धर्मों का प्रतीक था। इस ध्वज में भी देवनागरी में वंदेमातरम् लिखा था और सबसे ऊपर 8 कमल बने थे। इस ध्वज को भीकाजी कामा, वीर सावरकर और श्यामजी कृष्ण वर्मा ने मिलकर तैयार किया था। प्रथम विश्व युद्ध के समय इस ध्वज को बर्लिन कमेटी ध्वज के नाम से जाना गया क्यों कि इसे बर्लिन कमेटी में भारतीय क्रांतिकारियों द्वारा अपनाया गया था। सन् 1916 में पिंगली वेंकैया ने एक ऐसे ध्वज की कल्पना की जो सभी भारतवासियों को एक सूत्र में बाँध दे। उनकी इस पहल को एस.बी. बोमान जी और उमर सोमानी जी का साथ मिला और इन तीनों ने मिल कर नेशनल फ़्लैग मिशन का गठन किया। वेंकैया ने राष्ट्रीय ध्वज के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से सलाह ली और गांधी जी ने उन्हें इस ध्वज के बीच में अशोक चक्र रखने की सलाह दी जो संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँधने का संकेत बने। पिंगली वेंकैया लाल और हरे रंग के की पृष्ठभूमि पर अशोक चक्र बना कर लाए पर गांधी जी को यह ध्वज ऐसा नहीं लगा कि जो संपूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व कर सकता। राष्ट्रीय ध्वज में रंग को लेकर तरह-तरह के वाद विवाद चलते रहे। अखिल भारतीय संस्कृत कांग्रेस ने सन 1924 में ध्वज में केसरिया रंग और बीच में गदा डालने की सलाह इस तर्क के साथ दी कि यह हिंदुओं का प्रतीक है। फिर इसी क्रम में किसी ने गेरुआ रंग डालने का विचार इस तर्क के साथ दिया कि ये हिंदू, मुसलमान और सिख तीनों धर्म को व्यक्त करता है।

काफ़ी तर्क-वितर्क के बाद भी जब सब एकमत नहीं हो पाए तो सन् 1931 में अखिल भारतीय कांग्रेस के ध्वज को मूर्तरूप देने के लिए 7 सदस्यों की एक कमेटी बनाई गई। इसी साल कराची कांग्रेस कमेटी की बैठक में पिंगली वेंकैया द्वारा तैयार ध्वज, जिसमें केसरिया, श्वेत और हरे रंग के साथ केंद्र में अशोक चक्र स्थित था, को सहमति मिल गई। इसी ध्वज के तले आज़ादी के परवानों ने कई आंदोलन किए और 1947 में अंग्रेज़ों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। आज़ादी की घोषणा से कुछ दिन पहले फिर कांग्रेस के सामने ये प्रश्न आ खड़ा हुआ कि अब राष्ट्रीय ध्वज को क्या रूप दिया जाए इसके लिए फिर से डॉ. राजेंद्र प्रसाद के नेतृत्व में एक कमेटी बनाई गई और तीन सप्ताह बाद 14 अगस्त को इस कमेटी ने अखिल भारतीय कांग्रेस के ध्वज को ही राष्ट्रीय ध्वज के रूप में घोषित करने की सिफ़ारिश की। 15 अगस्त 1947 को तिरंगा हमारी आज़ादी और हमारे देश की आज़ादी का प्रतीक बन गया। राष्ट्रीय ध्वज हमारे देश की पहचान है इसलिए इसे हर भारतीय सम्मान दे ये तो ज़रूरी है ही कोई भी व्यक्ति इसकी गरिमा को धूमिल ना करे इसके लिए भारतीय कानून में कुछ धाराएँ बनाई गई है। फ्लैग कोड इंडिया - 2002 में राष्ट्रीय ध्वज से जुड़ी कुछ ख़ास बातों का ज़िक्र किया गया है जिसे हम भारतीयों को जानना ज़रूरी है। सन् 2002 के पहले आम जनता राष्ट्रीय दिवस को छोड़ किसी और दिन इसे किसी सार्वजनिक स्थान पर नहीं लगा सकती थी। सिर्फ़ सरकारी कार्यालयों में ही इसे लगाया जा सकता था। सन् 2002 में भारत के जाने माने उद्योगपति नवीन जिंदल ने अपने कार्यालय के ऊपर राष्ट्रीय ध्वज लगाया था जिसके लिए उन्हें सूचित किया गया कि उन्हें ऐसा करने पर कानूनी कार्यवाही से गुज़राना होगा। इसके विरोध में उन्होंने दिल्ली उच्च न्यायालय में एक जन हित याचिका इस बाबत दायर की कि भारत की आम जनता को सम्मान के साथ राष्ट्रीय ध्वज लहराने और उसे प्यार देने का नागरिक अधिकार है। यह मामला उच्च न्यायालय से उच्चतम न्यायालय में गया और न्यायालय ने भारत सरकार को इस मामले पर विचार करने के लिए एक कमेटी बिठाने की सलाह दी। अंत में भारतीय मंत्रालय ने एक संवैधानिक संशोधन कर सभी भारतवासियों को साल के 365 दिन राष्ट्रध्वज सम्मान के साथ लगाने का अधिकार दिया। इसी के साथ ध्वज के सम्मान की बात भी स्पष्ट कर दी गई कि ध्वज फहराने के समय किस आचरण संहिता का ध्यान रखा जाना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज कभी भूमि पर नहीं गिरना चाहिए और ना ही धरातल के संपर्क में आना चाहिए। सन् 2005 के पहले तक इसे वर्दियों और परिधानों में उपयोग में नहीं लाया जा सकता था, लेकिन सन 2005 में फिर एक संशोधन के साथ भारतीय नागरिकों को इसका अधिकार दिया गया।

लेकिन इसमें ध्यान रखने वाली बात ये है ये किसी भी वस्त्र पर कमर के नीचे नहीं होना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज कभी अधोवस्त्र के रूप में नहीं पहना जा सकता है।

स्वतंत्रता दिवस का महत्व

एक बार फिर स्वतंत्रता दिवस आ गया। आजादी के बाद से लगातार आ रहा है, फिर भी पहचानना पड़ता है। 15 अगस्त हमारा राष्ट्रीय पर्व है। इसका बहुत महत्व है। इसका सबसे ज्यादा महत्व फिल्मवालों के लिए है। यदि यह दिन नहीं होता तो वे देशभक्ति की बातें किस माध्यम से कहते यह विचारणीय प्रश्न है। फिल्म वालों ने इस दिन के माध्यम से इतनी देशभक्ति दिखाई है कि खुद देश की आत्मा तक कांप उठी है। मनोज कुमार का योगदान इस क्षेत्र में अतुलनीय है। उन्होंने भारत कुमार नामक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी देश को निजी तौर पर सौंपा है। सिनेमा वालों ने भी उनकी तर्ज पर क्रांतिवीर नाना पाटेकर फिल्म इंडस्ट्री को प्रदान किया है। मनोज कुमार ने आर्ट और कमर्शियल सिनेमा के बीच देशभक्ति सिनेमा की एक और समांतर रेखा भी खींची है। ये भी फिल्मी रेखा की तरह अपने जमाने में खूब चली है। कई फिल्म निर्माताओं और नायकों ने भी अपना जीवन इसी देशभक्ति के नाम पर होम किया है। वो बात अलग है कि इस होम करने की प्रक्रिया में केवल उनके होम ही बड़े बंगलों में बदले हैं। सिनेमा वालों के समान ही कैसिट कंपनी वालों के लिए भी इस दिन का महत्व है। वे इस दिन इतनी-इतनी आवाजों में इतनी-इतनी देशभक्ति पूरे देश में वितरित करते हैं कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर कान को काम मिल जाता है। देशभक्ति का एक-एक गाना तक इतनी भयानक आवाजों में पेश किया जाता है कि बेचारा गाना तक अपनी हालत को लेकर द्रवित हो जाता है, आम आदमी भी लगे हाथों इसी बहाने देश के प्रति द्रवित होने का कर्त्तव्य निपटा लेता है। तो 15 अगस्त हमारा राष्ट्रीय त्योहार है। इस दिन का बड़ा महत्व है। इस दिन का हलवाइयों में भी बेहद महत्व है। वे दुकान के लिए बूंदी के नियमित उत्पादन के अलावा अतिरिक्त उत्पादन भी करते हैं। सरप्लस उत्पादन रूटीन उपभोक्ताओं के अलावा आस-पड़ोस के स्कू लों के लिए होता है। कुछ होशियार हलवाई कई स्कूलों तक पहुंच बनाकर आर्थिक स्वतंत्रता का महत्व भी समझ जाते हैं। इस दिन का सरकार के लिए भी बेहद महत्व है। सरकार बड़े सरकारी भवनों से लेकर सारे विभागों के रोशन कर देती है। इस माध्यम से दिन की रोशनी में स्वतंत्रता दिवस ठीक से नहीं समझ सके लोगों से उम्मीद की जाती है कि वे अब रात की रोशनी में इस बारे में समझशील बनें। सरकार कई आयोजन करवाती है। फिर छुट्टी देकर देशभक्ति के अतिरिक्त महत्व से भी जनता को अवगत करवाती है। कर्मचारियों के दिलों में भी इस दिन का बड़ा महत्व है। वे इस दिन को कितना आदर देते हैं यह किसी से छिपा नहीं है। वे पूरे दिन अपनी नींद निकालते हैं। घरेलू काम निपटाते हैं। आलू-प्याज लाकर घर में भरते हैं। किराना लाकर पटकते हैं। दोपहर को टीवी पर आ रही देशभक्ति की पिक्चर के माध्यम देश के प्रति चिंतन का कार्यक्रम भी निपटा देते हैं। इस दिन बच्चों को कूटने के लिए कुछ समय भी अलग से रखा जाता है। फिर सुकून से दोस्त के घर गप्पें लड़ाने के लिए निकल जाते हैं। इस पूरे कार्य के दौरान इस दिन का महत्व उनके दिमाग में लगातार बना रहता है। यह दिन महत्वपूर्ण है ही। सबके लिए इसका अत्यंत महत्व है। इसी तरह बुजुर्गो के लिए इस दिन का अत्यधिक महत्व है। पूरा दिन वे टीवी देखने, अखबार पढ़ने और खांसने की गतिविधि को समर्पित करते हैं, जैसा कि वे रोज करते हैं। इस दिन अतिरिक्त गतिविधि के अंतर्गत खांसी के साथ गौरवशाली अतीत की जुगलबंदी पेश करते हैं। बेटा खांसी के चलते उनसे दूरी बनाता है, पोता अतीत की बीमारी से बचने के लिए उनसे कन्नी काटता है। दोनों ही मामलों में उनकी वर्तमान को कोसने की व्यस्तता बढ़ जाती है। बच्चे तक इसके महत्व से परिचित हैं। हर बच्चे को पता है कि इस दिन स्कूल केवल कुछ देर के लिए ही खुलता है। वहां मिठाई मिलती हैं। फिर स्कूल की छुट्टी हो जाती है। मांओं-पत्नियों के लिए इस दिन का अलग ही महत्व है। उनके लिए यह दिन खटने के लिए होता है। पति-बेटे बैठे-बैठे लगातार पोहे-पकौड़े की फरमाइशें करते रहते हैं। वे न तो अपना पंसदीदा सीरियल देख पाती हैं न ही पड़ोसन से गप्प लगाने का नियमित आयोजन समपन्न कर पाती हैं। इस तरह पूरे परिवार के लिए इस दिन का बड़ा महत्व है। पूरे देश के लिए ही महत्व है। सारा राष्ट्र ही इसके महत्व से पूरी तरह अवगत होता है। देश का एक-एक प्राणी तक इस बारे में अपनी जानकारियों का विस्तार करता है। इतने महत्वपूर्ण दिन के बारे में जानते-जानते मामूली सी बात जानने से चूक जाते हैं कि इस दिन हजारों शहीदों के बलिदान से हमें आजादी मिली थी।

सांस्कृतिक विरासत का अंग अशोक स्तंभ

हमारी सांस्कृतिक विरासत का ही एक अंग है, हमारा राष्ट्रीय चिह्न, जिसे हमने सम्राट अशोक की विरासत के रूप में प्राप्त किया है। सारनाथ में जहाँ गौतम बुद्ध ने सर्वप्रथम अपने ज्ञान के प्रकाश से संसार को आलोकित किया था, वहाँ सम्राट अशोक ने शिलालेख और यह चिह्न स्थापित किया था। यहीं से इस चिह्न को राष्ट्रीय के रूप में अपनाया गया। यह चिह्न सम्राट अशोक और महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं की स्मृति को तो ताजा करता ही है, वरन इस चिह्न में हमारी असीम सांस्कृतिक विरासत भी झलकती है। यद्यपि यह विवरण प्राप्त नहीं है कि सम्राट अशोक के काल में इस चिह्न का निर्माण और प्रचलन कब हुआ परंतु यह निश्चित है कि इस चिह्न का संबंध सम्राट अशोक से है और संभव है इस चिह्न का प्रचलन पहले से रहा हो। यह इस चिह्न में निहित गूढ़ अर्थों से ज्ञात होता है, जो ज्ञान की सर्वोच्च पराकाष्ठा को प्रदर्शित करते हैं।

सांकेतिक भाषा में विचारों और भावनाओं को चिह्नों या चित्रों के माध्यम से प्रकट करने का इतिहास अति प्राचीन है। द इसी सांकेतिकता का उपयोग सम्राट अशोक के इस चिह्न में भी परिलक्षित होता है। सामान्य दृष्टि से इस चिह्न को देखकर यही कहा जाएगा कि सिंह, शक्ति और गौरव के प्रतीक तथा आधार पर स्थित अश्व, ऊर्जा एवं गति, वृषभ, कठिन परिश्रम एवं धैर्य तथा इन दोनों के मध्य स्थित चक्र धर्म को प्रदर्शित करता है। परंतु इस चिह्न का गूढ़ार्थ ऋग्वेद के अध्ययन से ज्ञात होता है, जिसे संसार में मानव सभ्यता का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है। इस ग्रंथ की भाषा भी सांकेतिक है। संक्षेप में यदि कहा जाए तो यह चिह्न सृष्टि की निरंतरता, जीवन और उस पर एक आधारभूत परम मौलिक ऊर्जा के नियंत्रण को प्रदर्शित करता है।

सृष्टि निर्माण और पृथ्वी पर जीवन का कुछ उद्देश्य भी है अथवा नहीं। इस संबंध में जिज्ञासा मानव का आदि स्वभाव रहा है। आज आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी, मनुष्य इस संबंध में उतना ही जिज्ञासु है, जितना हजारों वर्ष पहले था जब वेद अस्तित्व में आए। सृष्टि निर्माण संबंधी प्रश्न ऋग्वेद के दशम मंडल में उठाए गए हैं तथा उनका युक्तियुक्त उत्तर देने का प्रयत्न ज्ञान के अनुसार किया गया है। और अंत में अपने ज्ञान की सीमाओं को स्वीकार करते हुए यह कहा गया है कि यह सृष्टि जहाँ से उत्पन्न हुई, अथवा इसका कोई आधार है या नहीं, यह सब कुछ वही जानता है जो व्योम में सर्वत्र व्याप्त है अथवा हो सकता है वह भी न जानता हो। (ऋ10-129-7) अर्थात् यहाँ जब स्पष्ट किया जा रहा है कि जितना ज्ञान हमें प्राप्त है, उनके अनुसार हमने सृष्टि के निर्माण का वर्णन किया है।

सृष्टि निर्माण प्रक्रिया का वर्णन नारदीय सूक्तों में मिलता है। प्राचीन मत में जगत की सृष्टि एक प्राकृतिक उत्पत्ति मानी गई हैं। सृष्टि निर्माण प्रकृति की जिन शक्तियों के द्वारा होता है, उन्हें देव तुल्य मानकर यह बताया गया कि समस्त देवताओं ने मिलकर जगत की उत्पत्ति की। नारदीय सूक्तों में ज्ञान वृद्धि के साथ जगत की उत्पत्ति को आधारभूत परम मौलिक ऊर्जा से क्रमशः विकसित बताते हुए प्रकृति की शक्तियों को इसमें कारण और सहायक माना है। इसी आधारभूत परम मौलिक ऊर्जा को परम पुरुष, विश्वकर्मा, प्रजापति तथा हिरण्यगर्भ नाम दिए गए। इसे ही उपनिषदों में परब्रह्म या विश्वात्मा कहा गया है।

पुरुष सूक्त में आधारभूत परम मौलिक ऊर्जा को परम पुरुष की संज्ञा देते हुए इसे सहस्त्र शीर्षा पुरुषः (10-90-1) अर्थात् इसे हजारों सिर, हजारों आँखें और हजारों पाँवोंवाला बताकर यह संकेत दिया गया है कि वह सर्वत्र उपस्थित है। इसी श्लोक में आगे कहा गया कि वह समस्त भूत जात प्रकृति को आच्छादित करके मनुष्य शरीर के दस अंगुलवाले स्थान अर्थात हृदय गुहा में स्थित है। यह पुरुष ही जगत है, जो पहले था और भविष्य में होगा। (ऋ10-90-2क)। इस पुरुष का एक चौथाई भाग दृश्य जगत-मृत्यु लोक के प्राणी हैं और उसका तीन चौथाई भाग अदृश्य स्वर्गवासी अमरों का लोक हैं (10-90-3 स)। अर्थात् जो सृष्टि हमें दिखाई दे रही है, वह उसका चतुर्थांश है, और तीन चतुर्थांश भाग अदृश्य जगत का भाग होकर समस्त भूत जात प्रकृति को घेरे हुए हैं। इसी परम पुरुष से ब्रह्माण्ड आदि की उत्पत्ति बताते हुए यह प्रतिपादित किया गया कि प्रकृति की दिव्य शक्तियाँ, पुरुष द्वारा प्रदत जगत रचना सामग्री द्वारा सृष्टि यज्ञ को विस्तारित करती हैं। अर्थात् सृष्टि में जो भी निरंतर क्रियाएँ और प्रतिक्रियाएँ हो रही हैं, उन्हें सृष्टि यज्ञ द्वारा प्रतिपादित किया गया है। इस प्रकार उसे आधारभूत परम मौलिक ऊर्जा से ब्रह्मांड और सृष्टि के विभिन्न घटकों की उत्पत्ति उस पुरुष के विभिन्न अंगों से बताते हुए। मनुष्य शरीर और ब्रह्मांड में समानता दिखाई गई है।

अशोक चिह्न में इसे इस प्रकार से दर्शाया गया है कि इसमें प्रदर्शित चार शेर और सामने से दृष्टिगत शेरों के चार पैर परम मौलिक ऊर्जा के चार अंशों का प्रतिनिधित्व करते हैं। किसी भी दिशा से सामने देखने पर शेरों के तीन मुँह और चार पैर ही दृष्टिगोचर होते हैं। जिससे यह तात्पर्य निकलता है कि इस मौलिक ऊर्जा के चार अंशों में से तीन अंश ऊपर उठकर आकाश में अवस्थित हैं, शेर के माध्यम से इस मौलिक ऊर्जा की अभिव्यक्ति इसे सर्वशक्तिमान प्रतिपादित करती है। अशोक चिह्न में शेरों के आधार पर स्थित पशु और चक्र, इस परम मौलिक ऊर्जा के एक अंश का प्रतीक होकर दृश्य जगत का भाग है। इसमें चिह्नित अश्व एवं गाय चैतन्य जगत का प्रतिनिधित्व करने के साथ, परम मौलिक ऊर्जा तथा प्रकृति को अभिव्यक्त करते हैं। इस ऋचा में परम मौलिक ऊर्जा से चैतन्य जगत की उत्पत्ति की ओर संकेत किया है कि उसी से अश्व तथा ऊपर और नीचे दोनों ओर दाँत वाले पशु उत्पन्न होते हैं। उसी से गायें उत्पन्न होती हैं तथा बकरी और वनस्पति भी उसी से उत्पन्न होते हैं। यहाँ अजावयः अजआवयः से तात्पर्य बकरी और वनस्पति से प्रतीत होता है। वेद में स्थूल रूप से महत्वपूर्ण पाँच पशु माने गए हैं, पुरुष, अश्व, गौ, अज ये प्रसिद्ध नाम हैं तथा अवि उस पशु प्राण का नाम हैं, जो वनस्पतियों को स्वपोषी बनाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अशोक चिह्न में चैतन्य जगत को अश्व एवं गाय के द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। इसका दूसरा महत्व एवं संकेत यह है कि वैदिक ज्ञान के अनुसार सृष्टि को प्रकृति-पुरुषात्मक अर्थात मैथुनी सृष्टि कहा गया है। अर्थात् प्रकृति के आधारभूत तत्व परम पुरुष (मौलिक ऊर्जा) से संयोग कर प्रकृति की विभिन्न शक्तियों और घटकों का निर्माण करती है और प्रकृति अस्तित्व में आती हैं। अशोक चिह्न में इस मैथुनी स्वभाव को अभिव्यक्त करने के लिए अश्व और गाय का उपयोग किया गया है। परम मौलिक ऊर्जा के ऊर्जावान गति स्वरूप को अश्व के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है, तथा चक्र के दूसरी ओर प्रकृति तथा प्रकृति की मातृवत् पोषण शक्ति को गाय के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। आधारभूत मौलिक ऊर्जा और प्रकृति का संयुक्त प्रयास यह सृष्टि है। जो भूमि चक्र के रूप में कार्य कर रही है। इस सृष्टि चक्र को चक्र के माध्यम से मध्य में उत्कीर्ण किया गया है।

हाइड्रोलिक सिस्टम फेल होने की वजह से 4 सेकंड तक बेकाबू रहा विमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। फुकेट से दिल्ली आ रही एयर इंडिया की फ्लाइट में 4 अगस्त को 20 से ज्यादा यात्रियों के लिए सफर खौफनाक बन गया। उड़ान के दौरान एयरबस ए-320 अचानक करीब 300 फीट नीचे गिर गया, जिससे विमान में अफरा-तफरी मच गई। कई यात्री और क्रू मेंबर्स झटके के कारण सीटों से उछलकर विमान की छत से जा टकराए। हादसे में 24 लोगों के घायल होने की जानकारी सामने आई है। अब शुरुआती तकनीकी जांच में हादसे को लेकर बड़ा खुलासा हुआ है। जांच के मुताबिक विमान करीब 4 सेकंड तक पूरी तरह नियंत्रण से बाहर हो गया था। इस दौरान विमान के तीनों हाइड्रोलिक सिस्टम में एक साथ खराबी आ गई। हाइड्रोलिक पावर प्रभावित होने के कारण एलिवेटर्स और एलरोन्स ने काम करना बंद कर दिया। एलिवेटर्स विमान को ऊपर-नीचे नियंत्रित करते हैं, जबकि एलरोन्स उसकी दिशा बदलने में मदद करते हैं। इसी दौरान ऑटोपायलट भी बंद हो गया और कॉकपिट में 'स्टॉल' की चेतावनी बजने लगी। स्थिति बिगड़ती देख को-पायलट ने तय प्रक्रिया के तहत कंट्रोल स्टिक को आगे की ओर झुकाया, ताकि विमान को नीचे लाकर नियंत्रण हासिल किया जा सके। लेकिन हाइड्रोलिक सिस्टम में दबाव नहीं होने के कारण विमान ने तत्काल प्रतिक्रिया नहीं दी। कुछ सेकंड बाद जब तीनों हाइड्रोलिक सिस्टम दोबारा सक्रिय हुए तो विमान तेजी से नीचे की ओर जाने लगा। इसी दौरान यात्री और क्रू सदस्य छत से टकरा गए। प्रारंभिक जांच में हाइड्रोलिक प्रेशर स्विच में खराबी की आशंका जताई गई है। हालांकि हादसे के अंतिम कारण की अभी पुष्टि नहीं हुई है। भारतीय जांच एजेंसी के साथ एयरबस और फ्रांस की विमान दुर्घटना जांच एजेंसी के विशेषज्ञ भी मामले की जांच कर रहे हैं। इस हादसे के बीच पायलट को लेकर भी गंभीर सवाल उठे हैं। जांच में उसके शरीर में गांजे के सेवन के संकेत मिलने की बात सामने आई है। पायलट ने अपना पक्ष रखते हुए कहा कि वह लंबे समय से नींद की समस्या से जूझ रहा है और पारिवारिक डॉक्टर की सलाह पर नींद की दवा लेता है। घटना के समय पायलट अपनी सीट पर मौजूद नहीं था और को-पायलट विमान उड़ा रहा था। बताया गया है कि पायलट यात्रियों की स्थिति देखने के लिए केबिन में गया था। लैंडिंग के बाद भी उसकी हालत ठीक नहीं थी और उसे सहारे की जरूरत पड़ी। जांच में यह बात भी सामने आई है कि उड़ान के दौरान पायलट के वॉशरूम जाने पर एक अटेंडेंट कुछ समय के लिए उसकी सीट पर बैठा था। पूरे मामले की विस्तृत जांच के बाद ही हादसे की असली वजह और जिम्मेदारी स्पष्ट हो सकेगी।

सोनमर्ग में बादल फटने से भारी तबाही, सड़क मार्ग बंद, रेस्क्यू टीमें तैनात

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के सोनमर्ग के रंगा मोड इलाके में गुरुवार को बादल फटने से भारी तबाही हुई। बाढ़ के कारण भूस्खलन-कीचड़ से सड़क मार्ग बुरी तरह प्रभावित हुआ। नदियों के जलस्तर में अचानक भारी बढ़ोतरी दर्ज की गई। प्रशासन ने स्थानीय लोगों को नदी के किनारों और जल स्रोतों के पास न जाने की सलाह दी गई है। सोनमर्ग में भारी बारिश के बीच श्रीनगर और लेह राजमार्ग प्रभावित हुआ है। एहतियात के तौर पर प्रशासन ने हाईवे को बंद कर दिया है। गनीमत रही कि इस घटना में किसी तरह के जानमाल का नुकसान नहीं हुआ है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक घटना की सूचना मिलते ही रेस्क्यू टीमों को तैनात कर दिया गया है। सड़क को साफ करने और जल्द से जल्द यातायात बहाल करने के लिए बॉर्डर रोड्स ऑर्गनाइजेशन के कर्मियों और मशीनों को तुरंत मौके पर भेजा गया है। स्थानीय प्रशासन स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए है और यात्रियों और चालकों को प्रभावित क्षेत्र से गुजरते समय अत्यधिक सावधानी बरतने की सलाह दी है। बता दें यह घटना घाटी में पिछले कुछ दिनों से जारी खराब मौसम के बीच आई है। इससे लगभग 10 दिन पहले 3 अगस्त को भी घाटी में कई जगहों पर बादल फटने से अचानक बाढ़ आ गई थी, जिसके चलते सैकड़ों लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया था।

राहुल की याचिका पर सुनवाई 17 को

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी ने आय से अधिक संपत्ति के आरोपों से जुड़े मामले में सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है। उन्होंने इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश को चुनौती दी है। सुप्रीम कोर्ट 17 अगस्त को याचिका पर सुनवाई कर सकता है। याचिका में हाईकोर्ट के उस आदेश पर सवाल उठाए गए हैं, जिसमें मामले की जांच से जुड़े सीबीआई के जवाब पर असंतोष जताया गया था। हाईकोर्ट ने 20 जुलाई को सीबीआई के जवाब पर असंतोष जताते हुए वरिष्ठ अधिकारी से नया हलफनामा मांगा था।

चंबा और नासिक में भूकंप के झटके, सुबह-सुबह कांपी धरती

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के चंबा और महाराष्ट्र के नासिक में शुक्रवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए। दोनों राज्यों में आए भूकंप की तीव्रता कम रही, जिससे किसी बड़े नुकसान की सूचना नहीं है। हालांकि, अचानक धरती हिलने से लोगों में दहशत का माहौल बन गया। नासिक में कुछ घंटों के अंतराल में दो बार भूकंप के झटके महसूस किए गए, जबकि चंबा में सुबह के समय धरती कांपी। भले झटके हल्के थे लेकन लोग डर गए और घरों से बाहर निकल पड़े। हिमाचल प्रदेश के चंबा में शुक्रवार सुबह करीब 6:30 बजे भूकंप आया। इसकी तीव्रता 3.0 मापी गई। भूकंप का केंद्र चंबा में जमीन से करीब 5 किलोमीटर नीचे बताया गया है। इसका केंद्र 33.131 अक्षांश और 76.585 देशांतर पर दर्ज किया गया। कम तीव्रता के कारण फिलहाल किसी तरह के जान-माल के नुकसान की जानकारी सामने नहीं आई है। वहीं, महाराष्ट्र के नासिक जिले में शुक्रवार को कुछ घंटों के अंतराल में दो बार भूकंप के झटके महसूस किए गए। पहला झटका रात 12:05 बजे आया, जिसकी तीव्रता 3.5 थी। इसके बाद सुबह 5:32 बजे 3.4 तीव्रता का दूसरा भूकंप दर्ज किया गया। झटके महसूस होने के बाद कुछ इलाकों में लोग घबराकर घरों से बाहर निकल आए। हालांकि, दोनों घटनाओं में किसी बड़े नुकसान की सूचना नहीं है। इससे पहले महाराष्ट्र के पालघर जिले में भी हाल के दिनों में भूकंप के झटके महसूस किए गए थे।

वांगचुक बोले- ऐसे तो 2047 तक विकसित देश नहीं बन पाएगा भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक ने भारत की प्रति व्यक्ति आय और देश की मौजूदा व्यवस्था का हवाला देते हुए कहा है कि अगर हालात इसी तरह बने रहे तो भारत 2047 तक विकसित देश नहीं बन पाएगा। उन्होंने कहा कि पिछले 50 वर्षों में भारत से पीछे या उसके बराबर रहे कई देश आर्थिक और सामाजिक विकास के मामले में आगे निकल गए हैं। श्रीलंका, बांग्लादेश, थाईलैंड, मलेशिया और इंडोनेशिया का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि भारत को वैश्विक स्तर पर सम्मानजनक स्थान बनाए रखने के लिए बड़े बदलाव जरूरी हैं।

गुरुवार देर रात जारी एक वीडियो संदेश में वांगचुक ने कहा कि पिछले कुछ दिनों से उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। इस दौरान उन्होंने देश और उसके भविष्य को लेकर काफी विचार किया। उन्होंने कहा कि देश की शासन व्यवस्था से जुड़ी समस्याओं को किसी एक राजनीतिक दल तक सीमित नहीं किया जा सकता। अलग-अलग दलों की सरकारों के दौरान भी विरोध की आवाजों को दबाने की शिकायतें सामने आती रही हैं।

वांगचुक ने 2012-13 के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन का जिक्र करते हुए कहा कि इसके बाद राजनीतिक बदलाव जरूर हुआ, लेकिन सरकार बदलने के बावजूद भ्रष्टाचार और अन्याय जैसी समस्याएं खत्म नहीं हुईं। उनके मुताबिक अब ये समस्याएं नए रूप में और ज्यादा गंभीर हो गई हैं। उन्होंने देश में नेतृत्व चुनने की प्रक्रिया में बदलाव की जरूरत बताते हुए शांतिपूर्ण क्रांति का आह्वान किया। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे अपने क्षेत्र और देश में ऐसे निस्वार्थ, निडर, चरित्रवान और सक्षम लोगों की पहचान करें, जो देश को नई दिशा दे सकें। वांगचुक ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक ऐसे व्यक्ति का नाम सुझाए। उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों से मिलना उनके लिए स्वतंत्रता दिवस का तोहफा होगा और वे देश का नया भविष्य तैयार करने में उनकी भूमिका देखना चाहते हैं।

शिक्षा व्यवस्था को लेकर भी वांगचुक ने चिंता जताई। उन्होंने कहा कि शिक्षा मंत्री के इस्तीफे के बाद भी उन्हें नए नेतृत्व से बड़े बदलाव की उम्मीद नहीं है। देश की प्रगति सीधे तौर पर शिक्षा व्यवस्था से जुड़ी है और जब तक शिक्षा पीछे रहेगी, देश का भविष्य भी प्रभावित होगा। वांगचुक ने 28 जून को दिल्ली के जंतर-मंतर पर नीट-यूजी पेपर लीक और परीक्षा व्यवस्था में गड़बड़ियों के खिलाफ अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल शुरू की थी। तबीयत बिगड़ने पर 18 जुलाई को उन्हें अस्पताल ले जाया गया था। बाद में इलाज के लिए दूसरे अस्पताल में भर्ती कराया गया। सरकार के आश्वासन के बाद उन्होंने 24 जुलाई को भूख हड़ताल समाप्त कर दी थी।

पीएम मोदी ने देश के विभाजन का दर्द झेलने वालों को याद कर किया नमन

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम नरेन्द्र मोदी ने 14 अगस्त 1947 में हुए देश के विभाजन के पीड़ितों को शुक्रवार को याद किया। केंद्र सरकार देश के विभाजन के बाद हुए दंगों और बड़े पैमाने पर लोगों के विस्थापन के दौरान जान गंवाने वालों की स्मृति में 2021 से 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के रूप में मना रही है। पीएम मोदी ने एक्स पर कहा कि आज हम 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' मना रहे हैं। हम विभाजन से प्रभावित सभी लोगों के साहस को याद करते हैं। यह इतिहास का एक ऐसा क्षण था, जिसने कई जिंदगियां तबाह कर दीं। कई परिवार उजड़ गए, कई लोगों को अपनों को खोना पड़ा और लोगों ने अत्यधिक पीड़ा झेली। पीएम मोदी ने कहा कि इस उथल-पुथल के बावजूद लोगों ने शून्य से अपना जीवन फिर खड़ा किया, विपरीत परिस्थितियों को उपलब्धियों में बदला और राष्ट्र की प्रगति में योगदान दिया। उन्होंने कहा कि इन लोगों का जीवन सभी को मानवीय जिजीविषा की शक्ति की याद दिलाता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक पीएम ने कहा कि यह दिन हमारे देश में सद्भाव और भाईचारा बनाए रखने और 'विकसित भारत' के निर्माण की दिशा में सामूहिक रूप से काम करने के हमारे संकल्प को और मजबूत करे। उन्होंने कहा कि आइए, हम सद्भावना और एकता की राष्ट्रीय भावना को और सुदृढ़ करें। भारत शनिवार को अपना स्वतंत्रता दिवस मनाएगा।

भारत को बड़ी कामयाबी: यूएई से आएगा ड्रग सरगना वीरेंद्र बसोया

-केंद्रीय मंत्री शाह ने कहा.... कोई नहीं बचेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने मादक पदार्थ तस्करी के खिलाफ अपनी लड़ाई में एक बड़ी कामयाबी पाई है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने घोषणा की कि नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) अंतरराष्ट्रीय ड्रग सरगना और भगौड़े आरोपी वीरेंद्र सिंह बसोया को संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) से भारत लाएगी। यह इस साल दूसरी बड़ी सफलता है, इसके पहले अप्रैल में दाऊद इब्राहिम के करीबी सलीम डोला को तुर्की से गिरफ्तार कर भारत प्रत्यर्पित किया गया था। डोला करीब 5000 करोड़ के अंतरराष्ट्रीय ड्रग नेटवर्क का हिस्सा था।

केंद्रीय मंत्री शाह ने पोस्ट कर कहा कि कोई भी ड्रग तस्कर भारतीय कानून के लंबे हाथों से बच नहीं पाएगा, चाहे वह कहीं भी छिप जाएं। उन्होंने कामयाबी को नशीले पदार्थों को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करने की नीति में एक नया मील का पत्थर बताया। केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार विदेशों में छिपे मादक पदार्थ तस्करों का लगातार पता लगा रही है और उनके पूरे नेटवर्क को खत्म करने का काम कर रही है। जांच एजेंसियों द्वारा अपनाई गई टॉप-टू-बॉटम और बॉटम-टू-टॉप रणनीति ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि इसतरह के अपराधी कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं।

मोदी सरकार ने जून 2026 में ड्रग कंट्रोल पर विजन डॉक्यूमेंट (2026-2029) और एनसीबी की वार्षिक रिपोर्ट जारी की थी, जिसमें प्रवर्तन, खुफिया, रोकथाम और पुनर्वास के लिए 40 से अधिक मंत्रालयों और विभागों को शामिल कर राष्ट्रीय योजना भी शामिल है। इतनी ही नहीं केंद्र सरकार नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस (एनडीपीएस) एक्ट में कमियों की भी समीक्षा कर रही है, साथ ही उन रसायनों के वर्गीकरण की भी समीक्षा की जा रही है जिनका उपयोग ड्रग्स बनाने में किया जाता है, ताकि ड्रग्स के खिलाफ कानूनी लड़ाई को और मजबूत किया जा सके।

हल्द्वानी में मंच शुद्धिकरण पर मचा सियासी घमासान

राहुल गांधी ने भाजपा-आरएसएस पर साधा निशाना

नई दिल्ली (एजेंसी)। हल्द्वानी में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के भाषण के बाद मंच के कथित शुद्धिकरण को लेकर सियासी विवाद तेज हो गया है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने इस घटना को लेकर भाजपा और आरएसएस पर मनुवादी सोच को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि ऐसी मानसिकता में व्यक्ति की हैसियत उसके जन्म से तय की जाती है, जबकि देश का संविधान समानता और इंसानियत की बात करता है। कांग्रेस ने भी मामले के विरोध में 14 अगस्त को देशभर के जिला मुख्यालयों पर मार्च और सत्याग्रह का ऐलान किया है।

राहुल गांधी ने गुरुवार को सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि यह सोच आज भी समाज में मौजूद है और इंसान की पहचान उसके जन्म के आधार पर तय करने की कोशिश करती है। उन्होंने मंच के शुद्धिकरण की घटना को इसी मानसिकता से जोड़ते हुए भाजपा और आरएसएस पर निशाना साधा। इससे पहले खड़गे ने राज्यसभा में हल्द्वानी की घटना का मुद्दा उठाया था। उन्होंने कहा कि 8 अगस्त को रामलीला मैदान में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने बड़ी संख्या में मौजूद लोगों को संबोधित किया था। उनके मुताबिक, भाषण के दौरान उन्होंने किसी जाति या धर्म का नाम नहीं लिया और केवल लोगों की समस्याओं को सामने रखा। खड़गे का आरोप है कि उनके भाषण के बाद कुछ लोगों ने हवन कर मंच का शुद्धिकरण किया। खड़गे ने कहा कि वे अनुसूचित जाति से आते हैं और लंबे समय से सार्वजनिक जीवन में हैं, लेकिन कभी किसी के सामने अपने सम्मान या सुरक्षा के लिए नहीं झुके। उन्होंने मंच का शुद्धिकरण करने वालों के खिलाफ कानून के तहत कार्रवाई और गिरफ्तारी की मांग की।

केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने घटना को दुखद बताया। उन्होंने कहा कि अगर खड़गे की भावनाएं आहत हुई हैं तो यह केवल कांग्रेस ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए चिंता की बात है। उन्होंने कहा कि ऐसी किसी गतिविधि का समर्थन नहीं किया जाता और मामले की जांच के बाद दोषी पाए जाने वालों पर कार्रवाई की जाएगी। साथ ही उन्होंने इस मुद्दे का राजनीतिकरण नहीं करने की अपील की। मल्लिकार्जुन खड़गे कांग्रेस के बाबू जगजीवन राम के बाद दूसरे दलित अध्यक्ष हैं। वे कर्नाटक से अपने राजनीतिक सफर की शुरुआत करने के बाद कई बार विधायक रहे। इसके बाद लोकसभा और राज्यसभा में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभालीं। 2022 में वे कांग्रेस अध्यक्ष चुने गए।

स्वतंत्रता दिवस : पुलिस और फायर कर्मियों को 1057 वीरता एवं सेवा पदक

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई दिल्ली (ईएमएस)। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर केंद्र सरकार ने पुलिस, अग्निशमन सेवा, होमगार्ड, नागरिक सुरक्षा और सुधारात्मक सेवा के कुल 1,057 कर्मियों को उनके असाधारण साहस और विशिष्ट सेवाओं के लिए विभिन्न पदकों से सम्मानित करने की घोषणा की है। यह सम्मान देश की सेवा में उनके समर्पण और बलिदान को रेखांकित करता है। इन कुल पदकों में से 301 वीरता पदक हैं, जो जीवन की रक्षा, अपराध रोकने या अपराधियों को गिरफ्तार करने के दौरान दिखाए गए अदम्य साहस के लिए प्रदान होते हैं। इसमें से 197 पदक वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में तैनात कर्मियों को, 51 जम्मू-कश्मीर क्षेत्र से और 12 पूर्वोत्तर क्षेत्र से संबंधित हैं। इन वीरता पदकों में 272 पुलिसकर्मी और 29 अग्निशमन सेवा कर्मी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, 92 कर्मियों को विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पदक (पीएसएम) प्रदान किया जाएगा। यह पदक सेवा में उनके उत्कृष्ट और विशिष्ट रिकॉर्ड के लिए मिलता है। इसमें 83 पुलिसकर्मी, चार अग्निशमन सेवा, तीन नागरिक सुरक्षा एवं होमगार्ड और दो सुधारात्मक सेवा के अधिकारी शामिल हैं। वहीं, 664 कर्मियों को सराहनीय सेवा पदक (एमएसएम) से नवाजा जाएगा, जो कर्तव्य के प्रति समर्पण और सूझबूझ से की गई बहुमूल्य सेवा को दर्शाता है। इन पदकों में 606 पुलिसकर्मी, 28 अग्निशमन सेवा कर्मी, 18 नागरिक सुरक्षा एवं होमगार्ड और 12 सुधारात्मक सेवा के अधिकारी शामिल हैं। यह घोषणा देश की आंतरिक सुरक्षा और आपातकालीन सेवाओं को मजबूत करने वाले इन कर्मियों के प्रति राष्ट्र के सम्मान को व्यक्त करती है।

सांसद मिश्रा के सौरव दास ने पूछा- 14 करोड़ कहां उड़ा दिए?

-आईआईटी मद्रास निदेशक वी. कामकोटी के समर्थन में 38 देशों के वैज्ञानिकों समेत 14 हजार से अधिक लोगों के हस्ताक्षर का दावा

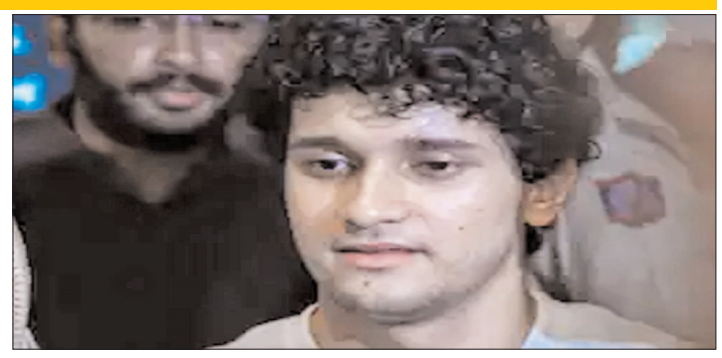

नई दिल्ली (एजेंसी)। बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआई) के अध्यक्ष और भाजपा के राज्यसभा सांसद मनन कुमार मिश्रा को लेकर कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) ने शुक्रवार को तीखा हमला बोला। सीजेपी प्रवक्ता सौरव दास ने आरोप लगाया कि बीसीआई ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में बैठकों और गतिविधियों पर करीब 14.22 करोड़ रुपये खर्च किए, जबकि यात्रा और आवास पर भी बड़ी रकम खर्च हुई। उन्होंने सवाल उठाया कि संस्था का पैसा किस तरह और किन मदों में खर्च किया जा रहा है।

विवाद की शुरुआत बीसीआई के उस आदेश से हुई, जिसमें हैदराबाद स्थित नालसर यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ के 2026 बैच के छात्रों के अधिवक्ता के रूप में नामांकन पर रोक लगा दी गई थी। आदेश के मुताबिक कुछ छात्रों ने विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत को मुख्य अतिथि बनाए जाने का विरोध किया था। बीसीआई ने विश्वविद्यालय से तीन दिन के भीतर रिपोर्ट और संबंधित छात्रों के नाम मांगे थे। आदेश में कहा गया था कि सर्वोच्च न्यायिक पद का सम्मान नहीं करने वाले छात्र जिम्मेदार अधिवक्ता नहीं बन सकते। इस कार्रवाई की आलोचना करते हुए सौरव दास ने इसे अनुचित और दमनकारी बताया। उन्होंने आदेश वापस नहीं लेने पर बीसीआई कार्यालय और मनन कुमार मिश्रा के आवास के बाहर प्रदर्शन की चेतावनी दी। सीजेपी संस्थापक अभिजीत दीपके ने भी मिश्रा के लंबे कार्यकाल और उनकी भूमिका पर सवाल उठाए।

हालांकि आदेश जारी होने के कुछ ही घंटों बाद बीसीआई ने अपना रुख बदल दिया। पहले स्पष्ट किया गया कि अधिकांश छात्रों की कोई गलती नहीं है और उन्हें नामांकन की अनुमति दी जाएगी। बाद में मनन कुमार मिश्रा ने घोषणा की कि 2026 बैच के छात्रों के खिलाफ पूरी कार्रवाई बंद कर दी गई है। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ अधिवक्ताओं, बार सदस्यों और छात्रों की प्रतिक्रियाओं के बाद बीसीआई इस निष्कर्ष पर पहुंची कि छात्रों की किसी गड़बड़ी में भूमिका नहीं थी।

इसके बाद सीजेपी ने बीसीआई के खर्चों को मुद्दा बनाया। सौरव दास ने बीसीआई के आधिकारिक ऑडिटेड आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा कि 2024-25 में गतिविधियों और बैठकों पर करीब 14.22 करोड़ रुपये खर्च हुए, जबकि संस्था की कुल आय लगभग 234 करोड़ रुपये थी। उन्होंने सवाल उठाया कि लंबे समय से बीसीआई का नेतृत्व कर रहे मिश्रा ने युवा वकीलों और लॉ स्कूलों के कल्याण के लिए क्या किया। छात्रों पर कार्रवाई वापस लिए जाने को सीजेपी ने अपनी बड़ी जीत बताया है। हालांकि पार्टी ने अब भी मिश्रा की जवाबदेही और इस्तीफे की मांग को लेकर दबाव बनाए रखने का संकेत दिया है।

मंड विवाद को लेकर प्रदर्शन, पुलिस ने किया बल प्रयोग दागे आंसू गैस के गोले

-पुलिसकर्मियों समेत प्रदर्शनकारी घायल, मंड पर एफआईआर दर्ज करने की मांग

अंबाला (एजेंसी)। अंबाला एनएच-44 पर गुरसिमरन सिंह मंड विवाद को लेकर शुरू हुआ प्रदर्शन देर रात तक जारी रहा। मंड और उनके बेटे के खिलाफ एफआईआर दर्ज होने के बाद भी प्रदर्शनकारी गिरफ्तार किए गए तीन युवकों की रिहाई की मांग पर अड़े रहे। दोपहर करीब 2 बजे से रात 9 बजे तक एनएच-44 पर यातायात बाधित रहा। पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच सहमति नहीं बनने के बाद आखिरकार पुलिस को बल प्रयोग करना पड़ा।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अंबाला के पंजोखरा साहिब में गुरसिमरन सिंह मंड विवाद को लेकर सिख समाज का प्रदर्शन कई घंटे तक जारी रहा। प्रदर्शनकारियों की मुख्य मांग थी कि मामले में गिरफ्तार किए गए तीन युवकों को रिहा किया जाए और गुरसिमरन सिंह मंड और उनके बेटे के खिलाफ एफआईआर दर्ज की जाए। प्रदर्शन के बीच पुलिस ने मंड और उनके बेटे के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर दी, लेकिन प्रदर्शनकारी तीनों गिरफ्तार युवकों की रिहाई पर अड़े रहे। वहीं पुलिस की ओर से युवकों की जमानत करवाने की बात कही जाती रही, लेकिन दोनों पक्षों के बीच सहमति नहीं बनी। इसके चलते दोपहर करीब 2 बजे से रात 9 बजे तक दिल्ली-अमृतसर नेशनल हाईवे-44 पर यातायात प्रभावित हुआ। रिपोर्ट के मुताबिक कई घंटे तक हाईवे बंद रहने के बाद पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हटाने के लिए फोर्स का इस्तेमाल किया। पुलिस ने आंसू गैस के गोले दागकर प्रदर्शनकारियों को हाईवे से खदेड़ा और इसके बाद एनएच-44 पर यातायात सुचारू करवाया गया। इस कार्रवाई में कुछ पुलिसकर्मियों के घायल होने की भी जानकारी सामने आई, जबकि प्रदर्शनकारियों को भी चोटें आई हैं। फिलहाल पुलिस की कार्रवाई के बाद हाईवे पर स्थिति को नियंत्रित किया गया है। बता दें दोपहर बाद अंबाला के पंजोखरा को जाने वाले रास्ते में पड़ते एनसीसी स्कूल के बाहर ही पुलिस ने सिख प्रदर्शनकारियों को रोक लिया था, जहां तनाव बढ़ते ही पुलिस ने आंसू गैस के गोले दागे। स्कूल की छुट्टी के समय हुई इस कार्रवाई के कारण बच्चे स्कूल के अंदर फंस गए। परिजनों में अफरा-तफरी मच गई थी। सिख समाज के प्रतिनिधि गिरफ्तार युवाओं की रिहाई और गुरसिमरन सिंह मंड के खिलाफ एफआईआर की मांग कर रहा है। फिलहाल पंजोखरा साहिब से लेकर एनएच-44 तक तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई है। पुलिस प्रशासन की ओर से स्थिति को नियंत्रित करने के प्रयास जारी हैं। बता दें हरियाणा के अंबाला स्थित ऐतिहासिक गुरुद्वारा पंजोखरा साहिब में श्री गुरु हरकिशन साहिब के प्रकाश पर्व के अवसर पर 7 अगस्त को माथा टेकने पहुंचे ऑल इंडिया कीर्तन फैडरेशन के नेशनल प्रेसिडेंट गुरसिमरन सिंह मंड की गाड़ी पर हमला किया गया था।

बांग्लादेश का चीन प्रेम: भारत के लिए संकट पैदा करने वाला , भू-राजनीतिक विशेषज्ञ ने चेताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भू-राजनीतिक विशेषज्ञ ब्रह्मा चेलानी ने बांग्लादेश की विदेश नीति में चीन के बढ़ते प्रभाव पर चिंता जाहिर की है। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश अब चीन के करीब जाता दिख रहा है, जिससे भारत के लिए नई चुनौतियां खड़ी हो सकती हैं। चेलानी के अनुसार, प्रधानमंत्री तारिक रहमान ने पद संभालने के बाद भारत के बजाय चीन और मलेशिया को अपनी पहली विदेशी यात्राओं के लिए चुना, जो बांग्लादेश की विदेश नीति में बदलाव का स्पष्ट संकेत है। चेलानी ने याद दिलाया कि फरवरी में रहमान के प्रधानमंत्री बनने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उन्हें बधाई देने वाले शुरुआती नेताओं में थे और उन्होंने रहमान को नई दिल्ली की राजकीय यात्रा का औपचारिक निमंत्रण भी दिया था। हालांकि, रहमान ने यह निमंत्रण स्वीकार नहीं किया। चेलानी का मानना है कि 2024-25 की हिंसक राजनीतिक उथल-पुथल के बाद बांग्लादेश में बने घरेलू राजनीतिक दबाव के कारण रहमान पर नई दिल्ली से अपनी दूरी दिखाने का दबाव था।

जून में मलेशिया और चीन की यात्रा के दौरान, रहमान ने बीजिंग में चीन को बांग्लादेश का सबसे मूल्यवान और भरोसेमंद साझेदार बताया, जो ढाका के चीन की ओर बढ़ते झुकाव को और स्पष्ट करता है। इस यात्रा के दौरान कई महत्वपूर्ण समझौते हुए, जिसमें बंगाल की खाड़ी में मोंगला और चट्टोग्राम बंदरगाहों के विकास में चीन की भागीदारी, भारत के संवेदनशील सिलीगुड़ी गलियारे के पास प्रस्तावित तीस्ता नदी जल परियोजना, रक्षा और सुरक्षा सहयोग बढ़ाने तथा चीन से हथियारों की अधिक आपूर्ति जैसे मुद्दे शामिल हैं। चीन ने 300 मिलियन डॉलर से अधिक की सहायता और बांग्लादेश के विशेष आर्थिक क्षेत्रों में चीनी विनिर्माण इकाइयों को स्थानांतरित करने की योजनाओं का भी उल्लेख किया गया।

चेलानी ने बांग्लादेश की विदेश नीति में चीन पर अधिक निर्भरता की दिशा में जानबूझकर किए जा रहे बदलाव का संकेत बताया। हालांकि, उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि बांग्लादेश अभी भी जरूरी आपूर्ति, व्यापार मार्गों, बिजली, पानी और औद्योगिक इनपुट के लिए भारत पर काफी हद तक निर्भर है। इसके बाद रहमान नई दिल्ली के साथ संबंधों को पूरी तरह खत्म करने के बजाय उन्हें एक नए संतुलन के साथ आगे बढ़ाना चाहते हैं। उनके मुताबिक, रहमान अगले महीने नई दिल्ली में होने वाले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से दूर रहकर घरेलू स्तर पर अपनी मजबूत छवि बनाना चाहते हैं। खासकर शेख हसीना के हाल में नई दिल्ली में मीडिया के सामने आने के बाद यह उनके लिए राजनीतिक रूप से अहम हो सकता है। फिर भी, रहमान ने भारत की पूर्ण राजकीय यात्रा करने की इच्छा जताकर यह संकेत भी दिया है कि वह नई दिल्ली के साथ संपर्क बनाए रखना चाहते हैं, लेकिन समान शर्तों पर।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

पाकिस्तान फिर बेनकाब, पूर्व मंत्री ने खुद को बताया हाफिज सईद का गुलाम; भारत को दी धमकी

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान में सत्ता और आतंकवाद का गठजोड़ कितना गहरा है, ये एक बार फिर बेनकाब हो गया है। दरअसल पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान खान के करीबी रहे और उनकी सरकार के मंत्री रहे शेख रशीद ने अब खुद को खूंखार आतंकी हाफिज सईद का नौकर बता दिया है। शेख रशीद न सिर्फ इस्लामाबाद में लश्कर ए तैयबा के कार्यक्रम में शामिल हुआ, बल्कि उसने खुद को हाफिज सईद का समर्थक भी बताया। इस दौरान मंच पर लश्कर के कई खूंखार आतंकी भी मौजूद रहे, जिनमें लश्कर का वरिष्ठ कमांडर शेख याकूब और संधू शामिल रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शेख रशीद ने कहा, मैं हाफिज सईद साहब का गुलाम हूं। रशीद ने ये भी बताया कि एक बार उसके फोन में हाफिज सईद का नंबर मिला था, जिसके चलते उसे अमेरिका से बाहर कर दिया गया था। इसके साथ ही शेख रशीद ने मंच से भारत को धमकियां भी दी। गीदड़ भभकी दिखाते हुए शेख रशीद ने कहा कि अगर भारत ने पाकिस्तान की तरफ देखा तो वहां कोई चिड़िया नहीं चहचहाएगी और न ही मंदिर में घंटियां बजेगी और भारत में ऐसा कोई काम नहीं होगा, जो पाकिस्तान के खिलाफ हो।

तपती गर्मी से राहत का जापानी जुगाड़: एसी जैकेट से UV छाते तक, ये तकनीकें कैसे बदलेंगी गर्मी से बचने का तरीका

टोक्यो, एजेंसी। पूर्वी एशिया में गर्मी बढ़ने के साथ जापान में लोग इससे बचने के लिए तकनीक और पारंपरिक उपायों का इस्तेमाल कर रहे हैं। आम पंखे से लेकर खास तरह की जैकेट और ठंडे बूथ तक बाजार में मौजूद हैं। पंखे वाली जैकेट शरीर के आसपास हवा पहुंचाकर पसीना जल्दी सुखाती है, जबकि कुछ छोटे पंखों में लगी विशेष धातु की प्लेट विद्युत प्रवाह के जरिए ठंडक पैदा करती है। तेज धूप से बचने के लिए यूवी रोधी छाते और पंखे वाली सौर टोपियां भी लोगों के बीच लोकप्रिय हो रही हैं। एसी जैकेट में छोटे पंखे लगाए जाते हैं। ये पंखे बाहर की हवा को जैकेट के अंदर खींचते हैं और शरीर के आसपास हवा का प्रवाह बनाए रखते हैं। इससे पसीना तेजी से सूखता है और शरीर का तापमान बढ़ने से रोकने में मदद मिलती है। गर्मी में बाहर काम करने वाले लोगों के लिए ऐसी जैकेट राहत का साधन बन रही हैं। इसका उद्देश्य कमरे की तरह पूरे शरीर को ठंडा करना नहीं, बल्कि शरीर के आसपास लगातार हवा पहुंचाकर गर्मी का असर कम करना है। जापान में गर्मी से बचने के लिए तकनीक आधारित दूसरे विकल्प भी इस्तेमाल हो रहे हैं। छोटे सेमीकंडक्टर पंखों में लगी विशेष धातु की प्लेट विद्युत प्रवाह से ठंडक पैदा करती है। इससे केवल हवा चलाने के बजाय ठंडक का एहसास भी कराया जाता है। इसके अलावा इंसान के आकार के रेफ्रिजरेटेड बूथ भी इस्तेमाल किए जा रहे हैं। इन्हें निर्माण स्थलों और राहत केंद्रों में लगाया जा रहा है, ताकि तेज गर्मी के बीच लोग कुछ समय ठंडे वातावरण में रह सकें।

क्या पश्चिम एशिया में फिर बिगड़ेंगे हालात? लाल सागर में हूती लड़ाकों ने सऊदी जहाजों को बनाया निशाना

रियाद, एजेंसी। यमन के हूती विद्रोहियों ने बुधवार को सऊदी जहाजों को निशाना बनाया। जिससे पश्चिम एशिया के हालात फिर से बिगड़ने का खतरा पैदा हो गया है। हूती विद्रोहियों ने बुधवार को लाल सागर में एक सैन्य परिवहन पोत पर हमला किया और सऊदी समर्थित ठिकानों पर भी हमले किए। हूती विद्रोहियों के सैन्य प्रवक्ता ने एक बयान में कहा कि 'विद्रोही समूह ने मोचा और मारिब क्षेत्रों में सऊदी अरब के सैन्य ठिकानों पर हमले किए। इस दौरान हथियार डिपो और कमान केंद्रों को बैलिस्टिक मिसाइलों और ड्रोन से निशाना बनाया गया। हमले सटीक थे और इनमें सऊदी नागरिकों समेत दर्जनों लोग हताहत हुए।' हूती लड़ाकों ने कहा है कि वे आगे भी सऊदी अरब की सैन्य टुकड़ियों को निशाना बनाना जारी रखेंगे। सऊदी अरब तनाव बढ़ाकर हमारे देश पर कब्जा करना चाहता है। इससे पहले भी हूति विद्रोहियों ने बाब अल मंदेब जलडमरूमध्य में एक वाणिज्यिक पोत पर मिसाइल हमला किया था। जिसमें कम से कम छह लोग मारे गए थे। यमन सरकार ने इस हमले के पीछे हूती विद्रोहियों को जिम्मेदार ठहराया था। इस बीच यमन की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त राष्ट्रपति नेतृत्व परिषद के अध्यक्ष रशाद अल अलीमी ने कहा है कि सरकार हूती विद्रोहियों की कार्रवाई का जवाब देगी। साथ ही उन्होंने ये भी कहा कि वे समूह से लड़ाई खत्म करने, हथियार डालने और देश की राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल होने का आह्वान भी करते हैं।

सबसे भरोसेमंद सहयोगियों में से एक': व्हाइट हाउस प्रेस सचिव लेविट की विदाई पर बोले ट्रंप; क्या होगी नई भूमिका?

वाशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को (स्थानीय समय) घोषणा की कि व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट महीने के अंत में अपना पद छोड़ देंगी। वह अपने छोटे बच्चों और परिवार के साथ ज्यादा समय बिताना चाहती हैं। ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर एक पोस्ट में लेविट को अपनी 'सबसे भरोसेमंद सहयोगियों में से एक' बताया। उन्होंने कहा कि वह उनके फैसले को समझते हैं और उसका सम्मान करते हैं।

उन्होंने कहा, हमारी व्हाइट हाउस की शानदार प्रेस सचिव और मेरी सबसे भरोसेमंद सहयोगियों में से एक कैरोलिन लेविट महीने के अंत में अपना पद छोड़ेंगी, ताकि वह अपने प्यारे छोटे बच्चों और परिवार के साथ ज्यादा समय बिता सकें। मैं उनके इस फैसले को पूरी तरह समझता और सम्मान करता हूं।

राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि लेविट आगे भी उनके शीर्ष बाहरी सलाहकारों में से एक के रूप में काम करती रहेंगी। साथ ही वह रिपब्लिकन पार्टी में एक प्रभावशाली आवाज बनी रहेंगी, क्योंकि उनका प्रशासन आने वाले मध्यावधि चुनावों की तैयारी कर रहा है। ट्रंप ने आगे कहा, कैरोलिन अब मेरे शीर्ष बाहरी सलाहकारों में से एक होंगी और रिपब्लिकन पार्टी में एक प्रभावशाली आवाज बनी रहेंगी, क्योंकि हम इतिहास को

गलत साबित करने और मध्यावधि चुनावों में निर्णायक जीत हासिल करने के लिए काम कर रहे हैं। कैरोलिन व्हाइट हाउस में एक सच्ची नेता रही हैं और उन्होंने 2018 से न्याय, स्वतंत्रता और आजादी के लिए शानदार काम किया है। इसमें 2024 का हमारा ऐतिहासिक चुनाव अभियान भी शामिल है। कैरोलिन व्हाइट हाउस प्रेस सचिव के पद के इतिहास में सबसे बेहतरीन प्रेस सचिवों में से एक रही हैं। कैरोलिन अच्छी तरह से काम करने के लिए आपका धन्यवाद।

कैरोलिन लेविट ने क्या कहा : लेविट ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि पिछले डेढ़ साल से व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव के रूप में काम करना 'उनकी जिंदगी का सबसे बड़ा सम्मान' रहा है। उन्होंने कहा, 'पिछले डेढ़ साल से व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव के रूप में काम करना मेरी जिंदगी का सबसे बड़ा सम्मान रहा है। मैं राष्ट्रपति ट्रंप की बेहद आभारी हूं कि उन्होंने मुझे इतने असाधारण अवसर दिए। इनमें वेस्ट विंग में काम करना, ओवल ऑफिस में अनगिनत घंटे बिताना, दुनियाभर में उड़ान भरना और विदेशी नेताओं से मिलना और हमारे खूबसूरत देश की यात्रा करके हर तरह के लोगों से मिलना शामिल है।

राष्ट्रपति ट्रंप का आभार जताया : लेविट ने आगे कहा, सबसे बढ़कर, मैं राष्ट्रपति की आभारी हूं कि उन्होंने मुझे व्हाइट हाउस के पोडियम से उनकी ओर से बोलने का विशेष अधिकार और जिम्मेदारी दी। मैंने इस प्रशासन की कई ऐतिहासिक उपलब्धियों के बारे में बहुत गर्व के साथ बात की है। मैंने उदारवादी मीडिया को जवाबदेह ठहराने और यह सुनिश्चित करने का भी पूरा आनंद लिया है कि अमेरिकी लोगों तक राष्ट्रपति ट्रंप की सफलताओं की सच्चाई पहुंचे। मां के रूप में अपनी जिम्मेदारियों का जिक्र करते हुए लेविट ने कहा कि अपने छोटे बच्चों की परवरिश के साथ इतनी व्यस्त नौकरी करना संतोष देने वाला लेकिन चुनौतीपूर्ण रहा है।

'जिंदगी के नए अध्याय की शुरुआत करने का कठिन फैसला' : उन्होंने कहा, मां बनना और एक नए बच्चे का स्वागत करना, साथ ही दुनिया की सबसे कठिन नौकरियों में से एक को करना, मेरी जिंदगी का सबसे संतोष देने वाला लेकिन चुनौतीपूर्ण दौर रहा है। सच यह है कि अपनी बेटी के जन्म के बाद से मेरे दिल में यह भावना रही कि व्हाइट हाउस प्रेस सचिव के लिए जरूरी समय, ऊर्जा और ध्यान देने के साथ मैं अपने दो छोटे बच्चों के लिए उनकी जरूरत के मुताबिक सबसे अच्छी मां नहीं बन सकती। इसी वजह से मैंने आखिरकार व्हाइट हाउस छोड़ने और अपनी जिंदगी के एक नए अध्याय की शुरुआत करने का यह भावुक लेकिन कठिन फैसला लिया है।

डेमोक्रेटिक पार्टी से अमेरिका के अस्तित्व को खतरा : उन्होंने कहा, राष्ट्रपति ट्रंप ने मुझसे बाहर से उनके शीर्ष सलाहकारों में से एक के रूप में काम करते रहने को कहा है। मैं हमेशा मेक अमेरिका ग्रेट अगेन और रिपब्लिकन पार्टी की खुलकर वकालत करती रहूंगी। हमारा देश एक ऐसी डेमोक्रेटिक पार्टी से अस्तित्व के लिए बड़े खतरे का सामना कर रहा है, जो लगातार ज्यादा कट्टरपंथी होती जा रही है और अमेरिका की हर महान चीज को नष्ट करना चाहती है। मेरा मानना है कि जो भी लोग इस देश की परवाह करते हैं, उन सभी की जिम्मेदारी है कि वे इस खतरे के खिलाफ लड़ें। मेरी लड़ाई अब एक नए चरण में प्रवेश कर रही है, लेकिन यह अभी खत्म नहीं हुई है।

अमेरिका की वीजा नीति का असर: घट सकते हैं 1.1 लाख विदेशी छात्र, होगा 3.4 अरब डॉलर का नुकसान; रिपोर्ट में दावा

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की सख्त वीजा नीति और बदलती नीतियों को लेकर बनी अनिश्चितता का असर विदेशी छात्रों के दाखिले पर पड़ सकता है। एक नई रिपोर्ट के मुताबिक, 2026 के शीतकालीन सत्र में अमेरिकी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में विदेशी छात्रों के दाखिले में 1.1 लाख तक की कमी आ सकती है। शिक्षकों के संगठन (एनएएफएसए) एसोसिएशन ऑफ इंटरनेशनल एजुकेटर्स और शोध संस्था जेबी इंटरनेशनल की रिपोर्ट में कहा गया है कि विदेशी छात्रों की संख्या घटने से अमेरिकी स्थानीय अर्थव्यवस्था को 3.4 अरब अमेरिकी डॉलर यानी करीब 32,457.83 करोड़ रुपये का नुकसान हो सकता है। इससे करीब 39,000 नौकरियों पर भी असर पड़ने का अनुमान है।

11.69 लाख से घटकर 10.57 लाख हो सकती है संख्या : रिपोर्ट के अनुसार, 2025-26 के शीतकालीन सत्र में अमेरिका में विदेशी छात्रों के दाखिले की अनुमानित संख्या 11.69 लाख थी। इस साल यह घटकर 10.57 लाख रह सकती है। अमेरिका में विदेशी छात्रों के सबसे बड़े स्रोत के तौर पर भारत की अहम भूमिका है। 2024-25 शैक्षणिक वर्ष में 3.63 लाख से अधिक भारतीय छात्रों ने अमेरिका में अलग-अलग पाठ्यक्रमों में दाखिला लिया था। रिपोर्ट के मुताबिक, 2025-26 के शीतकालीन सत्र में विदेशी छात्रों ने अमेरिकी स्थानीय अर्थव्यवस्था में 41.77 अरब अमेरिकी डॉलर (करीब 3,98,754.02 करोड़ रुपये) का योगदान दिया था। 2026-27 में यह घटकर 38.37 अरब डॉलर (करीब 3,66,296.19 करोड़ रुपए) रहने का अनुमान है। एनएएफएसए की कार्यकारी निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी फैंटा आव ने कहा कि अमेरिका की नीतियां और नियम इस बात को प्रभावित करते हैं कि विदेशी छात्र अपना भविष्य कहां बनाने का फैसला करते हैं। उन्होंने कहा कि छात्रों के ये फैसले अमेरिकी समाज और अर्थव्यवस्था पर छोटे और लंबे समय में बड़ा असर डालते हैं।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि सख्त वीजा नीतियों के अलावा, विदेश विभाग की ओर से फीफा विश्व कप के टिकट धारकों को छात्रों की तुलना में वीजा जारी करने में प्राथमिकता देना भी विश्वविद्यालयों में विदेशी छात्रों के दाखिले को प्रभावित कर रहा है। रिपोर्ट के अनुसार, ऐतिहासिक रूप से इस व्यस्त मौसम में विदेश विभाग छात्र और शोधकर्ता वीजा आवेदनों को प्राथमिकता देता रहा है। इससे छात्रों को समय पर विश्वविद्यालय परिसरों में पहुंचने में मदद मिलती थी। पिछले साल अमेरिकी सरकार ने सुरक्षा चिंताओं का हवाला देते हुए अफगानिस्तान और यमन समेत दर्जनों देशों के यात्रियों पर प्रतिबंध लगाए थे।

कोलंबिया: मलबे से आई फुसफुसाहट ने बचाई छह महीने के मासूम की जान; बेटे के जन्मदिन पर काल के मुंह से बाहर आई मां

पेरेरा, एजेंसी। कोलंबिया में सोमवार को आए 7.4 तीव्रता के भीषण भूकंप के तीसरे दिन एक चमत्कारी घटना सामने आई है। कैली शहर के ला टोरेस डेल लिमोनार आवासीय परिसर में ढही पांच मंजिला इमारत के मलबे के ढेर से छह महीने के मासूम बच्चे को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। मलबे के भीतर से आई बेहद धीमी फुसफुसाहट ने जान बचाई। सोमवार को आए इस शक्तिशाली भूकंप के बाद जब ब्रायन ओसोरियो जुलुगा अपने ऑफिस से बाइक पर सवाल होकर घर लौट रहे थे तो वो रास्ते में मलबे में तब्दील हो चुकी इमारत देखकर रुक गए। गैस लीक की चेतावनी के बावजूद वह मलबे के पास पहुंचे और लोगों से खामोश रहने के लिए कहा। तभी मलबे के नीचे से एक शख्स की क्षीण आवाज गूंजी। हां! मैं यहां हूं। मेरे साथ एक बच्चा है।

इसके बाद ब्रायन और अन्य स्थानीय स्वयंसेवकों ने अपने हाथों से मलबा हटाना शुरू किया। रास्ते में एक भारी कंक्रीट का स्लैब रुकावट बना, जिसे सबने मिलकर एक साथ उठाया। जैसे ही मलबा हटा, बच्चे की सांसें सामान्य होने लगीं। एक पुलिसकर्मी की मदद से बच्चे को तुरंत एंबुलेंस से अस्पताल भेजा गया। आधे दबे हुए उस व्यक्ति को भी सुरक्षित बचा लिया गया। पश्चिमी कोलंबिया में आए इस विनाशकारी भूकंप में अब तक 200 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। मलबे में तब्दील हुई इस इमारत के पास लोगों का यह साझा प्रयास इंसानियत की मिसाल बन गया।

वहीं, रियोसुसियो शहर के रहने वाले जूलियो सीजर लागों की 32 वर्षीय बेटी डेनियला चमत्कारिक रूप से बच गईं। घटना के दिन उनके बेटे का 12वां जन्मदिन था और परिवार जश्न की तैयारी कर रहा था। डेनियला परेरा शहर में एक चार मंजिला इमारत के ढहने से मलबे में फंस गई थीं और 38 घंटे तक दबी रहीं। रेस्क्यू टीम ने 10 घंटे के कड़े संघर्ष के बाद उन्हें सुरक्षित बाहर निकाला। अस्पताल ले जाते समय लोगों ने तालियां बजाकर खुशी मनाई। पिता ने इसे अपनी बेटी के दोबारा जन्म जैसा बताया है।

आर्कटिक में तनाव की चेतावनी: पुतिन ने समुद्री मार्ग में भारत की रुचि का जिक्र क्यों किया? नाटो का भी उल्लेख

मॉस्को, एजेंसी। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने आर्कटिक क्षेत्र को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि रूस के साझेदार देशों में नॉर्दर्न सी रूट के साथ सहयोग को लेकर दिलचस्पी बढ़ रही है और भारत इस दिशा में प्रमुख देशों में शामिल है। पुतिन ने यह बात बुधवार को प्रशांत बेड़े के जवानों के साथ बैठक के दौरान कही। उनके बयान में भारत का जिक्र ऐसे समय हुआ है, जब रूस पश्चिमी प्रतिबंधों के बीच नए व्यापार और समुद्री रास्तों पर सहयोग बढ़ाने की कोशिश कर रहा है।

नॉर्दर्न सी रूट क्या है और भारत के लिए क्यों अहम : नॉर्दर्न सी रूट आर्कटिक क्षेत्र से होकर गुजरने वाला समुद्री मार्ग है। रूस लंबे समय से इस रास्ते की क्षमता का इस्तेमाल बढ़ाने पर जोर देता रहा है। पुतिन ने कहा कि रूस इस मार्ग के फायदे का इस्तेमाल

अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून के दायरे में रहकर करने को तैयार है। भारत की बढ़ती रुचि का मतलब यह है कि नई दिल्ली इस मार्ग से जुड़ी संभावनाओं को व्यापार और रणनीतिक सहयोग के नजरिये से देख रही है।

पुतिन ने नाटो को लेकर क्या चेतावनी दी : पुतिन ने नॉर्दर्न सी रूट में बढ़ती दिलचस्पी के साथ आर्कटिक में बढ़ते 'कृत्रिम तनाव' की भी चेतावनी दी। उन्होंने बाहरी देशों की गतिविधियों और नाटो के विस्तार का संकेत देते हुए कहा कि आर्कटिक में तनाव पैदा करने की कोशिशों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। रूस के लिए आर्कटिक क्षेत्र रणनीतिक रूप से बेहद अहम है और वह इस इलाके में अपनी मौजूदगी तथा हितों को लेकर लगातार सतर्क रहा है।

भारत, रूस और चीन की भूमिका क्या : पुतिन ने कहा कि चीन, भारत और दूसरे देश रूस के साथ नॉर्दर्न सी रूट पर सहयोग को लेकर सक्रिय बातचीत कर रहे हैं। उन्होंने भारत को उन प्रमुख देशों में गिना जिनकी इस समुद्री मार्ग में दिलचस्पी बढ़ रही है। रूस के साथ भारत के पुराने रणनीतिक संबंधों और ऊर्जा सहयोग को देखते हुए आर्कटिक मार्ग आने वाले समय में दोनों देशों के लिए सहयोग का एक नया क्षेत्र बन सकता है। यूक्रेन संघर्ष के बाद रूस पर अमेरिका और यूरोपीय देशों ने कई प्रतिबंध लगाए हैं। इन प्रतिबंधों के बीच रूस अपने व्यापार के लिए वैकल्पिक रास्तों और साझेदार देशों के साथ सहयोग बढ़ाने पर जोर दे रहा है। नॉर्दर्न सी रूट इसी रणनीति का अहम हिस्सा है। रूस चाहता है कि इस समुद्री रास्ते के जरिये एशियाई देशों के साथ संपर्क और व्यापार की संभावनाएं बढ़ें। रूस के समुद्री व्यापार को लेकर यूरोपीय संघ की कार्रवाई भी तेज हुई है। पश्चिमी प्रतिबंधों से बचने और रूसी तेल के निर्यात में इस्तेमाल होने वाले संदिग्ध जहाजों के बेड़े को 'शैडो फ्लीट' कहा जाता है। यूरोपीय देशों ने ऐसे कई जहाजों की जांच और उन्हें रोकने की कार्रवाई बढ़ाई है। इसी मुद्दे पर पुतिन ने यूरोपीय देशों को कड़ी चेतावनी दी है।

ईरानी मिसाइल के निशाने पर थे ट्रंप: दावा- आईआरजीसी को पता थी लोकेशन, खुफिया एजेंसियों ने कैसे फेरा मंसूबे पर पानी

वॉशिंगटन, एजेंसी। नाटो शिखर सम्मेलन के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सुरक्षा को लेकर एक गंभीर खतरे का दावा किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी खुफिया एजेंसियों को कई इनपुट मिले थे कि ईरान को तुर्किये की राजधानी अंकारा में ट्रंप के ठिकाने की सटीक जानकारी थी। बताया गया कि ईरानी एजेंटों को उस होटल की मंजिल तक की जानकारी थी, जहां ट्रंप ठहरे हुए थे। सुरक्षा अधिकारियों ने इसी दौरान ट्रंप को निशाना बनाने वाले संभावित सतह से हवा में मार करने वाले मिसाइल खतरे का भी पता लगाया। खतरे का आकलन इतना गंभीर बताया गया कि अमेरिकी सुरक्षा अधिकारियों ने असाधारण सुरक्षा योजना तैयार की।

रिपोर्ट के मुताबिक, नाटो सम्मेलन के आसपास एक व्यक्ति को कंधे से दागी जाने वाली मिसाइल के साथ भी देखा गया था। साथ ही ऐसी जानकारी सामने आई कि ट्रंप को ले जाने वाले विमान को निशाना बनाया जा सकता है। इसके बाद ट्रंप की आवाजाही को सार्वजनिक रूप से सामान्य दिखाते हुए उन्हें गुप्त तरीके से दूसरे विमान में भेजने की योजना बनाई गई। ट्रंप को एयरपोर्ट से गुप्त तरीके से कैसे निकाला गया? सुरक्षा योजना के तहत ट्रंप ने सार्वजनिक रूप से पुराने एयरफोर्स वन में सवार होने का दृश्य दिया। इसके बाद उन्हें एयरपोर्ट के अंदर एक कैटरिंग कंटेनर के जरिए गुप्त रूप से बाहर निकाला गया और सैन्य विमान से तुर्किये से बाहर ले जाया गया। दूसरी ओर, मूल एयरफोर्स वन को अंकारा से ब्रिटेन के लिए रवाना किया गया। इसमें विदेश मंत्री मार्को रुबियो, वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट और व्हाइट हाउस के वरिष्ठ सहयोगी स्टीफन मिलर तथा स्टीवन च्यूंग समेत कई अधिकारी मौजूद थे। रिपोर्ट के मुताबिक, मूल एयरफोर्स वन में मौजूद सभी यात्रियों को खतरे की पूरी गंभीरता की जानकारी नहीं दी गई थी। 8 जुलाई को अंकारा से ब्रिटेन की उड़ान के दौरान यात्रियों को विमान की खिड़कियों के पर्दे बंद रखने का निर्देश दिया गया। बाद में ट्रंप गुप्त रूप से फिर एयरफोर्स वन में शामिल हो गए और कैमरों के सामने ऐसे दिखाई दिए, जैसे वह पूरे समय उसी विमान में रहे हों। इस पूरी कार्रवाई को लेकर पूर्व व्हाइट हाउस अधिकारियों के बीच भी सवाल उठे हैं। इस सुरक्षा अभियान को लेकर दो तरह की राय सामने आई है।

कुछ पूर्व अधिकारियों का मानना है कि जिस विमान को डिकॉय बनाया गया, उसमें मौजूद लोगों को खतरे की जानकारी दी जानी चाहिए थी। वहीं, इस फैसले का बचाव करने वालों का तर्क है कि अमेरिकी राष्ट्रपति की सुरक्षा के लिए विश्वसनीय खतरे की स्थिति में असाधारण कदम उठाना जरूरी था।

बचपन में अलग हुईं, फिर दोस्ती हुई और 40 साल पता खुला राज, डीएनए रिपोर्ट ने कैसे बदली दोनों की जिंदगी

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी। भारत में शिशु अवस्था में अलग-अलग अनाथालयों में छोड़ी गई दो बच्चियां करीब 40 साल तक अपनी-अपनी जिंदगी जीती रहीं। दोनों को नीदरलैंड के अलग-अलग परिवारों ने गोद लिया और दोनों की परवरिश एक-दूसरे से थोड़ी दूरी पर हुई। उन्हें पता ही नहीं था कि उनके जीवन में एक ऐसी बहन भी है, जिससे उनकी मुलाकात किशोरावस्था में हो चुकी है। वर्षों बाद डीएनए जांच ने उनकी पुरानी दोस्ती के पीछे छिपा रिश्ता सामने ला दिया।

कहानी में सबसे हैरान करने वाली बात यह है कि मीना और मीनल पहली बार किशोरावस्था में 1996 में एक गोद लिए गए बच्चों की सभा में मिली थीं। उस समय दोनों करीब 100 मील की दूरी पर रहती थीं। पहली मुलाकात में ही दोनों के बीच असामान्य रूप से गहरा जुड़ाव महसूस हुआ। दोस्तों ने भी दोनों के चेहरे और शक्ल-सूरत में समानता देखी। दोनों ने एक-दूसरे के पते लिए और मजाक में पत्रों में एक-दूसरे को 'बहन' कहकर बुलाने लगीं। इसके बाद करीब 15 साल तक दोनों का संपर्क नहीं रहा।

डीएनए जांच ने कैसे खोला 40 साल पुराना राज : अप्रैल में मीनल ने माईहेरिटेज डीएनए जांच कराई। फोन पर जब जांच का नतीजा आया तो उसमें मीना का नाम बहन के रूप में दिखाई दिया। डीएनए में 100 फीसदी का दुर्लभ मिलान सामने आया। मीनल ने बताया कि वह उस समय अपने घर के सोफे पर बैठी थीं, जब फोन पर नतीजे का संदेश आया। उन्हें यकीन ही नहीं हुआ कि जिस लड़की से वह किशोरावस्था में मिली थीं, वही उनकी सगी बहन है।

क्या दोनों को पहले कभी अपने रिश्ते का अंदाजा हुआ था : बचपन में दोनों को यह जानकारी नहीं थी कि उनकी कोई बहन है। मीनल ने बताया कि वह अपने डच माता-पिता और भाई-बहनों के साथ प्यार से पली-बढ़ीं, लेकिन उनके भीतर एक गहरी अकेलेपन की भावना भी थी। दूसरी ओर, मीना भी लंबे समय से अपने भीतर एक खालीपन महसूस करती थीं। जब डीएनए जांच से रिश्ता सामने आया तो उन्हें लगा जैसे जिंदगी का कोई खोया हुआ हिस्सा वापस मिल गया हो। डीएनए रिपोर्ट आने के बाद मीनल को पहले यह समझ नहीं आया कि मीना वही लड़की है, जिससे वह करीब 30 साल पहले मिली थीं। बाद में उन्होंने सोशल मीडिया पर मीना को खोजा और उसकी तस्वीरें देखीं। तस्वीरों को देखने के बाद उन्हें यकीन हो गया कि डीएनए रिपोर्ट में जिस बहन की बात सामने आई है, वह वही पुरानी दोस्त है। मीनल ने कहा कि वे बहन बनने से पहले दोस्त थीं और असल में वे पूरी जिंदगी बहनें ही थीं, बस उन्हें इसका पता नहीं था। रिश्ता सामने आने के बाद दोनों बहनों ने नीदरलैंड में भावुक मुलाकात की। इस दौरान आंसू, गले मिलना और हंसी एक साथ दिखाई दी। दोनों ने पहली बार साथ में सेल्फी भी ली। मीना ने अपनी बहन से कहा कि जब वह उसे देखती हैं तो उन्हें घर जैसा महसूस होता है। अप्रैल में डीएनए नतीजा आने के बाद से दोनों हर दिन घंटों फोन पर बात और संदेशों के जरिए एक-दूसरे से जुड़ी रहती हैं।

ग्रीन कार्ड का सपना देख रहे भारतीयों को बड़ा झटका, ईबी-2 भारत का कोटा अस्थायी रूप से क्यों बंद

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में स्थायी निवास यानी ग्रीन कार्ड का इंतजार कर रहे हजारों भारतीय आईटी पेशेवरों और उच्च कुशल कामगारों के लिए बड़ा झटका है। ईबी-2 भारत का ग्रीन कार्ड कोटा वित्त वर्ष खत्म होने के कारण अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया है। इससे अंतिम मंजूरी की प्रक्रिया रुक गई है। लंबित आवेदनों पर कागजी काम जारी रहेगा, लेकिन क्या नए वित्त वर्ष में भारतीयों को फिर राहत मिलेगी?

अमेरिका में ग्रीन कार्ड का इंतजार कर रहे भारतीय आईटी पेशेवरों और दूसरे उच्च कुशल कामगारों के लिए परेशानी बढ़ गई है। इनमें एच-1बी वीजा पर अमेरिका में काम कर रहे भारतीय पेशेवर भी शामिल हैं। अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने ईबी-2 भारत श्रेणी का ग्रीन कार्ड कोटा अस्थायी रूप से बंद कर दिया है। यह रोक 30 सितंबर को खत्म हो रहे मौजूदा वित्त वर्ष के कारण लगी है। इसका सीधा असर उन भारतीय आवेदकों पर पड़ेगा, जो अमेरिका में स्थायी निवास की मंजूरी का इंतजार कर रहे हैं।

ईबी-2 भारत का ग्रीन कार्ड कोटा क्यों हुआ बंद : ईबी-2 श्रेणी में एडवांस्ड डिग्री रखने वाले या असाधारण योग्यता वाले पेशेवर शामिल होते हैं। अमेरिकी विदेश मंत्रालय के अनुसार, मौजूदा वित्त वर्ष का कोटा खत्म होने की वजह से ईबी-2 भारत के लिए नए आप्रवासी वीजा नंबर फिलहाल उपलब्ध नहीं हैं। इसका मतलब है कि भारतीय आवेदकों के लिए अंतिम मंजूरी की प्रक्रिया रुक गई है। भारतीय आईटी पेशेवरों के लिए यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि बड़ी संख्या में कुशल भारतीय कर्मचारी एच-1बी वीजा के जरिए अमेरिका में काम करते हैं और लंबे समय से ग्रीन कार्ड की प्रक्रिया में हैं।

भारतीय आवेदकों को पहले कैसे मिल जाती थी राहत : भारतीय आवेदकों को पहले दूसरे देशों के इस्तेमाल नहीं हुए वीजा नंबरों से कुछ राहत मिल जाती थी। अमेरिकी आव्रजन कानून फर्म डब्ल्यूआर इमिग्रेशन के अनुसार, दूसरे देशों के बचे हुए वीजा नंबर छनकर ईबी-2 और ईबी-3 भारत

श्रेणी में पहुंच जाते थे। इससे भारतीय आवेदकों के लिए उपलब्धता कुछ बेहतर हो जाती थी। लेकिन अब यह व्यवस्था पहले की तरह राहत नहीं दे रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि इससे भारतीय आवेदकों के लिए उपलब्ध जगह और सीमित हो रही है।

क्या लंबित आवेदनों पर भी पूरी तरह रोक लग गई है : फिलहाल ऐसा नहीं है। अमेरिकी नागरिकता एवं आव्रजन सेवा यानी यूएससीआईएस में पहले से लंबित आवेदनों की कागजी प्रक्रिया जारी रह सकती है। लेकिन इन आवेदनों को अंतिम मंजूरी देने के लिए वीजा नंबर उपलब्ध होना जरूरी है। मौजूदा कोटा खत्म होने के कारण अंतिम वीजा नंबर अभी आवंटित नहीं किया जा सकता। नया कोटा जारी होने के बाद ही इन मामलों में अंतिम मंजूरी की प्रक्रिया आगे बढ़ सकेगी।

नए वित्त वर्ष में भारतीयों के लिए क्या चुनौती रहेगी : इस रोक के बाद भारतीय आवेदकों की चिंता इसलिए बढ़ी है क्योंकि विशेषज्ञों ने आगामी वित्त वर्ष में भी ईबी-2 और ईबी-3 भारत श्रेणियों में सीमित उपलब्धता की चेतावनी दी है। इसका मतलब है कि ग्रीन कार्ड के लिए इंतजार कर रहे भारतीय उच्च कुशल कामगारों को आगे भी लंबी प्रतीक्षा का सामना करना पड़ सकता है। खासकर उन लोगों के लिए यह स्थिति महत्वपूर्ण है, जो एच-1बी वीजा पर अमेरिका में रहकर स्थायी निवास की प्रक्रिया पूरी करने की कोशिश कर रहे हैं।

स्वामी,मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

ભારતના ૮૦માં સ્વાતંત્ર્ય દિન નિમિત્તે સુરત–ડુમસ–સુલતાનાબાદના રહીશ અને ૪૧ વર્ષ જુના અગ્રણી લેન્ડ ડેવલોપર, સામાજિક અગ્રણી અને સમગ્ર કાંઠા વિસ્તારના ૮૬ ગામોમાં ખૂબ જ લોકપ્રિયતા ધરાવનાર "દિપક ધીરૂભાઈ ઈજારદાર" એ તમામ દેશ વાસીઓને હાર્દિક શુભકામનાઓ પાઠવી છે. આ સાથે જ તેઓએ સમગ્ર વિશ્વ જયારે ભયંકર કટોકટીમાંથી પસાર થઈ રહયું છે ત્યારે આપણા દેશનું સબળ નેતૃત્વ સંભાળી રહેલા દેશના લોકલાડીલા અને યશસ્વી વડાપ્રધાન શ્રી નરેન્દ્ર મોદીજી સાહેબને તન-મન–ધન થી મદદરૂપ થવા તમામ દેશવાસીઓને અપીલ પણ કરી છે. કોઈ ગમે તે કહે પરંતુ આજે જયારે ચારેય બાજુ આગ લાગી છે ત્યારે ૧૪૦ કરોડની વસ્તી ધરાવતા આપણાં દેશને તમામ કટોકટીમાંથી હેમખેમ બહાર કાઢવા માટે આજ વ્યકિત સક્ષમ અને સમર્થ છે તેમાં કોઈ બે મત નથી. તેવું તેમનું બેધડકપણે માનવું છે.

દિપકભાઈના પિતાશ્રી ધીરૂભાઈ પરભુભાઈ ઈજારદાર એક સ્વાતંત્ર્ય સેનાની હતા. હકુમત જો પ્રજાને અન્યાય કરે તો તેને તેઓ સાંખી લેતા ન હોતા. અંગ્રેજોના સમયમાં સચીનના છેલ્લા નવાબ સિરાજુદ્દીનની જોહુકમી સામે તેઓએ ગામ લોકોના સમર્થનથી જે આંદોલન કર્યુ હતું અને સચીનની જેલમાં ગયા હતા તે ઘટના આજે પણ કાંઠા વિસ્તારના લોકોના દિલો-દિમાગમાં અંકિત છે. આવા પિતાના ફરઝંદ એવા "દિપક ધીરૂભાઈ ઈજારદાર" ને ઉચ્ચ સંસ્કાર, ખુમારી, સ્વમાન, માનવતા અને સંવેદનશીલતા વારસામાં મળ્યા છે. જેને તેઓ સુપેરે આગળ ધપાવી રહયાં છે. સાથે જ પોતાના એકના એક પુત્ર ધ્યેય દિપક ઈજારદારને પણ ભાવિ જનતાના ઉત્કર્ષ માટે તાલીમ આપી રહયાં છે.

પોતાની વિતક કથા જણાવતાં "દિપક ધીરૂભાઈ ઈજારદાર" કહે છે કે તેઓએ માતા–પિતાની અત્યંત દારૂણ અને ગરીબ સ્થિતિ જોઈ છે અને અનુભવી છે. પિતાશ્રીની વાડીમાં થતા જાંબુ, કેરી, આંબલી, બોર જેવા ફળો વિગેરે વેચવા કાંસકીવાડ – ભાગળના બજારમાં તેઓ આવતા –જતા હતા. તે સમયે એક–એક પાઈની શું કિંમત હતી અને તે કમાવવામાં કેવી કાળી મજૂરી કરવી પડતી તે તેમણે ઉજાગરા કરી કરીને જાતે અનુભવી છે. તેથી જ તેઓ ગરીબીની કઠણાઈ, પીડા અને વેદના શું હોય છે તે સારી પેઠે પિછાણે છે જેને લઈને તેઓ કાંઠા વિસ્તારના દરેક ગરીબ વ્યકત માટે દિલમાં અત્યંત પ્રેમ અને માનવતાની લાગણી ધરાવે છે. સમાજની પછાત અને કચડાયેલી આવી પ્રજા જો કોઈપણ સમસ્યાથી પીડાતી હોય તો તેમનું હૃદય દ્રવી ઊઠે છે અને તરત જ તેઓ તેને તે સમસ્યામાંથી બહાર કાઢવા તન-મન-ધનથી જી–જાન લગાવી દે છે. આજે ઈશ્વરની કૃપાથી અને પોતાની કાબેલિયત અને કૌશલના આધારે તેઓ સમૃધ્ધિના શિખરે બિરાજમાન છે ત્યારે કોઈપણ જરૂરતમંદ અને નિમ્નકક્ષાની વ્યકિતને કોઈપણ પ્રકારની મદદ માટે તેઓ હંમેશા તત્પર રહે છે.

તેઓના આવા સાલસ સ્વભાવને કારણે તેમના ભકિતધામ ખાતે આવેલ નિવાસ સ્થાનેથી દાનની ધારાનો પ્રવાહ અસ્ખલિત વહેતો રહે છે. મંદિરોની સાલગીરી હોય, જીર્ણોદ્વાર હોય, સ્મશાનોનું રિનોવેશન હોય, સામાજિક મેળાવડાનો પ્રસંગ હોય, યુવાનોની ક્રિકેટ ટુર્નામેન્ટ હોય, ક્રિકેટની કીટ હોય, સમૂહ લગ્નના પ્રસંગમાં વર-કન્યા માટે કપડા, ડ્રેસ મટીરીયલ કે વાસણો હોય, પોલીસ કે મહાનગર પાલિકાના તમામ વર્ગના કર્મચારીઓના કામની કદર કરી તેઓને પ્રોત્સાહિત કરવાના હોય, ગરીબ–વિધવા અને નિઃસહાય બહેનોને ઘરવખરી કે અનાજની કીટ પહોંચાડવાની હોય તેમની આર્થિક મદદ સતત આવા ઉમદા કાર્યો માટે ઉપલબ્ધ હોય છે. તેથી જ "દિપક ધીરૂભાઈ ઈજારદાર" કાંઠા વિસ્તારના "રાજા" તરીકે ઓળખાય છે કે જે પોતાની પ્રજાને દુઃખી – અસહાય કે પીડિત તરીકે જોઈ શકતો નથી. આવા જરૂરતમંદો માટે તેમના દિલમાં સંવેદના અને કૃપાનું ઝરણું સતત વહેતું રહે છે. પ્રજા વત્સલ વ્યકિત તરીકે તેમની જે છાપ છે તેના પરિણામે કોઈ વ્યકિત તેઓને "ડુમસ કા ટાઈગર" કોઈ "ભામાશા" કોઈ "કળિયુગના કર્ણ" કોઈ "રાજા" તો કોઈ "અણમોલ દાતાશ્રી" તરીકે બોલાવે છે. આમ તેઓ કાંઠા વિભાગના એકમાત્ર નેતા તરીકે ઉભરી આવ્યા છે.

મુંબઈમાં કરેલા ઉચ્ચ અભ્યાસની સાથે તેઓની તમામ ભાષાઓ ઉપર અદભૂત પકડ છે. કોઈપણ પ્રકારની સ્પેશ્યલ ડિગ્રી ન હોવા છતાં તેઓ મેડીકલ, ઈલેકટ્રીકલ, મિકેનીકલ, સિવિલ, આધ્યાત્મિક, આર્કીટેકચર, ઈન્ટીરીયર ડિઝાઈનીંગ, રેવન્યુ, ક્રિમીનલ અને સિવિલ જેવા વકીલાતના વિષયો ઉપર સારું એવું જ્ઞાન ધરાવે છે. આ દરેક વિષયો ઉપર બૌધ્ધિક ચર્ચા કરી શકે છે, લાંબા સમય સુધી કોઈપણ જાતની પૂર્વતૈયારી વિના અવિરતપણે બોલી શકે છે. પ્રસંગોપાત તેઓ વિદ્વાનો સાથે પોતાની અને અન્યોની મેટરની ચર્ચામાં ભાગ લે છે. આવી આગવી ઓળખ અને છાપના કારણે તેઓના દેશના મોટા મોટા તબીબો, આર્કિટેક્ટ, અગ્રણી રાજકારણીઓ અને સરકારી અધિકારીઓ ઉપરાંત સુરતથી લઈ સુપ્રિમકોર્ટ સુધીના વકીલો સાથે સારો એવો પરિચય અને ધરોબો ધરાવે છે.

"દિપક ધીરૂભાઈ ઈજારદાર" સ્વભાવે ભોળા, મૃદુભાષી, લાગણીશીલ, નરમ અને ધાર્મિક સ્વભાવ ધરાવવા ઉપરાંત કઠોર વ્યકિત તરીકેની પહેચાન પણ ધરાવે છે. કાણાને કાણો કહેવાની શકિત પણ ધરાવે છે. પિતાના વારસાની જેમજ તેઓ કોઈપણ તીસમારખાં દ્વારા જો કોઈ ગરીબના હિતો ઉપર આકમણ કરવામાં આવે તો તેની સામે લડી લેવાની ખુમારી ધરાવે છે. વર્ષ ૨૦૦૯માં એસ.એમ.સી.ની ટી.પી. સ્કીમ નં. ૭૭ થી ૮૨ જનહિત વિરૂધ્ધની હોવાથી તેનો વિરોધ કરવા તેમણે ૧૦૦૦૦ ના ટોળાં સાથે એસ.એમ.સી.ની મુખ્ય કચેરી ઉપર જે તે વખતના કમિશ્નર અપર્ણા મેડમ વિરૂધ્ધ હલ્લા–બોલ કર્યું હતું. જેમાં સરકારને ઝુકવાની ફરજ પડી હતી અને ગરીબોની જીત થઈ હતી. દરેક તબક્કે તેઓ જે તે ગરીબો વતી પેલા કહેવાતા તોપચીઓ કે સરકારી મશીનરી વિરૂધ્ધ ખોખારીને ઊભા રહે છે અને ગરીબોની લડાઈ લડી તેઓને ન્યાય અપાવે છે. "દિપક ધીરૂભાઈ ઈજારદાર" ની એક હાકલ પર ગામે ગામથી લોકોના ટોળે ટોળા તેમના સમર્થનમાં ઉતરી પડે છે. ભૂતકાળમાં આવા તો ઘણાં ઉદાહરણ બન્યા છે. જયારે ભીમપોર, ડુમસ અને આભવાના ગરીબો માટે બનેલી ભીમપોર સહકારી મંડળી ના કહેવાતા મોટા ષડયંત્ર વિરૂધ્ધની લડાઈ તેમનું તાજું ઉદાહરણછે.

પોતાની આગવી સુઝ, શૈલી, વાકછટા, વ્યકિતત્વ, છાપ તેમજ પ્રસંગોચિત અલંકારિક વેશભૂષા અને આભૂષણોને કારણે "દિપક ધીરૂભાઈ ઈજારદાર" ઘણીવાર કોઈ રજવાડાના "રાજા" હોય તેવો ભાસ ઊભો થાય છે. હાલના દિવસોમાં કાંઠા વિસ્તારના ગામોમાં વિધવા અને ગરીબ બહેનોને ઘરવખરીની સહાય આપવી હોય, કપડાની સહાય આપવી હોય ત્યારે વ્યકિતગત રીતે કે કોઈ સંસ્થાના સથવારે તેમની નિઃશુલ્ક વિતરણની પ્રવૃત્તિ સતત ચાલુ છે. પોતાના એકના એક દિકરા ધ્યેય ઈજારદારના જન્મદિન નિમિત્તે તેઓએ સિવિલ હોસ્પિટલમાં ૧૨૦૦ જેટલાં ગરીબ દર્દીઓને અનાજ કપડાની કીટનું વિતરણ કરાવ્યું હતું. તાજેતરમાં ચેનલ આઈ.વિટનેસની સાલગીરી નિમિત્તે જરૂરતમંદ બહેનોને અનાજની કીટની વહેંચણી કરી હતી. તે ઉપરાંત માતા-પિતાના સ્મરણાર્થે ગરીબોને ઉપયોગી થાય તેવા ઉચ્ચકક્ષના મશીનો પણ તેઓએ લાખોના ખર્ચે નવી સિવિલ ખાતે ઉપલબ્ધ કરાવ્યા છે. ૧૬ મી ઓગષ્ટે પણ તેમના પિતાશ્રીના ગુરૂજી શંકર મહારાજ ઉનાવાવાળાની ૧૨૧ મી જન્મજયંતિ નિમિત્તે તેઓ સુલતાનાબાદ–ડુમસ–ભીમપોરની વિધવા મહિલાઓને ૭૨૧ જેટલી અનાજની કીટ વહેંચનાર છે. તાજેતરમાં દક્ષિણ ગુજરાતનાં અંતરિયાળ ગામો મહુવા–ઉડાંચમાં જયારે તેઓ અનાજની કીટ વહેંચવા ગયા ત્યારે સ્થાનિક ગરીબ લોકોની એકદમ કથળેલી શારીરિક–માનસિક અને આર્થિક હાલત જોઈ તેમનું દિલ ખૂબ જ દ્રવી ઉઠયું હતું અને તેજ ક્ષણે તેમણે વિશાળ પાયા ઉપર ગરીબોની જનસેવાના આંદોલનની આલેહક જગાવવાનો મનોમન નિર્ણય કર્યો હતો. જે માટેની યોજના ઉપર તેમનું આયોજન ચાલુ છે. ટૂંક સમયમાં જ તેઓ સોનગઢ, વ્યારા, વાસંદા, ડાંગ વિગેરેના પછાત ગામોમાં રહેતા વિધવા બહેનો અને દિકરીઓને તેમની જરૂરિયાતની કીટનું વિતરણ કરવા જનાર છે.

તેમની ધંધા – વેપારમાં આગવી ઓળખ અને પ્રતિભાની હવે રાષ્ટ્રીય સ્તરે નોંધ લેવાઈ રહી હોય તેવું તેમનું માનવું છે. જેમ કે ગુજરાતના કચ્છ– સૌરાષ્ટ્ર– ધોલેરા જેવા સ્થળો ઉપરાંત જયપુર, કાશી વિગેરે શહેરોના અગ્રણી ઉધોગપતિઓ તેઓને ત્યાં ઈન્વેસ્ટમેન્ટ કરવા માટે ઈજન એટલે કે આમંત્રણ આપી રહયાં છે. સુરતના ડુમસ વિસ્તારની થઈ રહેલી વર્લ્ડ લેવલની કાયાપલટ બાદ તેઓ ઉપરોકત સ્થળે પણ પોતાનો વેપાર વધારવા ઈચ્છુક છે. પરંતુ વેપાર સાથે જનસેવાનો મંત્ર તેઓ વિસરવા માંગતા નથી. જેથી જ ગરીબ અને પીડિત વ્યકિતઓની સેવાનો એરીયા હવે તેઓ સુરતથી આગળ વધી ગુજરાતના અન્ય સ્થળોએ પણ વિસ્તારવા પ્રબળ ઈચ્છા ધરાવે છે અને તે દિશામાં કામ કરી રહયાં છે. આમ પોતાની જીવન જીવવાની આગવી મોજીલી શૈલીના કારણે તેઓ આજે સોશિયલ મીડિયાના જમાનામાં ફેસબુક, ઈન્સ્ટાગ્રામ, યુ–ટયુબ, ટેલીગ્રામ, સ્નેપચેટ, એઆઈ જેવા પ્લેટફોર્મ થકી તેઓ સતત ચર્ચામાં રહે છે.

શુભેચ્છક : દિપક ધીરૂભાઈ ઈજારદાર – ધ્યેય દિપકભાઈ ઈજારદાર "ભકિતધામ" સુલતાનાબાદ – ડુમસ, સુરત